इटली की लोक कथाऐं–7

अनुवाद सुषमा गुप्ता

2022

Series Title : Desh Videsh Ki Lok Katahayen
Book Title : Italy Ki Lok Kathayen-7 (Folktales of Italy-7)
Cover Page picture: Pisa's Leaning Tower, Pisa, Italy
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: http://sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Map of Italy

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

देश विदेश की लोक कथाऐं

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **400** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

इटली की लोक कथाऐं–7

इटली देश यूरोप महाद्वीप के दक्षिण पश्चिम की तरफ भूमध्य सागर के उत्तरी तट पर स्थित है। पुराने समय में यह एक बहुत ही शक्तिशाली राज्य था। रोमन साम्राज्य अपने समय का एक बहुत ही मशहूर राज्य रहा है। उसकी सभ्यता भी बहुत पुरानी है – करीब **3000** साल पुरानी। इसका रोम शहर **753** बी सी में बसाया हुआ बताया जाता है पर यह इटली की राजधानी **1871** में बना था। इटली में कुछ शहर बहुत मशहूर हैं – रोम, पिसा, फ्लोरैन्स, वेनिस आदि। यहाँ की टाइबर नदी बहुत मशहूर है। यूरोप में लोग केवल लन्दन, पेरिस और रोम शहर ही घूमने जाते हैं।

रोम में रोम का कोलोज़ियम और वैटिकन सिटी में वहाँ का अजायबघर सबसे ज़्यादा देखे जाते हैं। पिसा में पिसा की झुकती हुई मीनार संसार के आदमी द्वारा बनाये गये आठ आश्चर्यों में से एक है। इटली का वेनिस शहर नहरों में बसा हुआ एक शहर[1] है। इस शहर में अधिकतर लोग इधर से उधर केवल नावों से ही आते जाते हैं। यहाँ कोई कार नहीं है कोई सड़क पर चलने वाला यातायात का साधन नहीं है, केवल नावें हैं और नहरें हैं। शायद तुम्हें मालूम नहीं होगा कि असल में वेनिस शहर कोई शहर नहीं है बल्कि **118** द्वीपों को पुलों से जोड़ कर बनाया गया जमीन का एक टुकड़ा है इसलिये ये नहरें भी नहरें नहीं हैं बल्कि समुद्र का पानी है और वह समुद्र का पानी नहर में बहता जैसा लगता है।

इटली का रोम कैसे बसा? कहते हैं कि रोम को बसाने वाला वहाँ का पहला राजा रोमुलस था। रोमुलस और रेमस दो जुड़वाँ भाई थे जो एक मादा भेड़िया का दूध पी कर बड़े हुए थे। दोनों ने मिल कर एक शहर बसाने का विचार किया पर बाद में एक बहस में रोमुलस ने रेमस को मार दिया और उसने खुद राजा बन कर **7** अप्रैल **753** बीसी को रोम की स्थापना की। इटली के रोम शहर में संसार का मशहूर सबसे बड़ा कोलोज़ियम[2] है जहाँ **5000** लोग बैठ सकते हैं। पुराने समय में यहाँ लोगों को सजाऐं दी जाती थीं।

इटली के अन्दर वैटीकन सिटी है जो ईसाई धर्म के कैथोलिक लोगों का घर है पर यह एक अपना अलग ही देश है। वहाँ इसके अपने सिक्के और नोट हैं। इसकी अपनी सेना है। पोप इस देश का राजा है। इसका अजायबघर बहुत मशहूर है। यह संसार का सबसे छोटा देश है क्षेत्र में भी और जनसंख्या में भी – **842** आदमी केवल **4** वर्ग मील के क्षेत्र में बसे हुए।

इटली की बहुत सारी लोक कथाऐं हैं। इटली की सबसे पहली लोक कथाऐं **1353** में लिखी गयी थीं दूसरी **1550** में और तीसरी **1634** में लिखी गयी थी।[3] इतालो कैलवीनो[4] का लोक कथाओं का यह संग्रह जिसमें से हमने ये लोक कथाऐं ली हैं इटैलियन भाषा में **1956** में संकलित कर के प्रकाशित किया गया था। इनका सबसे पहला अंग्रेजी अनुवाद **1962** में छापा गया। उसके बाद सिलविया मल्कही[5] ने इनका अंग्रेजी अनुवाद **1975** में प्रकाशित किया। फिर मार्टिन ने इनका अंग्रेजी अनुवाद **1980** में किया। ये लोक कथाएँ हम मार्टिन की पुस्तक से ले कर अपने हिन्दी भाषा भाषियों के लिये यहाँ हिन्दी भाषा में प्रस्तुत कर रहे हैं। आशा है कि ये लोक कथाऐं तुम लोगों को पसन्द आयेंगी।

---

[1] City of Canals

[2] Colosseum

[3] There are three the earliest, main and very famous books from Italy – Decamerone (1353 – first translation by John Payne published in 1886), Nights of Straparola (1550), Pentamerone (1634),

[4] "Italian Folktales: collected and retold by Italo Calvino". Translated by George Martin. San Diego, Harcourt Brace Jovanovich, Publishers. 1980. 300 p.

[5] Sylvia Mulcahy

इतालो ने इस पुस्तक में दो सौ लोक कथाऐं संकलित की हैं। हमने उन दो सौ लोक कथाओं में से एक सौ पच्चीस लोक कथाऐं चुनी हैं। फिर भी क्योंकि वे बहुत सारी लोक कथाऐं हैं इसलिये वे सब पढ़ने की आसानी के लिये एक ही पुस्तक में नहीं दी जा रही हैं। ये सब लोक कथाऐं पुस्तक में लिखी हुए क्रम से ही यहाँ दी गयीं हैं। इस पुस्तक के पहले संकलन यानी "इटली की लोक कथाऐं–1"[6] में इतालो की पुस्तक की **1–23** नम्बर तक की बीस कथाऐं दी गयी थीं।

इसके दूसरे भाग "इटली की लोक कथाऐं–**2**" में **24–55** नम्बर तक की बीस कथाऐं दी गयी थीं।[7] इटली की लोक कथाओं के तीसरे भाग – "इटली की लोक कथाऐं–**3**" में **56–81** नम्बर तक की ग्यारह लोक कथाऐं प्रकाशित की थीं।[8] इस संकलन की अगली कड़ी "इटली की लोक कथाऐं–**4**" में हमने **82–130** नम्बर तक की बाईस कथाऐं दी थीं।[9] इसके पाँचवें भाग – "इटली की लोक कथाऐं–**5**" में हम उस पुस्तक की **124–155** नम्बर तक की सोलह कहानियाँ प्रकाशित की थीं।[10] इसके छठे भाग में – "इटली की लोक कथााऐं–**6**" इस पुस्तक के **156–179** नम्बर तक की अठारह कहानियाँ प्रकाशित की गयी थीं।[11]

अब उस पुस्तक का सातवाँ और अन्तिम भाग प्रस्तुत है – "इटली की लोक कथाऐं–**7**" जिसमें **180–200** नम्बर तक की लोक कथाओं में से उसकी बीस लोक कथाऐं दी जा रही हैं।[12]

हमें आशा ही नहीं बल्कि पूरा विश्वास है कि यह छठा भाग भी तुम लोगों को पहले पाँच भागों की तरह ही बहुत पसन्द आयेगा और मजेदार लगेगा।

---

[6] "Italy Ki Lok Kathayen-1" – 18 folktales (No 1-21), by Sushma Gupta in Hindi languge
[7] "Italy Ki Lok Kathayen-2" – 20 folktales (No 24-55), by Sushma Gupta in Hindi language
[8] "Italy Ki Lok Kathayen-3" – 11 folktales (No 56-81), by Sushma Gupta in Hindi language
[9] "Italy Ki Lok Kathayen-4" – 23 folktales (No 82-130), by Sushma Gupta in Hindi language
[10] "Italy Ki Lok Kathayen-5" – 15 folktales (No 124-149) by Sushma Gupta in Hindi language
[11] "Italy Ki Lok Kathayen-6" – 18 folktales (No 156-179) by Sushma Gupta in Hindi language
[12] "Italy Ki Lok Kathayen-7" – 20 folktales (No 180-200) by Sushma Gupta in Hindi language

1 मोर का पंख[13]

एक बार की बात है कि एक राजा की दोनों ऑखें जाती रहीं और उसको दोनों ऑखों से दिखायी देना बन्द हो गया। डाक्टरों को दिखाया गया पर कोई डाक्टर यह नहीं बता पा रहा था कि उसको हुआ क्या था।
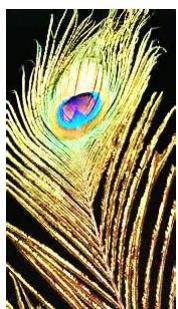
जब उनको यह ही नहीं पता चल रहा था कि उसको हुआ क्या था तो वे राजा का इलाज भी कैसे करें और उसकी ऑखों की रोशनी कैसे वापस लायें। अन्त में एक डाक्टर बोला कि उसकी ऑखों की रोशनी वापस लाने का एक ही तरीका है और वह है मोर का पंख।

इस राजा के तीन बेटे थे। उसने अपने तीनों बेटों को बुलाया और पूछा — "बच्चो, क्या तुम मुझे प्यार करते हो?"

तीनों बेटे बोले — "पिता जी, यह कैसा सवाल है? आप हमको हमारी ज़िन्दगी से भी ज़्यादा प्यारे हैं।"

राजा बोला — "तब बेटा तुम मेरे लिये एक मोर का पंख ले कर आओ ताकि मेरी ऑखों की रोशनी वापस आ सके। जो भी मुझे मोर का पंख ला कर देगा मेरा राज्य उसी को मिलेगा।" सो उसके तीनों बेटे मोर का पंख लाने चल दिये।

[13] The Peacock Feather. Tale No 180. A folktale from Italy from its Province of Caltanissetta.

राजा के दो बड़े बेटे यह नहीं चाहते थे कि उनका छोटा भाई उनके साथ आये पर वह उनसे पीछे रहना नहीं चाहता था सो वे तीनों एक साथ ही चले।

चलते चलते वे एक जंगल में घुसे और थोड़ी देर में ही रात हो गयी। रात बिताने के लिये वे तीनों एक पेड़ पर चढ़ गये और उस पेड़ की शाखों पर ही सो गये।

सुबह सबसे छोटे बेटे की आँख सबसे पहले खुली। वह पेड़ पर से उतरा। उसने सुबह सुबह मोर की आवाज सुनी तो वह उसी ओर चल दिया। चलते चलते वह एक साफ पानी के फव्वारे के पास आ पहुँचा।

वहाँ वह पानी पीने के लिये झुका और जब पानी पी कर उसने अपना सिर उठाया तो उसने हवा में एक मोर का पंख उड़ कर नीचे आता हुआ देखा। उसने और ऊपर देखा तो कुछ चिड़ियाँ भी ऊपर उड़ रही थीं। बस उसने वह मोर का पंख उठा कर अपनी जेब में रख लिया।

जब बड़े भाइयों को पता चला कि उनके छोटे भाई को मोर का पंख मिल गया है तो वे जलन से भर उठे क्योंकि उन्होंने सोचा कि अब उनको तो पिता का राज्य मिलेगा नहीं और उनके छोटे भाई को पिता का राज्य मिल जायेगा।

उन्होंने बिना किसी हिचक के, बिना एक पल भी सोचे विचारे उसको पकड़ लिया। दोनों ने उससे उसका मोर का पंख ले लिया।

फिर एक भाई ने उसको पकड़ा, दूसरे ने उसको मार दिया और दोनों ने मिल कर उसे वहीं गाड़ दिया।

उस पंख को ले कर वे अपने पिता के पास वापस आ गये और उनको वह पंख दे दिया। राजा ने उसको अपनी ऑखों से छुआया तो उसकी ऑखों की रोशनी वापस आ गयी।

जैसे ही उसको दिखायी देना शुरू हुआ तो उसने पूछा — "तुम्हारा छोटा भाई कहॉ है?"

"ओह पिता जी, अगर आप जानते। हम लोग जंगल में सो रहे थे कि एक जानवर आया। वही उसको ले गया होगा क्योंकि तभी हमने उसको आखिरी बार देखा था।"

राजा को अपने उन दोनों बेटों की यह सफाई कुछ समझ में नहीं आयी पर उसके पास और कोई चारा नहीं था सो वह बेचारा अपने छोटे बेटे के दुख में केवल रो कर ही रह गया।

इस बीच उस छोटे भाई को जहॉ गाड़ा गया था वहॉ एक सुन्दर सा सरकंडे का पेड़[14] उग आया। एक आदमी उधर से गुजर रहा था तो उसको वह सरकंडा दिखायी दे गया।

उसने सोचा यह तो बहुत ही सुन्दर सरकंडा है मैं इसको काट लेता हूँ और इससे चरवाहे वाला बाजा बनाऊँगा। उसने वही

[14] Translated for the "Reed" plant. See its picture above.

किया। उसने उसमें से थोड़ा सा सरकंडा काट लिया और उसका एक बाजा बना लिया।

जब उसने उसको बजाने के लिये उसके ऊपर अपने होठ रखे तो उस बाजे ने गाया —

ओ चरवाहे, जिसने मुझे पकड़ रखा है मुझे धीरे से बजाना मुझे चोट न पहुँचे
उन्होंने मुझे मोर के पंख के लिये मार दिया, मेरा भाई यकीनन धोखेबाज था

यह गीत सुन कर चरवाहे ने सोचा कि अब तो मेरे पास यह बाजा है तो मैं अब भेड़ चराना छोड़ दूँगा। मैं अब सारी दुनियाँ में घूमूँगा और यह बाजा बजा बजा कर अपनी रोजी रोटी कमाऊँगा। उसने भेड़ चराना छोड़ दिया और नैपिल्स[15] चल दिया।

वहाँ जा कर वह सड़कों पर घूम घूम कर अपना वह चरवाहों वाला बाजा बजाने लगा।

एक बार वह वहाँ के राजा के महल के पास से गुजर रहा था कि राजा ने उसका बाजा सुना तो अपने महल से बाहर झाँका और बोला — "ओह कितना मीठा संगीत है।"

फिर उसने अपने एक नौकर से कहा कि वह उस आदमी को अन्दर बुला कर लाये जो वह बाजा बजा रहा था। नौकर उस चरवाहे को अन्दर बुला कर ले गया। वह चरवाहा अन्दर गया तो उसने राजा के दरबार में अपना वह बाजा बजाया।

[15] Naples is a port and historical city of Italy just South of Rome on Italy's West coast.

राजा को वह संगीत अच्छा लगा तो राजा बोला कि वह भी उसको बजाना चाहता था। चरवाहे ने वह बाजा राजा को दे दिया। राजा ने उस बाजे को बजाया तो उसमें से आवाज आयी —

ओ पिता जी, जिसने मुझे पकड़ रखा है, मुझे धीरे से बजाना मुझे चोट न पहुँचे
उन्होंने मुझे मोर के पंख के लिये मार दिया, मेरा भाई यकीनन धोखेबाज था

यह सुन कर राजा ने रानी से कहा — "प्रिये, ज़रा इस बाजे को तो सुनो और फिर तुम भी इसको बजा कर देखो।" यह कह कर राजा ने वह बाजा अपनी रानी को दे दिया। रानी ने जब उसको बजाया तो उसमें से आवाज आयी —

ओ माँ, जिसने मुझे पकड़ रखा है, मुझे धीरे से बजाना मुझे चोट न पहुँचे
उन्होंने मुझे मोर के पंख के लिये मार दिया, मेरा भाई यकीनन धोखेबाज था

यह सुन कर रानी की तो बोलती ही बन्द हो गयी। उसने उस बाजे को अपने बीच वाले बेटे से बजाने के लिये कहा। बीच वाले बेटे ने अपने कन्धे उचकाये और कहा कि ये सब बेकार की बातें है।

पर जब रानी ने उससे जिद की तो उसे बजाना ही पड़ा। जैसे ही उसने वह बाजा बजाया उसमें से आवाज आयी —

ओ मेरे भाई,

पर वह बाजा तो वहीं रुक गया क्योंकि उसका वह भाई तो पत्ते की तरह कॉप रहा था। उसने कॉपते हाथों से वह बाजा अपने बड़े भाई के हाथों में दे दिया और बोला "अब तुम बजाओ"।

पर बड़े भाई ने उसे बजाने से इनकार कर दिया और चिल्लाया — "क्या इस चरवाहे के बाजे को बजा कर तुम पागल हो गये हो?"

अबकी बार राजा चिल्लाया — "मैं कहता हूँ कि तुम इस बाजे को बजाओ।"

यह सुन कर बड़ा भाई तो पीला पड़ गया पर क्या करता पिता का हुकुम था सो उसको वह बाजा बजाना पड़ा। उसने बाजा बजाया तो उस बाजे में से निकला —

ओ मेरे भाई, जिसने मुझे मारा, मुझे धीरे से बजाना मुझे चोट न पहुँचे
तुमने मुझे मोर के पंख के लिये मारा, तुम यकीनन धोखेबाज हो

ये शब्द सुन कर राजा तो दुख से पागल हो कर वहीं फर्श पर गिर पड़ा। फिर जब सँभला तो चिल्लाया — "ओ नीच लड़कों, तुमने वह मोर का पंख खुद लेने के लिये मेरे बच्चे और अपने सबसे छोटे भाई को मार दिया? तुम लोग कितने नीच हो, उफ़।"

उसने अपने उन दोनों बेटों को आग में जला कर मारने का हुक्म दे दिया और उस चरवाहे को चौकीदारों का कैप्टेन बना दिया।

राजा ने अपनी बची हुई जिन्दगी अपने महल में अकेले रह कर ही गुजार दी। अब वह चरवाहा बस बाजा ही बजाता रहता था।
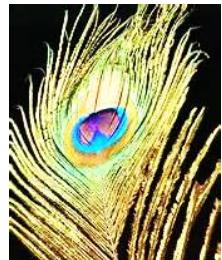
2 बागीचे की जादूगरनी[16]

एक बार की बात है कि एक जगह पर बन्द गोभी[17] का एक खेत था और वहाँ बहुत सारी बन्द गोभियाँ लगी हुई थीं। उन दिनों अकाल पड़ा हुआ था सो दो स्त्रियाँ खाने के लिये कुछ ढूँढ रही थीं।

एक स्त्री बोली – "अरे देख यहाँ तो बन्द गोभी का खेत का खेत लगा हुआ है चल वहीं चलते हैं। वहीं से कुछ बन्द गोभी तोड़ते हैं।"

दूसरी बोली – "पर वहाँ तो कोई उन पर पहरा दे रहा लगता है।"

पहली ने कहा – "चल तो सही, चल कर देखते हैं।" पर जब वे वहाँ पर पहुँची तो उन्होंने देखा कि वहाँ तो कोई नहीं है।

तो दूसरी बोली – "यहाँ तो कोई भी नहीं है चल अन्दर चलते हैं।" सो वे दोनों अन्दर खेत में पहुँची और उन्होंने वहाँ से कई सारी बन्द गोभियाँ तोड़ लीं। बन्द गोभियाँ तोड़ कर वे घर पहुँचीं और उनको शाम के खाने के लिये पकाया। अगले दिन वे फिर आयीं और फिर कुछ बन्द गोभियाँ अपनी बाँहों मे भर कर ले गयीं।

---

[16] The Garden Witch. Tale No 181. A folktale from Italy from its Province of Caltanissetta.

[17] Translated for the word "Cabbage". See its picture above.

यह खेत एक बुढ़िया का था। जिस समय ये स्त्रियॉ बन्द गोभियॉ तोड़ने गयीं थी वह बुढ़िया अपने घर में नहीं थी। जब वह घर वापस आयी तो उसने देखा कि उसकी कुछ बन्द गोभियॉ कोई चुरा कर ले गया है।

उसने सोचा कि इनकी चौकीदारी के लिये मैं एक कुत्ता रखती हूॅ और उसको बागीचे के दरवाजे से बॉध देती हूॅ।

सो तीसरे दिन जब वे स्त्रियॉ फिर से बन्द गोभी तोड़ने पहुॅचीं तो उन्होंने देखा कि दरवाजे पर तो एक कुत्ता बॅधा है। कुत्ता देख कर एक स्त्री बोली — "ओह नहीं, इस बार मैं बन्द गोभी लेने इस खेत में नहीं जा रही। यहॉ तो एक कुत्ता बैठा है और मुझे कुत्ते से बहुत डर लगता है।"

दूसरी स्त्री बोली — "बेवकूफ न बन। हम लोग दो सैन्ट की वह सख्त वाली डबल रोटी खरीदेंगे और इस कुत्ते को डालेंगे फिर हम जो चाहें सो कर सकते हैं।"

सो उन्होंने दो सैन्ट की सख्त डबल रोटी खरीदी और इससे पहले कि वह कुत्ता उन पर भौंके उन्होंने उसे उस कुत्ते को डाल दी।

कुत्ता तुरन्त ही उस डबल रोटी पर कूद पड़ा। वह उसको खाता रहा और चुपचाप खड़ा रहा। उन दोनों ने फिर कई बन्द गोभियॉ तोड़ीं और उनको ले कर अपने घर चली गयीं।

जब वह बुढ़िया फिर अपने घर आयी तो उसने देखा कि उसके पीछे क्या हुआ। उसकी बन्द गोभियाँ तो फिर गायब थीं।

वह कुत्ते से बोली — "तो तूने उनको मेरी बन्द गोभियाँ ले जाने दीं। तू पहरेदारी करने के लायक नहीं है।"

उसने कुत्ते को पहरेदारी से हटा कर उसकी जगह एक बिल्ला रख लिया। उसने सोचा जब यह म्याऊँ बोलेगा तब मैं चोर को पकड़ने बाहर आ जाऊँगी।

अगले दिन जब वे स्त्रियाँ फिर बन्द गोभी लेने आयीं तो उन्होंने देखा कि आज तो वहाँ कुत्ते की जगह एक बिल्ला बँधा है। उन्होंने उस बिल्ले के लिये एक फेंफड़ा[18] खरीदा और इससे पहले कि वह म्याऊँ बोलता उन्होंने उसके आगे वह फेंफड़ा फेंक दिया।

उधर वह बिल्ला फेंफड़ा खाता रहा और इधर वे दोनों स्त्रियाँ बन्द गोभियाँ तोड़ती रहीं। बन्द गोभियाँ ले कर वे अपने अपने घर चली गयीं।

बुढ़िया ने देखा कि उसकी बन्द गोभियाँ तो फिर कोई चुरा कर ले गया था। वह सोचने लगी अब मैं किसको रखूँ। ओह मुर्गा ठीक रहेगा। इस बार चोर मुर्गे से नहीं बच पायेंगे।

अगली बार जब वे दोनों स्त्रियाँ वहाँ बन्द गोभी लेने आयीं तो उनमें से एक बोली — "आज तो इस खेत में मैं बिल्कुल नहीं जाने वाली। आज तो वहाँ मुर्गा बैठा है।"

---

[18] Translated for the word "Lung"

दूसरी बोली — “तू तो बहुत ही डरती है। हम इसको दाना डालेंगे और फिर बन्द गोभी तोड़ कर ले जायेंगे।”

सो उन्होंने ऐसा ही किया। मुर्गे को उन्होंने दाना डाला। मुर्गा दाना खाता रहा और वे स्त्रियाँ फिर से बन्द गोभी तोड़ कर ले गयीं।

दाना खा कर मुर्गा चिल्लाया — “कुकड़ूँ कूँ।”

कुकड़ूँ कूँ की आवाज सुन कर बुढ़िया बाहर आयी तो उसने देखा कि उसकी बन्द गोभियाँ तो फिर से गायब हो गयीं थीं। चोर उसकी बन्द गोभियाँ ले कर फिर से भाग गया था। गुस्से में आ कर उसने उस मुर्गे की गर्दन मरोड़ दी।

फिर उसने एक किसान को बुलाया और उससे कहा कि मेरे नाप की एक कब्र खोद। किसान ने उसके नाप की एक कब्र खोद दी।

जब उसने कब्र खोद दी तो वह बुढ़िया उस कब्र में लेट गयी और अपने आपको मिट्टी से अच्छी तरह से ढक लिया। उसका केवल एक कान ही बाहर रहा।

अगली सुबह वे स्त्रियाँ फिर बन्द गोभी लेने के लिये आयीं तो उन्होंने फिर चारों तरफ देखा कि आज कौन था पहरे पर। पर उनको कोई दिखायी नहीं दिया।

उस बुढ़िया ने अपनी कब्र रास्ते में खुदवायी थी ताकि जब कोई उसकी बन्द गोभियाँ चुराने के लिये जाये तो वह उसके पैरों की आवाज सुन सके।

जब वे दोनों स्त्रियाँ बन्द गोभियाँ तोड़ने के लिये चलीं तो उनको खेत पर कुछ भी अलग दिखायी नहीं दिया। पर जब वे बन्द गोभियाँ तोड़ कर वापस आ रही थीं तो उनमें से एक ने एक वह कान जमीन से बाहर निकला देखा तो वह चिल्लायी "अरे देखो यह कितना सुन्दर मशरूम[19] है।"

कह कर वह झुकी और उसने उस मशरूम को जमीन में से उखाड़ने की कोशिश की। वह उसको अपनी पूरी ताकत से उसे खींचती रही खींचती रही पर जब वह काफी देर तक भी नहीं उखड़ा तो आखीर में उसने उसको एक बहुत ज़ोर का झटका दिया तो वह बुढ़िया अपनी कब्र से बाहर निकल आयी।

वह चिल्लायी — "आह आह, तो ये तुम लोग हो जो मेरी बन्द गोभियाँ चुराती रही हो। मैं देखती हूँ अब तुम लोगों को।"

कह कर उसने उस स्त्री को पकड़ लिया जिसने उसका कान खींचा था। इतनी देर में दूसरी स्त्री बच कर भाग निकली।

बुढ़िया ने कहा — "आज मैं तुमको पूरा का पूरा खा जाऊँगी।"

---

[19] Mushroom is a kind of vegetable. See its picture above.

यह सुन कर वह स्त्री डर गयी। उसको और तो कुछ सूझा नहीं सो उसने कहा — "पर ज़रा रुको तो। मुझे बच्चा होने वाला है। अगर तुम मुझे छोड़ दोगी तो चाहे मेरे लड़का हो या लड़की जब भी वह सोलह साल का होगा तो मैं उसको आ कर तुमको दे जाऊँगी। क्या तुम इस बात पर राजी हो?"

वह चुड़ैल बोली — "हॉ मैं इस बात पर राजी हूँ। अब तुमको जितनी बन्द गोभियॉ चाहिये तुम उतनी बन्द गोभियॉ तोड़ लो और जाओ पर अपना वायदा याद रखना।"

वह स्त्री पत्ते की तरह कॉपती हुई अपने घर चली गयी। जा कर वह अपनी दोस्त से बोली — "तुम तो वहॉ से बच कर चलीं आयीं और मैं पकड़ी गयी। मुझे उस बुढ़िया से वायदा करना पड़ा कि मैं अपना बच्चा, चाहे वह लड़का हो या लड़की, जब वह सोलह साल का होगा तब उसको मुझे उस बुढ़िया को देना पड़ेगा।"

दो महीने बाद उस स्त्री ने एक लड़की ने जन्म दिया। उसको देख कर उसकी मॉ ने एक लम्बी सॉस ली और बोली — "ओह मेरी बदकिस्मत बेटी, मैं तुझे पालूँगी पोसूँगी और सोलह साल बाद वह चुड़ैल तुझे ज़िन्दा खा जायेगी।" कहते कहते वह रो पड़ी।

समय तो किसी के लिये रुकता नहीं। सोलह साल भी पलक झपकते निकल गये। जब वह लड़की सोलह साल की होने वाली थी तो एक दिन वह अपनी मॉ के लिये बाजार से तेल लेने गयी। वहॉ उसको वह जादूगरनी मिल गयी।

उस जादूगरनी ने उस लड़की से पूछा — "तुम किसकी बेटी हो?"

लड़की बोली — "सबैद्दा[20] की।"

बुढ़िया उसको ऊपर से नीचे तक देखते हुए बोली — "तुम तो वाकई बड़ी हो गयी हो और मुझे यकीन है कि स्वादिष्ट भी।"

उसके शरीर को अपने हाथों से सहलाते हुए वह आगे बोली — "यह अंजीर तुम अपने घर ले जाओ और इसे अपनी माँ को देना। और जब तुम इसको अपनी माँ को दो तो उससे कहना "तुम्हारे वायदे का क्या हुआ।"

लड़की ने वह अंजीर ली और अपने घर पहुँची तो उसने अपनी माँ को सारा हाल बताया और कहा — "उसने मुझे तुमसे यह कहने के लिये कहा कि "तुम्हारे वायदे का क्या हुआ?"

"मेरा वायदा?" यह सुन कर उसकी माँ बहुत ज़ोर से रो पड़ी।

लड़की परेशान हो कर बोली — "माँ तुम रो क्यों रही हो? क्या बात है?"

पर उसकी माँ ने उसे कोई जवाब नहीं दिया। थोड़ी देर तक रोने के बाद जब वह कुछ सँभली तो बोली — "अगर वह बुढ़िया तुम्हें फिर से मिल जाये तो उससे कहना कि "मैं तो अभी बहुत छोटी हूँ।"

[20] Sabedda – name of the woman who went to pluck the cabbages and caught in the last.

पर वह लड़की तो सोलह साल की हो चुकी थी इसलिये उसको अब यह कहते हुए शर्म आ रही थी कि वह तो अभी बहुत छोटी है। सो अगली बार जब वह उस चुड़ैल से मिली तो उसने लड़की से पूछा — "तुम्हारी माँ ने क्या जवाब दिया?"

"उसने कहा है कि मैं तो अब बड़ी हो गयी हूँ।"

"ओह तब तुम अपनी नानी के साथ आओ क्योंकि उसके पास तुम्हारे लिये बहुत सारी सुन्दर सुन्दर भेंटें हैं।" यह कहते हुए उसने उस लड़की को पकड़ लिया।

वह उसको अपने घर ले गयी और मुर्गीखाने में बन्द कर दिया। वह वहाँ उसको रोज खूब अच्छा खाना खिलाती रही ताकि वह खा खा कर मोटी हो जाये।

कुछ दिनों के बाद उस चुड़ैल ने सोचा कि अब वह उसको जा कर देख कर आये कि वह कैसी हो गयी है। उसने वहाँ पहुँच कर उस लड़की से कहा — "ज़रा मुझे अपनी छोटी उँगली तो दिखाओ।"

लड़की ने उस मुर्गीखाने में रहने वाले एक चूहे को पकड़ रखा था सो उसने उस चुड़ैल को अपनी छोटी उँगली दिखाने की बजाय उस चूहे की पूँछ दिखा दी।

वह चुड़ैल बोली — "अरे तुम तो अभी भी बहुत पतली हो। तुम ठीक से खाना खाती रहो।"

पर कुछ देर बाद ही वह चुड़ैल उस लड़की को खाने का मन रोक नहीं पायी सो वह उसको वहाँ से निकाल कर ले गयी और बोली — "बेटी तुम तो बहुत तन्दुरुस्त हो। मैं स्टोव जलाती हूँ ताकि मैं अपने लिये डबल रोटी बना सकूँ।"

कह कर उसने स्टोव जलाया और डबल रोटी बनाने की तैयारी करने लगी। चुड़ैल ने डबल रोटी का आटा मला और लड़की से डबल रोटी का आटा स्टोव के अन्दर रखने को कहा तो लड़की बोली — "नानी, मुझे आटा स्टोव में रखना नहीं आता।"

"मैं बताती हूँ आटा स्टोव में अन्दर कैसे रखते हैं। यह आटा इधर खिसका दो।" लड़की ने आटा उसके पास खिसका दिया और उस चुड़ैल ने उस आटे को ओवन में रख दिया।

चुड़ैल फिर बोली — "अच्छा अब वह बड़ी वाली प्लेट उठा लो जिससे मैं यह ओवन बन्द कर दूँ।"

"नानी वह प्लेट तो बहुत बड़ी है मैं उसे कैसे उठाऊँ?"

चुड़ैल बोली — "अच्छा ठीक है उसे भी मैं ही उठा लेती हूँ।"

जब वह भारी प्लेट उठाने के लिये झुकी तो लड़की ने उसकी टाँगें पकड़ कर उसको ओवन में धकेल दिया और फिर उसने वही बड़ी प्लेट उठा कर ओवन बन्द कर दिया जिस से वह चुड़ैल उस ओवन में बन्द हो गयी और मर गयी।

यह सब कर के वह वहाँ से अपने घर भाग ली अपनी माँ से यह कहने के लिये कि अब उस चुड़ैल की बन्द गोभी का सारा खेत उनका था।

3 लम्बी पूँछ वाला चूहा[21]

एक बार एक राजा था जिसके एक बहुत ही सुन्दर बेटी थी। जब वह शादी के लायक हुई तो बहुत सारे राजा और राजकुमारों ने उससे शादी करने की इच्छा प्रगट की।

पर उसके पिता ने उसको किसी को भी देने से मना कर दिया क्योंकि हर रात वह एक आवाज सुन कर जाग जाता था — "तुम अपनी बेटी की शादी किसी से मत करना, तुम अपनी बेटी की शादी किसी से मत करना।" और वह अपनी बेटी की शादी करने से रुक जाता।

वह बेचारी लड़की रोज शीशे में अपने आपको देखती और पूछती — "मैं शादी क्यों नहीं कर सकती मैं तो इतनी सुन्दर हूँ।" वह यह सवाल रोज पूछती पर उसको अपने इस सवाल का कोई जवाब नहीं मिलता और वह इस बारे में सोचती ही रह जाती।

एक दिन जब वे सब शाम का खाना खा रहे थे तो उसने अपने पिता से कहा — "पिता जी मैं शादी क्यों नहीं कर सकती मैं इतनी सुन्दर तो हूँ। इसलिये अब आप मेरी बात सुनिये, मैं आपको दो दिन का समय देती हूँ। अगर आप दो दिन के अन्दर अन्दर किसी

[21] The Mouse With the Long Tail. Tale No 182. A folktale from Italy from its Province of Caltanissetta.

ऐसे आदमी को नहीं ढूँढ पाते जिससे आप मेरी शादी कर सकें तो मैं अपनी जान दे दूँगी।”

राजा बोला — “बेटी, ऐसा नहीं कहते। पर अगर तुम ऐसा कह रही हो तो तुम एक काम करो कि तुम अपने सबसे अच्छे कपड़े पहनो और खिड़की पर खड़ी हो जाओ। फिर जो भी सबसे पहला आदमी या जानवर सड़क से गुजरेगा वही तुम्हारा पति होगा। बस।”

सो अगले दिन उस लड़की ने अपने सबसे अच्छे कपड़े पहने और जा कर खिड़की पर खड़ी हो गयी।

अब ज़रा सोचो कि सबसे पहले सड़क पर से कौन गुजरा? एक छोटा सा चूहा जिसकी एक मील लम्बी पूँछ थी और जिसकी बू ऊपर आसमान तक पहुँच रही थी।

चूहा रुका और ऊपर खिड़की में खड़ी राजकुमारी की तरफ देखा पर जैसे ही राजकुमारी ने चूहे की तरफ देखा तो वह तो चिल्ला कर भागी — “पिता जी पिता जी। यह आपने मेरे साथ क्या किया? यह पहला जाने वाला तो एक जानवर निकला और वह भी एक चूहा। मुझे पूरा यकीन है कि आप मेरी शादी किसी चूहे से नहीं करना चाहते।”

उसका पिता कमरे में हाथ बाँधे खड़ा था। वह बोला — “मैं यही चाहता हूँ मेरी बेटी। जो मैंने कहा है वही होगा। तुमको सड़क

पर पहला आदमी या जानवर जो कोई भी गुजरेगा उसी से शादी करनी पड़ेगी। फिर चाहे वह कोई भी हो।"

तुरन्त ही उसने सब राजाओं, राजकुमारों और दरबारियों को अपनी बेटी की शादी की शानदार दावत का न्यौता भेज दिया। सारे मेहमान बड़ी शानो शौकत से दावत में आये और आ कर अपनी अपनी जगहों पर बैठ गये पर दुलहे का अभी तक कोई पता नहीं था।

तभी दरवाजे पर कुछ खुरचने की सी आवाज सुनायी पड़ी। वहाँ और कौन हो सकता था सिवाय उस चूहे के जिसकी लम्बी पूँछ दूर दूर तक महक रही थी। एक दासी ने उसके लिये दरवाजा खोला और उससे पूछा — "तुमको क्या चाहिये?"

चूहा बोला — "तुम मेरे लिये राजा से जा कर कहो कि जो चूहा राजकुमारी से शादी करना चाहता है वह आया है।"

दासी ने यह रसोइये से कहा और रसोइये ने जा कर यह बात राजा से कही कि जो चूहा राजकुमारी से शादी करना चाहता है वह आया है।

राजा बोला — "उनको इ़ज़्ज़त के साथ अन्दर ले आओ।"

चूहा तेज़ी से फर्श पर दौड़ता हुआ अन्दर घुस आया और राजकुमारी की कुर्सी के हत्थे पर आ कर बैठ गया। राजकुमारी ने अपने बराबर में एक चूहे को बैठा देख कर शर्म और नफरत से अपना मुँह दूसरी तरफ फेर लिया।

पर चूहे ने ऐसा दिखाया कि जैसे उसने कुछ देखा ही न हो। जितना राजकुमारी उससे दूर खिसकती थी चूहा उसके उतना ही पास खिसकता जाता था।

तब राजा ने वहॉ बैठे सब लोगों को अपनी कहानी सुनायी तो वहॉ बैठे सारे लोग राजा ने जो कुछ किया था उससे राजी हो गये। वे सब मुस्कुराये और बोले — "हॉ ठीक है। चूहा ही राजकुमारी का पति होना चाहिये।" और यह कह कर सब हॅस पड़े और हॅसते हॅसते चूहे की तरफ देखने लगे।

यह देख कर वह चूहा राजा को एक तरफ ले जा कर बोला — "मैजेस्टी, सुनिये। या तो आप इन लोगों से यह कह दीजिये कि ये लोग मेरा मजाक न उड़ायें नहीं तो इसका नतीजा इनको भुगतना पड़ेगा।" चूहे ने यह सब इतने गुस्से से कहा कि राजा को उसकी बात माननी ही पड़ी।

उसके बाद राजा अपनी कुर्सी पर आ कर बैठ गया और सब लोगों से कहा कि वे सब हॅसना बन्द करें और उसके होने वाले दामाद[22] की ठीक से इज़्ज़त करें।

खाना आया तो चूहा तो बहुत छोटा था और वह एक हत्थे वाली कुर्सी पर बैठा था इसलिये वह मेज पर रखे खाने तक नहीं पहुॅच सकता था। इसलिये उसके नीचे एक ऊॅची सी गद्दी रखी गयी

[22] Son-in-law – daughter's husband

पर राजा ने देखा कि वह भी उसके लिये खाने तक पहुँचने के लिये काफी नहीं थी सो वह उठा और मेज के बीच में जा कर बैठ गया।

वहाँ से वह सब लोगों की तरफ देख कर बोला — "कोई ऐतराज?"

इससे पहले कि कोई और बोले राजा बोले — "नहीं नहीं। किसी को कोई ऐतराज नहीं है।"

पर घर आये हुए मेहमानों में एक स्त्री ऐसी थी जो चूहे को अपनी प्लेट में से खाते और अपनी बू वाली लम्बी पूँछ को अपने पास बैठे आदमी की प्लेट के ऊपर से ले जाते देख कर चुप नहीं रह सकी।

जब चूहे ने उस स्त्री की प्लेट में से खाना खत्म कर लिया तो वह दूसरे मेहमानों की तरफ चला तो वह बोली — "उफ कितना गन्दा। किसने इतनी गन्दी चीज़ देखी होगी। मुझे तो अपनी आँखों पर विश्वास ही नही हो रहा कि मैं इतनी गन्दी चीज़ एक राजा की खाने की मेज पर देख रही हूँ।"

यह सुन कर चूहे की मूँछें हिलीं, उसने अपनी आँखें उस स्त्री की आँखों से मिलायीं और अपनी पूँछ मेज पर फटकारते हुए ऊपर नीचे कूदने लगा।

उसके इस कूदने में जिस किसी चीज़ को भी उसकी पूँछ ने छुआ वही चीज़ वहाँ से गायब हो गयी – सूप के कटोरे, फलों के

कटोरे, प्लेट, चम्मच, छुरी, कॉटे और फिर एक एक कर के मेहमान और उसके बाद मेज और महल।

बस वहॉ रह गया तो केवल एक उजड़ा हुआ मैदान और उसमें अकेली खड़ी राजकुमारी। वह चूहा खुद भी वहॉ से गायब हो चुका था।

वहॉ इतने बड़े मैदान में अपने को अकेली देख कर राजकुमारी बोली — "अफसोस ओ मेरे चूहे, तुमसे मेरी नफरत अब तुमको पाने की इच्छा में बदल गयी है।"

उसने इन शब्दों को एक बार फिर बोला और वहॉ से फिर पैदल ही चल दी। वह कहॉ जा रही थी और कहॉ जायेगी इसका उसे कुछ पता ही नहीं था।

चलते चलते उसको एक साधु मिला तो उसने राजकुमारी से पूछा — "बेटी, तुम यहॉ इस उजाड़ जगह में क्या कर रही हो? भगवान तुम्हारी सहायता करे अगर तुमको यहॉ कोई शेर या जादूगरनी मिल जाये तो?"

राजकुमारी बोली — "मेहरबानी कर के ऐसी बातें मत कीजिये। मुझे तो केवल अपना चूहा चाहिये। पहले मैं उससे नफरत करती थी पर अब मुझे वह चाहिये।"

साधु बोला — "बेटी, मुझे नहीं मालूम कि मैं तुमसे क्या कहूँ पर तुम चलती रहो जब तक तुमको मुझसे कोई ज़्यादा बूढ़ा साधु न मिल जाये। शायद वह तुमको कोई सलाह दे पाये।"

सो राजकुमारी चलती रही और चलती रही और बस यही कहती रही — "अफसोस ओ मेरे चूहे, तुमसे मेरी नफरत अब तुमको पाने की इच्छा में बदल गयी है।"

चलते चलते उसको एक और साधु मिला। उसने उस साधु से भी वही कहा तो वह साधु बोला — "बेटी। तुम जमीन में एक गड्ढा खोदो और उसमें बैठ जाओ तब देखो कि क्या होता है।"

अब राजकुमारी के पास गड्ढा खोदने के लिये तो वहॉ कुछ था नहीं सो उस बेचारी ने अपने बालों में से एक बालों में लगाने वाली पिन निकाली और उसी से गड्ढा खोदने लगी और तब तक खोदती रही जब तक कि वह गड्ढा इतना बड़ा नहीं हो गया कि वह उसमें खुद बैठ सकती।

जब गड्ढा खुद गया तो वह उसमें बैठ गयी। बैठते ही वह एक ॲधेरी और बहुत बड़ी गुफा में निकल आयी। "अब पता नहीं यह गुफा मुझे कहॉ ले जायेगी।" कहते हुए वह उस गुफा में चल दी।

गुफा में बहुत सारे जाले लगे हुए थे जो उसके पैरों में लिपटे जा रहे थे। वह जितना ज़्यादा उनको हटाती थी उतना ही ज़्यादा वे उसके पैरों में लिपटते जाते थे।

उस गुफा में एक दिन चलने के बाद उसको पानी की आवाज सुनायी दी। आगे चल कर उसको एक तालाब दिखायी दिया जिसमें बहुत सारी मछलियॉ थीं।

उसने अपना एक पैर उस तालाब में रखा पर वह उसमें बहुत आगे तक नहीं जा सकी क्योंकि वह तालाब बहुत गहरा था। वह अब पीछे गड्ढे के लिये भी नहीं जा सकती थी क्योंकि वह गड्ढा तो उसके गुफा में आते ही बन्द हो गया था।

उसने फिर दोहराया — "अफसोस ओ मेरे चूहे, तुमसे मेरी नफरत अब तुमको पाने की इच्छा में बदल गयी है।"

इस पर उस तालाब का पानी ऊपर उठना शुरू हो गया। वहाँ से बच निकलने की कोई जगह नहीं थी सो वह उस तालाब में कूद पड़ी। जब वह पानी में थी तो उसने देखा कि वह पानी में नहीं थी बल्कि वह तो एक बड़े से महल में खड़ी थी।

उस महल का पहला कमरा क्रिस्टल[23] का बना था। दूसरा कमरा मखमल का था। और तीसरा कमरा पूरा सितारों[24] का बना था। इस तरह वह उस महल के कमरों में घूमती रही। सब कमरों में कीमती कालीन बिछे हुए थे और सब कमरों में चमकीले लैम्प जल रहे थे।

जितनी देर वह उस महल में घूमती रही वह दोहराती ही रही — "अफसोस ओ मेरे चूहे, तुमसे मेरी नफरत अब तुमको पाने की इच्छा में बदल गयी है।"

---

[23] Crystal

[24] Translated for the word "Sequins" – shining disk with a hole in its center to decorate clothes. See their picture above.

फिर वह एक ऐसी जगह आ गयी जहाँ एक बहुत बढ़िया खाने की मेज लगी हुई थी। वह कई दिनों की भूखी थी सो वह उस मेज पर बैठ गयी और पेट भर खाना खाया।

फिर वह एक सोने वाले कमरे में चली गयी। वह जैसे ही पलंग पर लेटी उसको तुरन्त ही नींद आ गयी और वह गहरी नींद सो गयी।

रात को पता नहीं कब उसने कुछ आवाज सुनी जो उसे लगा कि वह आवाज किसी चूहे की पूँछ के इधर उधर होने से हुई थी। उसने अपनी आँख खोली पर वहाँ घुप अँधेरा होने की वजह से उसे कुछ दिखायी तो नहीं दिया पर चूहे के कमरे में इधर उधर घूमने की आवाज अभी भी आ रही थी।

फिर उसको लगा कि कोई चूहा उसके पलंग पर चढ़ा और उसकी ओढ़ने वाली चादर के अन्दर आ गया। वह उसका चेहरा सहलाने लगा था। उसके मुँह से चूहे की छोटी छोटी चीं चीं की आवाज निकल रही थी।

राजकुमारी की हिम्मत नहीं हो रही थी कि वह कुछ बोले। बस वह चुपचाप काँपती सी बिस्तर पर एक कोने में सुकड़ी पड़ी रही।

अगली सुबह जब वह उठी तो वह उस महल में फिर से घूमी पर वहाँ तो कोई नहीं था। उस रात को भी खाने की मेज पहली रात की तरह ही लगी हुई थी सो उसने खाना खाया और सो गयी।

एक बार फिर उसने कमरे में चूहे के भागने की आवाज सुनी। वह चूहा अबकी बार उसके चेहरे के ऊपर आ गया पर उसकी बोलने की हिम्मत उस दिन भी नहीं हुई और उस दिन भी वह वैसे ही चुपचाप पड़ी रही।

तीसरी रात को जब उसने चूहे के घूमने की आवाज सुनी तब उसने हिम्मत कर के गाया — "अफसोस ओ मेरे चूहे, तुमसे मेरी नफरत अब तुमको पाने की इच्छा में बदल गयी है।"

तभी एक आवाज ने कहा — "लैम्प जलाओ।"

राजकुमारी ने एक मोमबत्ती जलायी तो उसने देखा कि वहाँ कोई चूहा वूहा नहीं था वहाँ तो एक सुन्दर राजकुमार खड़ा था।

वह बोला — "मैं ही हूँ वह बू वाला बड़ी पूँछ वाला चूहा। मेरे ऊपर पड़े जादू से मुझको आजाद कराने के लिये मुझे एक ऐसी लड़की से मिलना जरूरी था जो मुझे प्यार करे और वह सब कुछ सहे जो तुमने सहा।"

राजकुमारी उस राजकुमार को देख कर तो बहुत खुश हो गयी। दोनों फिर वह गुफा छोड़ कर बाहर आ गये और दोनों ने शादी कर ली।

4 दो बहिनें[25]

एक बार की बात है कि दो बहिनें थीं – एक बहिन मारकिस[26] थी और दूसरी बहिन बहुत गरीब थी।

मारकिस की एक बहुत बदसूरत सी बेटी थी और उस गरीब बहिन के तीन बेटियाँ थीं। वे तीनों अपनी रोजी रोटी कमाने के लिये सूत कातने का काम करती थीं।

एक दिन उनके पास मकान का किराया देने के लिये पैसे नहीं थे तो उनके मकान मालिक ने उनको घर से बाहर निकाल दिया और वे सड़क पर आ गयीं।

मारकिस का नौकर उधर से गुजर रहा था तो उसने मारकिस की बहिन और उसकी बेटियों को सड़क पर खड़ा देखा तो मारकिस को जा कर उनके बारे में बताया।

उसने मारकिस से उनको शरण देने की प्रार्थना की और वह तब तक उससे प्रार्थना करता रहा जब तक वह उनको अपने सामने वाले दरवाजे के ऊपर वाले कमरे में रखने के लिये तैयार नहीं हो गयी।

शाम को लड़कियाँ बैठीं और रोज की तरह वे लालटेन की रोशनी में अपना काम करने लगीं ताकि वे अपने लैम्प का तेल बचा सकें। पर मारकिस को यह अच्छा नहीं लगा।

---

[25] The Two Cousins. Tale No 183. A folktale from Italy from its Province of Regusa area.

[26] Marquise – the wife of a Marquis (Noble Man)

उसने सोचा कि वे चीज़ें बर्बाद कर रही हैं इसलिये उसने लालटेन बुझा दी। वे लड़कियाँ फिर चाँदनी में अपना सूत कातने लगीं।

एक शाम सबसे छोटी लड़की ने निश्चय किया कि वह तब तक जाग कर काम करेगी जब तक चाँद छिपेगा। सो जब चाँद उतरने लगा तो वह भी सूत कातती हुई उसके पीछे पीछे चल दी।

इस तरह वह जब वह उसके साथ चलते और सूत कातते हुए उसके पीछे पीछे चली जा रही थी तो एक तूफान में फँस गयी। वहीं पास में उसको एक मौनेस्टरी[27] दिखायी दी तो वह शरण लेने के लिये उस मौनेस्टरी में चली गयी।

मौनेस्टरी में उसको बारह साधु[28] मिले। उन्होंने उस लड़की से पूछा — "बेटी तुम इस तूफान में यहाँ क्या कर रही हो?"

वह बोली — "बाहर तूफान आया हुआ है सो मैं उस तूफान से बचने के लिये यहाँ आ गयी हूँ।"

उनमें से जो सबसे बड़ा साधु था वह बोला — "भगवान करे तुम और भी ज़्यादा प्यारी होती जाओ।"

दूसरा साधु बोला — "जब तुम अपने बालों में कंघी करो तो तुम्हारे बालों में से हीरे और मोती झड़ें।"

---

[27] A monastery is the building or complex of buildings comprising the domestic quarters and workplace(s) of monastics, whether monks or nuns, and whether living in communities or alone (hermits). The monastery generally includes a place reserved for prayer which may be a chapel, church or temple, and may also serve as an oratory.

[28] Translated for the word "Monk"

तीसरा साधु बोला — "जब तुम अपने हाथ धोओ तो तुम्हारे हाथों से कई प्रकार की मछलियाँ और ईल मछली[29] गिरें।

चौथा साधु बोला — "जब तुम बोलो तो तुम्हारे मुँह से गुलाब और चमेली के फूलों की बारिश हो।"

पाँचवे साधु ने कहा — "तुम्हारे गाल दो सेबों की तरह से हो जायें।"

छठे साधु ने कहा — "जब तुम काम करो तो जैसे ही तुम उसे शुरू करो तो वह उसी समय खत्म हो जाये।"

तब तक तूफान थम चुका था सो उन्होंने उसको जाने का रास्ता दिखाया और कहा कि जब वह आधे रास्ते पहुँच जाये तो पीछे मुड़ कर देखे।

इसके बाद वह लड़की वहाँ से चली गयी। उसने उन साधुओं के कहे अनुसार आधे रास्ते जा कर पीछे मुड़ कर देखा तो वह तो इतनी चमकीली हो गयी जैसे कि तारा।

जब वह घर पहुँची तो उसने पहला काम तो यह किया कि उसने एक बर्तन में पानी भरा और उसमें अपने हाथ डुबो दिये। तुरन्त ही उस बर्तन में दो ताजा ईल मछली आ गयीं जैसे उनको अभी अभी पकड़ कर लाया गया हो।

[29] Eel fish – a kind of fish which looks like a snake. See its picture above

उसकी मॉ और बहिनों को यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ तो उन्होंने उससे कहा कि वह उनको सब बात बताये कि यह सब कैसे हुआ।

फिर उन्होंने उसके बालों में कंघी की तो उनमें से बहुत सारे हीरे और मोती निकल पड़े। उसकी मॉ और बहिनों ने उन सबको इकट्ठा कर लिया और वे उनको अपनी मारकिस मौसी के पास ले गयीं।

मारकिस ने तुरन्त ही उनसे उसका सारा हाल पूछा और अपनी बेटी को वहॉ भेजने का निश्चय किया क्योंकि उसकी लड़की को तो सुन्दरता की बहुत ज़्यादा जरूरत थी।

उसने अपनी बेटी को छज्जे पर खड़े हो कर पूरी शाम इन्तजार करने के लिये कहा। और जब चॉद ढलने लगा तो उसने उसको भी सूत कातते हुए चॉद के पीछे पीछे भेजा।

उसको वह मौनेस्टरी भी मिल गयी और वहॉ वे बारह साधु भी मिल गये जो उसकी मौसी की लड़की को मिले थे। उन साधुओं ने उस लड़की को तुरन्त पहचान लिया कि वह मारकिस की बेटी थी और साथ में यह भी जान लिया कि वह वहॉ क्यों आयी थी।

वहॉ बैठे सबसे बड़े साधु ने कहा — "भगवान करे तुम और ज़्यादा बदसूरत हो जाओ।"

दूसरे साधु ने कहा — "जब तुम अपने बालों में कंघी करो तो तुम्हारे बालों से बहुत सारे सॉप निकलें।"

तीसरा साधु बोला — “जब तुम अपने हाथ धोओ तो तुम्हारे हाथों से बहुत सारे हरे गिरगिट निकलें।”

चौथा साधु बोला — “जब तुम बोलो तो तुम्हारे मुँह से बहुत सारी गन्दगी निकले।”

इसके बाद उन्होंने उसको वहाँ से भेज दिया। मारकिस तो अपनी बेटी के वापस आने का बहुत बेचैनी से इन्तजार कर रही थी पर जब उसकी बेटी घर वापस लौटी तो उसने देखा कि वह तो पहले से भी ज़्यादा बदसूरत हो गयी थी।

यह देख कर उसकी माँ को तो इतना धक्का लगा कि वह तो बस मरते मरते ही बची।

उसने उससे पूछा कि उसके साथ क्या हुआ था तो जैसे ही उसने बोलने के लिये मुँह खोला तो उसके मुँह से बहुत सारी गन्दगी निकलते देख कर तो वह बेहोश ही हो गयी।

इस बीच वह सुन्दर लड़की एक बार दरवाजे के पास बैठी थी कि एक राजा उधर से गुजरा। राजा ने उसको देखा तो उसको उस लड़की से प्रेम हो गया। उसने शादी के लिये उसका हाथ माँगा तो उसकी मारकिस मौसी ने हाँ कर दी।

वह लड़की अपनी मारकिस मौसी के साथ जो उसकी सबसे ज़्यादा करीब की रिश्तेदार थी उस राजा के साथ उसके देश चली गयी।

थोड़ी दूर जाने के बाद राजा आगे आगे चला गया ताकि वह अपने महल में अपनी पत्नी का ठीक से स्वागत कर सके। जैसे ही राजा ऑखों से ओझल हुआ तो मारकिस ने दुलहिन को पकड़ कर उसकी ऑखें निकाल कर उसको एक गुफा में फेंक दिया और अपनी बेटी को राजा की गाड़ी में बैठा दिया।

जब राजा ने अपनी रानी की बदसूरत बहिन को गाड़ी से उतरते देखा तो वह डर गया।

उसने धीरे से पूछा — "इसका क्या मतलब है?"

लड़की ने इसका जवाब देने के लिये अपना मुँह खोला ही था कि उसकी सॉस की बू से राजा वहीं बेहोश सा गिर पड़ा।

तब मारकिस ने राजा को एक कहानी बना कर सुनायी कि उस लड़की पर किसी ने जादू कर दिया है उस जादू की वजह से वह वैसी हो गयी है।

पर राजा को इस कहानी पर विश्वास नहीं हुआ और उसने उन दोनों मॉ बेटी को जेल में डलवा दिया।

उधर वह अन्धी लड़की उस गुफा में पड़ी पड़ी रोती रही और सहायता के लिये पुकारती रही। तभी वहॉ से एक बूढ़ा गुजर रहा था। उसने उसका रोना और चिल्लाना सुना तो उसके पास आया। उसको उस बुरी दशा में देख कर वह उसको उठा कर अपने घर ले गया।

अब उसका घर तो हीरे और मोतियों से, गुलाब और चमेली के फूलों से और ईल और मछलियों से भर गया। उसने उन सबसे दो टोकरियाँ भर लीं और उनको ले कर राजा की खिड़की के नीचे उनको बेचने के लिये खड़ा हो गया।

लड़की ने उससे कहा था कि वह राजा को वे हीरे जवाहरात आँखों के बदले में बेचे सो जब मारकिस ने उस बूढ़े को जवाहरात खरीदने के लिये बुलाया तो उसने उससे उनकी वही कीमत माँगी।

मारकिस ने अपनी बहिन की लड़की की एक आँख दे कर उन सब सुन्दर चीज़ों को खरीद लिया। उसने सोचा कि वह राजा से यह कहेगी कि यह सब उसकी बेटी ने पैदा किया है।

बूढ़ा वह एक आँख ले कर वहाँ से चल दिया और वह एक आँख ला कर उस लड़की को दे दी। उस लड़की ने अपनी वह आँख अपनी आँख की जगह लगा ली।

अगले दिन वह फिर वैसी ही टोकरियाँ ले कर महल गया और उनको भी उसने एक आँख के बदले में बेचने के लिये कहा।

मारकिस जो राजा को इस बात का विश्वास दिलाने के लिये बहुत उत्सुक थी कि वह हीरे मोती फूल मछलियाँ आदि सब उसकी बेटी ने पैदा किये थे उसने उस बूढ़े से वे दोनों टोकरियाँ भी अपनी बहिन की बेटी की दूसरी आँख दे कर खरीद लीं।

पर राजा को इस बात का विश्वास नहीं दिलाया जा सका कि वह सब उस लड़की ने ही पैदा किया है क्योंकि वह जब भी उस

लड़की के पास जाता तो उसकी साँसों से अभी भी वैसी ही बू आती जैसी कि पहली बार आयी थी।

अब उस गरीब बहिन की लड़की को तो अपनी ऑखें मिल गयीं थीं सो एक दिन उसने एक कपड़े पर कढ़ाई कर के अपनी तस्वीर बनायी और उस तस्वीर को बूढ़े को दे कर बेचने के लिये उसी सड़क पर रखवा दिया जिस पर राजा का महल था।

राजा उधर से निकला तो उसने वह तस्वीर देखी तो उसने बूढ़े से पूछा — "यह तस्वीर किसने बनायी है?"

बूढ़े ने उसको सारी कहानी सुना दी। तो राजा बोला कि वह उस लड़की से मिलना चाहता है। बूढ़ा राजा को अपने घर ले गया। राजा ने उस लड़की को पहचान लिया और वह उसको अपने महल ले आया।

मारकिस को उसने गर्म तेल में डाल कर उबाल कर मार दिया और अपनी रानी के साथ खुशी से रहने लगा। बाद में उसने अपनी रानी के परिवार को भी अपने महल में बुलवा लिया।

5 दो खच्चर हॉकने वाले[30]

एक बार दो खच्चर[31] हॉकने वाले थे जो आपस में बहुत अच्छे दोस्त थे। उनमें से एक का भगवान में पूरा विश्वास था जबकि दूसरा शैतान[32] में विश्वास करता था।

एक दिन वे दोनों यात्रा कर रहे थे तो एक ने दूसरे से कहा — "वह शैतान ही है जो हमको सहायता करता है।"

दूसरा बोला — "नहीं जो भगवान में विश्वास करता है भगवान उसी की सहायता करता है।"

वे दोनों इस बात पर आपस में काफी देर तक बहस करते रहे पर अन्त में शैतान में विश्वास रखने वाले ने कहा — "चलो, अच्छा एक एक खच्चर की शर्त लगाते हैं।"

उसी समय काले कपड़े पहने एक नाइट[33] वहॉ से गुजरा। वह इन कपड़ों में शैतान था। उन दोनों दोस्तों ने उससे पूछा कि उन दोनों में से कौन ठीक था। तो वह नाइट बोला — "वह शैतान ही है जो तुम्हारी सहायता करता है।"

शैतान में विश्वास रखने वाला आदमी बोला — "देखा न मैंने तुमसे क्या कहा था।"

---

[30] The Two Muleteers. Tale No 184. A folktale from Italy from its Ragusa area.

[31] Translated for the word "Mule". Mule is a donkey-like animal.

[32] Satan or Devil

[33] A knight is a person granted an honorary title of *knighthood* by a monarch or other political leader for service to the Monarch or country, especially in a military capacity. See its picture above.

और उसने अपने दोस्त से उसका खच्चर ले लिया पर उसका दोस्त अभी भी इस बात को मानने के लिये तैयार नहीं था कि शैतान ही सबकी सहायता करता है सो उन दोनों ने दोबारा शर्त लगायी और दोबारा किसी और से पूछने के लिये कहा।

इस बार उन्होंने एक ऐसे नाइट को अपना जज बनाया जो सफेद कपड़े पहने था। और क्योंकि वह भी शैतान ही था इसलिये उसने भी यही कहा कि वह शैतान ही है जो तुम्हारी सहायता करता है।

इस तरह भगवान में विश्वास रखने वाले आदमी के पास से वह खच्चर भी जाता रहा और आखिर जो आदमी भगवान में विश्वास रखता था उसके हाथ से उसके सारे खच्चर निकल गये।

फिर भी भगवान में विश्वास रखने वाले ने हार नहीं मानी। वह बोला — "मेरा अभी भी यही विश्वास है कि मैं ठीक हूँ और इस बात पर मैं अपनी आखें तक शर्त पर लगा सकता हूँ।"

उसका दोस्त बोला — "ठीक है। तब हम एक और शर्त लगाते है। उस शर्त को अगर तुम जीत गये तो तुमको तुम्हारे सारे खच्चर वापस मिल जायेंगे और अगर मैं जीत गया तो तुम मुझे अपनी ऑखें दे दोगे।"

"ठीक है।"

तभी एक नाइट हरे रंग की पोशाक में उधर से गुजरा तो उन्होंने उससे पूछा कि कौन ठीक था। नाइट बोला — "यह बताना

तो बहुत ही आसान है। जो तुमको सहायता करता है वह शैतान ही है।" और वह अपने घोड़े पर सवार वहाँ से दौड़ गया।

इस तरह जो आदमी शैतान में विश्वास करता था उसने जो आदमी भगवान में विश्वास करता था उसकी आँखें ले लीं और उसको वहीं उसी देश में अन्धा कर के छोड़ कर चला गया।

अब वह अन्धा बेचारा इधर उधर घूमता रहा घूमता रहा। घूमते घूमते उसको एक गुफा मिल गयी। वह अपनी रात बिताने के लिये उस गुफा में घुस गया। उस गुफा में बहुत सारी झाड़ियाँ उगी हुई थीं। वह एक तरफ को आराम करने के लिये लेट गया।

अभी वह लेटा ही था कि उसने कई लोगों के उस गुफा में घुसने की आवाज सुनी। असल में उस दिन उस गुफा में सारे शैतानों की एक मीटिंग थी। इन शैतानों के सरदार ने हर एक से एक एक कर के यह सवाल किया कि उन्होंने पिछले दिनों में क्या हासिल किया।

उनमें से एक शैतान ने कहा कि वह कई बार वेश बदल कर गया और एक बेचारे को अपने सारे खच्चरों से ही नहीं बल्कि अपनी आँखें खोने पर भी मजबूर कर दिया।

शैतान का सरदार बोला — "बहुत अच्छे। उसकी आँखों की रोशनी अब कभी वापस नहीं आयेगी जब तक कि वह अपनी आँखों पर इस घास के दो पत्ते न रखे जो यहाँ इस गुफा के मुँह के पास उगती है।"

सारे शैतान हॅस पड़े और बोले — "क्या तुम दिखा सकते हो कि वह उस घास के भेद को कैसे ढूॅढेगा? वह तो अन्धा है।"

वह बेचारा खच्चर हॉकने वाला तो वहीं छिपा बैठा था। यह सुन कर तो वह खुशी से उछल पड़ा कि उसकी ऑखों की रोशनी इतनी आसानी से वापस आ सकती है।

पर फिर भी वह सॉस रोके वहीं चुपचाप बैठा रहा और इस बात का इन्तजार करता रहा कि कब वे शैतान वहॉ से जायेंगे और कब वह घास तोड़ कर अपनी ऑखों की रोशनी वापस पायेगा। पर वे शैतान तो एक न एक कहानी सुनाते ही रहे।

एक और शैतान बोला — "मैंने रूस के राजा की बेटी के गले में एक मछली की हड्डी फॅसा दी और कोई उसको उसके गले से बाहर नहीं निकाल सका।

बावजूद इसके कि राजा ने जो कोई भी उसके गले से वह हड्डी बाहर निकालेगा उसको वह बहुत सारा पैसा देगा कोई उस हड्डी को उसके गले से बाहर नहीं निकाल सका।

और उसकी हड्डी कोई उसके गले से बाहर निकाल भी नहीं सकता क्योंकि उनको पता ही नहीं है कि इस काम के लिये उस लड़की के छज्जे पर लगी हुई खट्टे अंगूरों की बेल पर लगे उन अंगूरों का केवल तीन बूॅद रस चाहिये।"

शैतानों के सरदार ने कहा — "धीरे बोलो। पत्थरों की भी ऑखें होती हैं और झाड़ियों के भी कान होते हैं।"

सुबह होने से पहले पहले ही वे सब शैतान अपनी अपनी कहानी सुना कर वहाँ से चले गये। तब वह खच्चर हाँकने वाला झाड़ियों में से निकला और उस घास की तरफ चला जिससे उसकी आखों की रोशनी वापस आ सकती थी।

उसको वहाँ वह घास मिल गयी और उसने उस घास के दो दो पत्ते अपने दोनों आँखों की खाली जगह पर छुआ लिये। उसकी नजर वापस आ गयी और अब वह देखने लगा था। अपनी नजर वापस आने के बाद वह तुरन्त ही रूस चल दिया।

रूस के राजा के महल में उसकी बेटी के कमरे में बहुत सारे डाक्टर इकट्ठे बैठे थे पर कोई भी कुछ भी नहीं कर पा रहा था। जब लोगों ने एक मैले कुचैले और धूल से भरे खच्चर हाँकने वाले को उसकी आँखें ठीक करने के लिये वहाँ आते देखा तो वे सब हँस पड़े।

पर राजा बोला — "जब इतने सारे लोगों ने कोशिश कर ली और कोई मेरी बेटी को ठीक नहीं कर सका तो इस आदमी को भी एक मौका देने में क्या हर्ज है।"

सबने उसको कमरे में आने दिया। उसने कहा कि उसको कुछ देर के लिये राजकुमारी के कमरे में अकेला छोड़ दिया जाये। उसको राजा की बेटी के साथ अकेला छोड़ने के लिये सब लोग उस कमरे से बाहर चले गये।

सबके चले जाने के बाद वह राजकुमारी के कमरे के छज्जे पर गया। वहाँ लगी खट्टे अंगूर की बेल से उसने अंगूर तोड़े और उनके रस की एक एक कर के तीन बूँदें उसके गले में डाल दीं। उस रस से उसके गले में फँसी वह हड्डी गल गयी और राजा की बेटी हँसती हुई उठ बैठी।

सोचो ज़रा कि राजा को कितनी खुशी हुई होगी। इस बात के लिये तो कोई भी इनाम छोटा था। राजा ने उसको सोने से ढक दिया तो राजा के लोगों ने उसका वह सोना उसके घर तक पहुँचाने में उसकी सहायता की।

उधर जब यह खच्चर हाँकने वाला बहुत दिनों तक घर नहीं आया तो उसकी पत्नी ने सोचा कि लगता है कि वह मर गया पर जब उसने उसको ज़िन्दा घर वापस आते देखा तो उसको लगा कि उसके पति का भूत आ गया है।

पर बाद में उसके पति ने अपनी पत्नी को अपनी पूरी कहानी सुनायी और उसको अपना खजाना भी दिखाया। उस पैसे से उसने एक बहुत बड़ा महल बनवाया और वे सब वहाँ आराम से रहने लगे।

उसका वह दोस्त भी उससे मिलने आया जो उसको अन्धा कर के छोड़ गया था। उसकी आँखों की रोशनी वापस आयी देख कर और उसको इतनी दौलत में खेलते देख कर उसने उासे पूछा — “दोस्त, यह सब तुमने कैसे किया?”

उसके दोस्त ने अपनी सारी कहानी सुना दी और कहा — "मैंने तुमसे कहा नहीं था कि जो भगवान में विश्वास करता है भगवान उसकी सहायता करता है।"

उसके दोस्त ने अपने मन में सोचा — "आज मैं भी उस गुफा में जाऊँगा और देखूँगा कि मैं भी अमीर हो सकता हूँ क्या?"

सो उस रात वह भी उसी गुफा में जा कर छिप गया। और दिनों की तरह से उस रात को भी शैतान वहाँ पर अपनी मीटिंग करने के लिये आये।

जिन शैतानों ने उसके दोस्त की आखें ली थीं और रूस के राजा की बेटी के मुँह में मछली की हड्डी फँसायी थी उन्हीं शैतानों ने फिर अपने सरदार को बताया कि बड़ी अजीब सी बात है कि उस आदमी की आँखों की रोशनी भी वापस आ गयी और रूस के राजा की बेटी भी ठीक हो गयी।

शैतानों का सरदार बोला — "मैंने तुमसे कहा था न कि पत्थरों की भी आँखें होती हैं और झाड़ियों के भी कान होते हैं। ऐसा लगता है कि उस दिन इस गुफा में जरूर कोई था जो हमारी बातें सुन रहा था। जल्दी करो इस गुफा में आग लगा दो।"

सो सबने मिल कर वहाँ उगी सारी झाड़ियों में आग लगा दी। झाड़ियों के साथ साथ वहाँ बैठा वह आदमी भी जल कर मर गया। उसको शैतान पर विश्वास करने का फल मिल गया था।

6 जियोवानूज़ा लोमड़ी[34]

एक बार की बात है कि एक बहुत ही गरीब आदमी था जिसके एक ही बेटा था। उसका यह बेटा बहुत सीधा था और दुनियाँ की बहुत सारी बातों से अनजान था। उसके इस बेटे का नाम था जोसेफ[35]।

जब उसका पिता मरने लगा तो उसने अपने बेटे जोसेफ से कहा — "बेटा, अब मैं मर रहा हूँ पर मेरे पास तुमको देने के लिये कुछ भी नहीं है। बस यह मकान है और यह नाशपाती का पेड़ है जो इस मकान के पास लगा है।" और यह कह कर वह मर गया।

अब जोसेफ उस मकान में अकेला रहता था और अपने घर के नाशपाती के पेड़ की नाशपातियाँ तोड़ कर बेचा करता था। उसी से उसकी रोजी रोटी चलती थी।

जब नाशपाती का मौसम खत्म हो जाता तो ऐसा लगता था कि जैसे अब वह भूखा मर जायेगा क्योंकि उसको रोटी कमाने का और कोई तरीका आता ही नहीं था।

पर आश्चर्य की बात तो यह थी कि जब नाशपाती का मौसम खत्म हो जाता था तभी भी उस पेड़ की नाशपाती खत्म नहीं होती

[34] Giovannuza Fox. Tale No 185. A folktale from Italy from its Catania area.

[35] Joseph – name of the son

थीं। जब वे सारी नाशपाती तोड़ ली जाती थीं तो उनकी जगह दूसरी नाशपातियाँ आ जाती थीं।

इस तरह जाड़े के मौसम में भी वह एक सुन्दर रसीली नाशपाती का पेड़ बना रहता था और सारे साल नाशपातियों से लदा रहता था।

एक सुबह जब जोसेफ रोज की तरह उस पेड़ से नाशपाती तोड़ने गया तो उसने देखा कि उससे पहले उनको कोई और ही तोड़ कर ले गया है।

उसने सोचा अब मैं क्या करूँ। अगर लोग मेरी नाशपाती इस तरह चुरा कर ले जाते रहेंगे तो मेरा क्या होगा। मैं आज सारी रात जागता हूँ और देखता हूँ कि यह काम किसने किया।

शाम को जब अँधेरा हुआ तो वह नाशपाती के पेड़ के नीचे अपनी बन्दूक ले कर बैठ गया। पर बहुत जल्दी ही उसको नींद आ गयी और वह सो गया। जब वह जागा तो किसी ने उसकी सारी पकी नाशपातियाँ तोड़ ली थीं।

वह अगले दिन फिर पहरे पर बैठा पर बीच में ही फिर सो गया और उसकी नाशपातियाँ फिर से चोरी हो गयीं। तीसरी रात अपनी बन्दूक के साथ साथ वह चरवाहे वाला बाजा भी अपने साथ ले गया।

जब वह नाशपाती के पेड़ के नीचे बैठा तो जागते रहने के लिये वह बाजा बजाने लगा। कुछ देर तक तो उसने अपना वह बाजा

बजाया पर बाद में उसे बजाते बजाते वह थक गया सो उसने उसे बजाना बन्द कर दिया।

जब जोसेफ के बाजे की आवाज आनी बन्द हो गयी तो जियोवानूज़ा लोमड़ी ने जो अब तक जोसेफ की नाशपातियाँ चुराती रही थी सोचा कि जोसेफ शायद सो गया है। वह दौड़ी दौड़ी आयी और नाशपाती तोड़ने के लिये नाशपाती के पेड़ पर चढ़ गयी।

जोसेफ ने तुरन्त अपनी बन्दूक उठायी और उसको मारने के लिये उसकी तरफ निशाना साधा कि वह लोमड़ी बोली — "मुझे मत मारो जोसेफ। अगर तुम मुझे एक टोकरी नाशपाती दे दोगे तो मैं तुमको बहुत अमीर बना दूँगी।"

"पर जियोवानूज़ा, अगर मैं तुमको एक टोकरी नाशपाती दे दूँगा तो फिर मैं क्या खाऊँगा?"

"उसकी तुम चिन्ता न करो। अगर जैसा मैं कहती हूँ वैसा तुम करोगे तो तुम यकीनन अमीर बन जाओगे।"

सो जोसेफ ने उसको एक टोकरी अपनी सबसे अच्छी नाशपातियाँ दे दीं। वह उन नाशपातियों को राजा के पास ले गयी। वहाँ जा कर वह उनसे बोली — "मैजेस्टी, मेरे मालिक ने आपके लिये यह नाशपाती की टोकरी भेजी है और आपसे यह प्रार्थना की है कि आप इनको स्वीकार करें।"

राजा आश्चर्य से बोला — “नाशपाती? और साल के इस मौसम में? यह तो पहली बार है कि इतनी सुन्दर नाशपाती मैं साल के इस मौसम में देख रहा हूँ। तुम्हारा मालिक कौन है?”

जियोवानूज़ा ने जवाब दिया — “काउन्ट पीयर ट्री[36]।”

राजा ने पूछा — “पर साल के इस समय में उसको नाशपाती मिलती कहाँ से हैं?”

लोमड़ी बोली — “उनके पास ऐसी आश्चर्यजनक बहुत सारी चीज़ें हैं। वह तो दुनियाँ के सबसे अमीर आदमी हैं।”

राजा ने उत्सुकता से पूछा — “क्या मुझसे भी ज़्यादा?”

“जी मैजेस्टी, आपसे भी ज़्यादा।”

राजा बहुत ही न्यायपूर्ण था सो उसने लोमड़े से पूछा — “तो मैं इसके बदले में उनको क्या दूँ?”

लोमड़ी बोली — “उसकी आप चिन्ता न करें। उनके लिये तो आप सोचें भी नहीं। वह तो खुद ही बहुत अमीर हैं। आप जो भेंट भी उनको देंगे वह उनको बहुत छोटी ही लगेगी।”

राजा कुछ हिचकते हुए बोला — “तो काउन्ट पीयर ट्री को इन नाशपातियों के लिये मेरी तरफ से बहुत बहुत धन्यवाद देना।”

जियोवानूज़ा वहाँ से वापस लौट आयी और जोसेफ के पास आयी। जोसेफ ने जब उसको देखा तो उससे कहा — “तुम तो कह

[36] Count Pear Tree – Count (male) or countess (female) is a title in European countries for a noble of varying status, but historically deemed to convey an approximate rank intermediate between the highest and lowest titles of nobility. And Pear Tree is his name.

रही थीं कि तुम मुझे अमीर बना दोगी पर तुम तो उन नाशपातियों के बदले में कुछ लायी ही नहीं।"

लोमड़ी बोली — "तुम बिल्कुल चिन्ता न करो। सब कुछ मुझ पर छोड़ दो। मैं फिर कहती हूँ कि तुम बहुत अमीर हो जाओगे।"

अगले दिन वह फिर एक नाशपाती की टोकरी ले कर राजा के पास गयी और बोली — "मैजेस्टी, क्योंकि आपने पहली नाशपाती की टोकरी स्वीकार कर ली थी इसलिये मेरे मालिक काउन्ट पीयर ट्री ने आपके लिये नाशपाती की यह दूसरी टोकरी भेजी है।"

राजा बोला — "अरे मुझे तो विश्वास ही नहीं हो रहा कि ये नाशपातियाँ इस मौसम में आ रही हैं और ये तो रखी हुई भी नहीं लग रही हैं लगता है कि जैसे अभी अभी तोड़ी गयी हैं।"

लोमड़ी बोली — "यह तो कुछ भी नहीं है। मेरे मालिक के लिये नाशपाती की कोई खास कीमत नहीं है क्योंकि उनके पास तो और भी ज़्यादा कीमती चीज़ें हैं।"

राजा कुछ हिचकिचाते हुए बोला — "पर मैं उनके इन अहसानों का बदला कैसे चुकाऊँगा जो उनकी हैसियत के मुताबिक हो?"

लोमड़ी बोली — "यह कोई मुश्किल काम नहीं है। आपकी बेटी शादी के लायक है। आप उसकी शादी मेरे मालिक से कर दीजिये।"

राजा की ऑखें तो आश्चर्य से फैल गयीं। वह बोला — "यह तो मेरे लिये बड़ी इज़्ज़त की बात होगी क्योंकि वह तो मुझसे भी ज़्यादा अमीर हैं। क्या वह मेरी बेटी को स्वीकार करेंगे?"

लोमड़ी बोली — "हॉ हॉ क्यों नहीं। और जब यह बात मेरे मालिक को बुरी नहीं लग रही तो फिर यह बात आपको तो बुरी लगनी ही नहीं चाहिये। काउन्ट पीयर ट्री को तो बस आपकी बेटी चाहिये।

उनको इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि दहेज बड़ा है या छोटा। क्योंकि आप कितना भी बड़ा दहेज देंगे वह उनको अपनी बड़ी दौलत के सामने छोटा ही लगेगा। बस उनको तो आपकी बेटी चाहिये"

राजा बोला — "बहुत अच्छे। तो तुम उनको बोलना कि वह यहॉ आये और हमारे साथ खाना खायें।"

सो जियोवानूज़ा लोमड़ी वापस जोसेफ के पास गयी और बोली — "मैंने राजा से कहा है कि तुम काउन्ट पीयर ट्री हो और तुम उसकी बेटी से शादी करना चाहते हो।"

जोसेफ बोला — "बहिन, यह तुमने क्या किया? अब जब राजा मुझको देखेगा तो वह तो मेरा सिर ही काट देगा।"

लोमड़ी बोली — "यह सब तुम मेरे ऊपर छोड़ दो। तुम इसकी बिल्कुल चिन्ता मत करो। वह ऐसा कुछ नहीं करेगा।"

यह कह कर वह एक दर्ज़ी के पास गयी और बोली — "मेरे मालिक काउन्ट पीयर ट्री को सबसे बढ़िया पोशाक चाहिये तो तुम्हारे पास जो भी सबसे बढ़िया पोशाक हो वह मुझे दे दो। मैं तुम्हें उसकी कीमत बाद में दे दूँगी।" दर्ज़ी ने लोमड़ी को एक काउन्ट के पहनने लायक कपड़े दे दिये।

उसके बाद वह लोमड़ी एक घोड़ा बेचने वाले के पास गयी और उससे बोली — "क्या तुम मुझे मेरे मालिक काउन्ट पीयर ट्री के लिये एक सबसे बढ़िया घोड़ा दोगे? हमको कीमत से कोई मतलब नहीं है। हम उसकी कीमत तुमको कल दे देंगे।" उसने लोमड़ी को एक सबसे अच्छा घोड़ा दे दिया।

इस तरह से वह लोमड़ी जोसेफ के लिये एक बहुत बढ़िया सूट और एक बहुत बढ़िया घोड़ा ले कर जोसेफ के घर पहुँची और वह अगले दिन उस सूट को पहन कर और उस घोड़े पर सवार हो कर राजा के यहाँ चल दिया। लोमड़ी उसके आगे आगे थी।

जोसेफ पीछे से चिल्लाया — "जियोवानूज़ा, अगर राजा मुझसे कुछ बात करेगा तो मैं क्या जवाब दूँगा। मुझे तो किसी बड़े आदमी से एक शब्द बोलने में भी बहुत डर लगता है।"

लोमड़ी बोली — "तुमको बोलने की जरूरत ही नहीं है। तुम बस मुझको बोलने देना। तुमको तो बस इतना कहना है "गुड डे" और "मैजेस्टी"। बाकी मैं सँभाल लूँगी।"

वे राजा के महल आ पहुँचे थे सो राजा काउन्ट पीयर ट्री को अन्दर ले जाने के लिये बाहर आया। उसने काउन्ट को बड़ी इज़्ज़त के साथ नमस्ते की। तो जोसेफ भी थोड़ा झुक कर बोला — "मैजेस्टी"।

राजा उसको खाने की मेज पर ले गया। वहाँ उसकी सुन्दर बेटी पहले से ही बैठी हुई थी। जोसेफ ने उससे कहा — "गुड डे।"

वे सब वहीं बैठ गये और उन्होंने आपस में बातें करनी शुरू कर दीं। पर काउन्ट पीयर ट्री जब बिल्कुल नहीं बोला तो राजा लोमड़ी के कान में फुसफुसाया — "बहिन जियोवानूज़ा? क्या तुम्हारे मालिक की जीभ बिल्ली ले गयी है?"

जियोवानूज़ा बोली — "मैजेस्टी आपको तो मालूम है जब किसी के पास बहुत सारी जमीन और दौलत होती है तो वह उसके बारे में ही सोचता रहता है। इसी लिये।" सो उस मुलाकात में राजा ने काउन्ट से बात न करने की बहुत ही ज़्यादा सावधानी बरती।

अगली सुबह जियोवानूज़ा ने जोसेफ से कहा — "मुझे एक टोकरी नाशपाती और दो ताकि मैं उसे राजा को दे सकूँ।"

जोसेफ बोला — "जैसा तुम चाहो बहिन। पर अगर अब मैं अमीर न हुआ तो मेरी गरीबी शुरू हो जायेगी।"

जियोवानूज़ा बोली — "तुम अपने दिमाग को शान्त रखो। मैं तुमको विश्वास दिलाती हूँ कि तुम जल्दी ही एक अमीर आदमी बनोगे।"

सो जोसेफ ने एक टोकरी नाशपाती तोड़ी और जियोवानूज़ा को दे दी। जियोवानूज़ा उन नाशपातियों को राजा के पास ले गयी और बोली — "मेरे मालिक काउन्ट पीयर ट्री ने आपके लिये यह नाशपाती की टोकरी भेजी है और अपनी प्रार्थना का जवाब माँगा है।"

राजा बोला — "काउन्ट से कहना कि यह शादी तभी हो जायेगी जब वह चाहेंगे।"

यह सुन कर जियोवानूज़ा तो बहुत खुश हो गयी और तुरन्त ही उछलती कूदती जोसेफ के पास लौट आयी। उसने वापस आ कर जोसेफ को यह खुशखबरी सुनायी।

जोसेफ कुछ परेशान हो कर बोला — "पर बहिन जियोवानूज़ा, मैं अपनी पत्नी को कहाँ ले जाऊँगा? इस छोटे से घर में मैं उसको कैसे ला सकता हूँ?"

जियोवानूज़ा बोली — "वह सब भी तुम मुझ पर छोड़ दो। तुम उसको सोचो भी नहीं। क्या मैंने अब तक तुम्हारे लिये कुछ नहीं किया जो आगे नहीं करूँगी? सो जैसे अब तक किया वैसे ही मैं आगे भी करूँगी।"

जोसेफ की शादी राजा की बेटी से बड़ी धूमधाम से हो गयी और इस तरह काउन्ट पीयर ट्री ने राजा की बेटी को अपनी पत्नी बना लिया।

कुछ दिन बाद जियोवानूज़ा ने राजा को बताया कि मेरे मालिक अब अपनी पत्नी को अपने महल ले जाना चाहते हैं। राजा बोला — "ठीक है। मैं भी उनके साथ जाना चाहूँगा ताकि मैं भी देख सकूँ कि काउन्ट पीयर ट्री के पास क्या क्या है।"

सब लोग घोड़े पर चढ़े। राजा के साथ कई नाइट्स[37] भी थे। वे सब मैदानों की तरफ चले तो जियोवानूज़ा बोली — "मैं पहले वहाँ पहुँचती हूँ और आप सब लोगों के वहाँ पहुँचने की तैयारी करती हूँ।"

जैसे ही वह आगे दौड़ कर गयी तो उसको हजारों भेड़ें मिलीं। उसने उनके चरवाहों से पूछा — "ये भेड़ें किसकी हैं?"

"पापा ओगरे[38] की।"

लोमड़ी बोली — "ज़रा धीरे बोलो। तुम लोग उस कारवाँ को आते देख रहे हो न? वह राजा है जिसने पापा ओगरे से लड़ाई की घोषणा कर रखी है सो जब वह राजा यहाँ आये और तुमसे यह पूछे कि ये भेड़ें किसकी हैं तो अगर तुमने उनको यह

[37] A knight is a person granted an honorary title of *knighthood* by a monarch or other political leader for service to the Monarch or country, especially in a military capacity. See its picture above.

[38] Ogre – An ogre (feminine ogress) is a being usually depicted as a large, hideous, manlike monster that eats human beings.

कहा कि ये भेड़ें पापा ओगरे की हैं तो राजा के नाइट्स तुमको मार देंगे।”

“तो फिर हम क्या कहें?”

“पता नहीं। पर कह कर देखना कि ये सब भेड़ें काउन्ट पीयर ट्री की हैं।”

तब तक राजा वहाँ तक आ गया तो इतनी सारी भेड़ें देख कर उसने उनके चरवाहों से पूछा — “ये इतनी सारी भेड़ें किसकी हैं?”

सब चरवाहे चिल्लाये — “काउन्ट पीयर ट्री की।”

राजा खुशी से चिल्लाया — “ओह मेरे भगवान। जिस आदमी के पास इतनी सारी भेड़ें हैं यह आदमी तो वाकई बहुत अमीर होगा।”

कुछ दूर और आगे चल कर उस लोमड़ी को हजारों सूअर मिले। लोमड़ी ने उनके चराने वालों से भी पूछा — “ये सूअर किस के हैं?”

“पापा ओगरे के।”

“श श श श। धीरे बालो। तुम वे सिपाही देख रहे हो न जो इधर ही चले आ रहे हैं। अगर तुमने उनसे यह कहा कि ये सूअर पापा ओगरे के हैं तो वे तुमको मार देंगे। तुम उनसे कहना कि ये सारे सूअर काउन्ट पीयर ट्री के हैं तो वे तुमको नहीं मारेंगे।”

“ठीक है।”

तब तक राजा वहाँ तक आ गया तो हजारों सूअर देख कर उनके रखवालों से पूछा कि ये इतने बढ़िया सूअर किसके हैं तो उन्होंने जवाब दिया "काउन्ट पीयर ट्री के।" यह सुन कर राजा बहुत खुश हुआ कि उसका दामाद[39] तो बहुत अमीर है – इतनी सारी भेड़ें, इतने सारे सूअर।

उसके बाद राजा के लोग एक ऐसी जगह आये जहाँ बहुत सारे घोड़े घास खा रहे थे। राजा ने जब उनकी देखभाल करने वालों से पूछा कि वे घोड़े किसके हैं तो उनके रखवालों ने भी उनको यही कहा कि वे घोड़े काउन्ट पीयर ट्री के हैं।

राजा ने सोचा कि उसकी बेटी कितनी खुशकिस्मत है कि उसको कितना अच्छा पति मिल गया है।

अन्त में जियोवानूज़ा लोमड़ी पापा ओगरे के महल में आ पहुँची। वहाँ वह अकेला ही अपनी पत्नी के साथ रहता था।

माँ ओगरे ने जब जियोवानूज़ा को देखा तो वह तुरन्त पापा ओगरे के पास दौड़ी आयी और बोली — "काश तुम यह जान सकते कि तुम किस मुसीबत में फँस गये हो।"

पापा ओगरे डर गया और बोला — "क्या हो गया?"

"देखो न, वह धूल का बादल उड़ता चला आ रहा है। लगता है कि यह तो राजा की सेना है जो तुमको मारने चली आ रही है।"

[39] Sone-in-law – daughter's husband

दोनों ने बहिन लोमड़ी से कहा — “बहिन लोमड़ी, हमारी सहायता करो।”

लोमड़ी बोली — “मेरी सलाह यह है कि तुम लोग स्टोव में जा कर छिप जाओ। जब वे सब यहाँ से चले जायेंगे तो मैं तुमको इशारा कर दूँगी तब तुम बाहर निकल आना।”

सो पापा और माँ ओगरे ने वही किया। वे दोनों स्टोव में छिप कर बैठ गये। अन्दर जा कर उन्होंने जियोवानूज़ा से कहा कि वह स्टोव का दरवाजा पेड़ की टहनियों से बन्द कर दे ताकि वे लोग उनको देख न सकें।

यही तो वह लोमड़ी भी सोच रही थी सो उसने पेड़ की टहनियाँ स्टोव के दरवाजे पर लगा कर स्टोव को पूरी तरह से बन्द कर दिया। फिर वह जा कर राजा और उसकी बेटी का स्वागत करने के लिये उनके महल के दरवाजे पर खड़ी हो गयी।

जब राजा वहाँ आये तो उसने नम्रता से कहा — “मैजेस्टी, आइये। मेहरबानी कर के घोड़े पर से उतरिये। यही काउन्ट पीयर ट्री का महल है।”

राजा और उसकी बेटी और जोसेफ तीनों अपने अपने घोड़ों से नीचे उतरे और उस महल की शानदार सीढ़ियाँ चढ़े। वहाँ उन्होंने काउन्ट पीयर ट्री की बहुत सारी दौलत देखी तो राजा के मुँह से तो एक शब्द भी नहीं निकला।

उसने सोचा — “मेरे महल में तो इससे आधी दौलत भी नहीं है।”

उधर जोसेफ जो एक गरीब आदमी था यह सब देखता का देखता रह गया। उसको अपनी ऑखों पर बिल्कुल भी विश्वास नहीं हो रहा था कि वह सब उसका था।

जब राजा को थोड़ा होश आया तो उसने पूछा — “पर यहॉ कोई नौकर नहीं दिखायी दे रहा।”

लोमड़ी ने तुरन्त ही जवाब दिया — “आज के दिन उन सबको छुट्टी दे दी गयी है क्योंकि मेरे मालिक बिना मालकिन की मर्जी के कोई भी इन्तजाम नहीं करना चाहते थे। अब जब वह आ गयी हैं तो अब वह हुक्म करें कि वह क्या चाहती हैं वही किया जायेगा।”

जब उन्होंने सब कुछ देख लिया तो राजा अपने महल को लौट गया और काउन्ट पीयर ट्री वहीं रह गया, राजा की बेटी के साथ, पापा ओगरे के महल में।

इस बीच पापा और मॉ ओगरे अभी तक स्टोव में ही बन्द थे। रात को लोमड़ी स्टोव के ऊपर गयी और फुसफुसायी — “पापा ओगरे, मॉ ओगरे, क्या तुम लोग अभी यहीं हो?”

उन्होंने बड़ी कमजोर सी आवाज में कहा — “हॉ हम लोग अभी यहीं हैं।”

लोमड़ी बोली — “ऐसा करो तुम लोग अभी यहीं रहो मैं अभी आती हूॅ।”

कह कर उसने स्टोव के सामने रखी टहनियों में आग लगा दी। पापा ओगरे और मॉ ओगरे दोनों उस आग में जल कर मर गये।

लोमड़ी काउन्ट पीयर ट्री से बोली — "अब तुम अमीर और खुश हो पर तुम मुझसे एक वायदा करो कि जब मैं मरूँ तो मुझे एक बहुत सुन्दर ताबूत[40] में लिटाना और मुझे पूरी इ़ज़्ज़त के साथ दफनाना।"

राजा की बेटी ने जिसको उस लोमड़ी से प्यार हो गया था उससे कहा — "ओह बहिन जियोवानूज़ा, तुम इस खुशी के मौके पर ऐसी मरने की बात क्यों कर रही हो?"

कुछ समय बाद जियोवानूज़ा ने उन दोनों का इम्तिहान लेना चाहा। सो उसने मरने का बहाना किया। जब राजा की बेटी ने लोमड़ी को अकड़ा पड़ा देखा तो वह चिल्लायी — "अरे देखो जियोवानूज़ा तो मर गयी। ओह हमारी प्यारी दोस्त। हमको इसके लिये तुरन्त ही एक बहुत ही बढ़िया ताबूत बनवाना चाहिये।"

काउन्ट पीयर ट्री बोला — "ताबूत? एक जानवर के लिये? हम तो इसको खिड़की से ऐसे ही बाहर फेंक देंगे।"

कह कर उसने उसको पूँछ से पकड़ लिया और बाहर फेंकने ही वाला था कि वह लोमड़ी उसके हाथ से निकल कर कूद गयी और चिल्लायी — "ओ बिना पैसे के आदमी, नीच, बेवफा, क्या तुम इतनी जल्दी सब कुछ भूल गये?

[40] Translated for the word "Coffin". See its picture above.

भूल गये कि तुम्हारी यह सब दौलत मेरी वजह से है। अगर मैं न होती तो तुम अभी भी दान पर ज़िन्दा रह रहे होते। तुम बहुत ही कंजूस, बेवफा और नीच हो।"

काउन्ट पीयर ट्री ने उससे प्रार्थना की — "मेहरबानी कर के मुझे माफ कर दो। न तो मैं तुम्हें कोई नुकसान पहुँचाना चाहता हूँ और न ही तुम्हारा दिल दुखाना चाहता हूँ। यह तो बस मेरे मुँह से ऐसे ही निकल गया। मैंने सोचा ही नहीं था कि मैं क्या कह रहा हूँ।"

"बस अब तुम मुझे आखिरी बार देख रहे हो।" कह कर वह लोमड़ी दरवाजे की तरफ भाग गयी।

काउन्ट पीयर ट्री ने उससे बहुत प्रार्थना की कि वह उसके साथ ही रहे पर उसने नहीं सुना। वह सड़क पर भागी चली गयी और गायब हो गयी और फिर कभी दिखायी नहीं दी।

7 एक बच्चा जिसने क्रास को खाना खिलाया[41]

एक बार की बात है कि एक किसान था जो भगवान को बहुत मानता था और उससे डरता भी था। एक बार उसको अपने खेत में किसी का छोड़ा हुआ एक बच्चा मिल गया।

"बेचारा बच्चा। ऐसा कौन सा आदमी है जो इस नन्हें से बच्चे को यहाॅ इसकी किस्मत पर छोड़ गया है। बेटे तू डर नहीं, तू मेरे घर चल मैं तुझे पालूॅगा।" और वह उस बच्चे को अपने घर ले आया।

जिस दिन से वह उस बच्चे को अपने घर ले कर आया उस दिन से उस किसान के तो दिन ही बदल गये। उसका सब कुछ बहुत अच्छा हो गया।

उसके पेड़ों पर फल ज़्यादा और अच्छे आने लगे। उसकी गेंहू की फसल भी ज़्यादा और बढ़िया होने लगी। अब उसकी गेहॅू की बालियों में से ज़्यादा अच्छे दाने निकलते थे। उसकी अंगूर की बेलों पर बड़े बड़े, ज़्यादा रसीले और ज़्यादा अंगूर आने लगे थे।

इस तरह उस किसान की सब फसलें बहुत अच्छी होने लगीं और अब उसको अपनी सब फसलों से ज़्यादा आमदनी होने लगी।

[41] The Child Who Fed the Crucifix. Tale No 186. A folktale from Italy from its Catania area.

उधर बच्चा भी बड़ा होता गया और वह जितना बड़ा होता गया उतना ही अक्लमन्द भी होता गया।

पर इस तरह शहर से बाहर रहने पर उसने कभी कोई चर्च या कोई भगवान की तस्वीर नहीं देखी थी और न ही वह भगवान या किसी सेन्ट[42] के बारे में जानता था।

एक बार उस किसान को किसी काम से कैटेनिया[43] जाना पड़ा तो उसने बच्चे से पूछा — "क्या तुम भी मेरे साथ चलोगे?"

बच्चा बोला — "जैसे आप कहें।"

और पिता किसान अपने बच्चे को साथ ले कर कैटेनिया चल दिया। जब वे कैटेनिया के कैथेड्रल[44] आये तो किसान बोला — "मुझे अपना काम करने जाना है तुम इस चर्च में चले जाओ और यहीं मेरा इन्तजार करना जब तक मैं अपना काम खत्म कर के आता हूँ।"

बच्चा उस कैथेड्रल में चला गया। वहाँ उस ने सुनहरी धागों से कढ़े कपड़े देखे, फूल देखे, मोमबत्तियाँ देखीं, तो वह बहुत ही खुश हो गया। उसने वैसी चीज़ें पहले कभी नहीं देखी थीं।

वह वहाँ की पूजा की जगह तक चलता चला गया तो वहाँ उसने क्रास देखा। वह पूजा की जगह पर जाने वाली सीढ़ियों पर घुटनों के बल बैठा और क्रास से कहा —

---

[42] Saint – Christians have many saints.

[43] Catania – the name of a place in Italy

[44] Cathedral – a cathedral is the seat, or a bench of Bishop in a Christian church.

“प्यारे दोस्त, उन्होंने तुमको इस क्रास के ऊपर कीलों से क्यों गाड़ा? क्या तुमने कोई जुर्म किया था?”

उस क्रास पर लगे सिर ने हॉ में अपना सिर हिलाया।

बच्चा बोला — “ओ मेरे दोस्त, अब तुम ऐसा काम कभी नहीं करना। देखो न उसकी वजह से तुम्हें क्या कुछ नहीं सहना पड़ा।”

और लौर्ड जीसस ने फिर हॉ में सिर हिलाया।

इस तरह से वह उस क्रास से काफी देर तक बात करता रहा जब तक वहॉ की सारी पूजाऐं खत्म नहीं हो गयीं।

अब उस कैथेड्रल को बन्द करने का समय आ गया था पर उसको बन्द करने वाले ने देखा कि वह बच्चा तो अभी भी सीढ़ियों पर घुटनों के बल बैठा था। उसने बच्चे से कहा — “उठो बेटा, अब कैथेड्रल बन्द करने का समय हो गया है।”

बच्चा बोला — “नहीं अभी नहीं, अभी तो मैं यहीं हूॅ क्योंकि अगर मैं यहॉ से चला गया तो यह बेचारा यहॉ अकेला रह जायेगा। पहले तो तुम लोगों ने उसको कीलों से जड़ा और अब तुम उसको यहॉ अकेला छोड़ कर जा रहे हो?

क्या यह सच नहीं है मेरे दोस्त कि अगर मैं तुम्हारे साथ यहॉ तुम्हारे पास बैठा रहूॅ तो तुम खुश होगे?”

और लौर्ड ने फिर हॉ में सिर हिला दिया।

बच्चे को जीसस से इस तरह से बात करते देख कर और जीसस को उसके जवाब देते देख कर तो वह कैथेड्रल बन्द करने वाला डर ही गया। वह वहाँ से भाग लिया।

वह भागा भागा पादरी के पास गया और जा कर उसको यह सब कुछ बताया तो पादरी बोला — "यह जरूर ही कोई पवित्र आदमी[45] है। तुम उसको चर्च में ही छोड़ दो और उसके लिये एक प्लेट मैकेरोनी[46] और थोड़ी सी शराब ले जाओ।

जब वह चर्च बन्द करने वाला उस बच्चे के लिये वहाँ मैकेरोनी और शराब ले कर गया तो बच्चे ने कहा — "तुम यह सब वहाँ रख दो। मैं अभी आता हूँ और खाता हूँ।"

फिर वह क्रास की तरफ घूमा और बोला — "मेरे दोस्त, तुम जरूर ही भूखे होगे। भगवान ही जानता है कि तुमने आखिरी बार खाना जाने कब खाया होगा। लो यह लो, थोड़ी सी मैकेरोनी खा लो।"

कह कर उसने अपनी प्लेट उठायी, पूजा की जगह पर चढ़ा और अपनी प्लेट में से काँटे से मैकेरोनी उठा उठा कर लौर्ड की तरफ बढ़ाने लगा।

लौर्ड ने अपना मुँह खोला और उसकी दी हुई मैकेरोनी खायी।

[45] Translated for the words "Holy Man".

[46] Macaroni – a very common Italian dish made of white flour and cheese and some kind of sauce – tomato or cheese. See its picture above.

कुछ कौर खिलाने के बाद बच्चा बोला — "दोस्त, खाना खा कर क्या तुमको प्यास नहीं लगी? लो यह थोड़ी सी शराब मेरे पास है यह भी पी लो।" कह कर उसने अपना शराब का गिलास लौर्ड के होठों से लगा दिया।

और लौर्ड ने अपना मुँह खोला और उसकी दी हुई शराब पी।

पर जैसे ही उसने लौर्ड को अपना खाना खिलाया और शराब पिलायी वह बच्चा नीचे गिर गया और मर गया। उसकी आत्मा स्वर्ग चली गयी और लौर्ड के गुण गाने लगी।

उधर वह पादरी पूजा की जगह के पीछे छिपा खड़ा यह सब देख रहा था। उसने देखा कि बच्चे ने लौर्ड को खाना खिलाने के बाद अपनी बाँहें एक दूसरे के ऊपर रखीं और उसी समय उसकी आत्मा उसका शरीर छोड़ कर स्वर्ग चली गयी।

पादरी बच्चे के शरीर की तरफ दौड़ा जो पूजा की जगह के सामने बेजान पड़ा हुआ था। उसने बच्चे को छू कर देखा तो वह तो वाकई मर चुका था। तुरन्त ही पादरी ने सारे शहर में यह घोषणा करवा दी कि एक सेन्ट कैथेड्रल में लेटा हुआ था।

उसने उस बच्चे के लिये एक सोने का ताबूत[47] बनवा दिया और उसके शरीर को उस ताबूत में रख दिया।

[47] Translated for the word "Coffin" in which Christians keep dead bodies to be buried. See its picture above.

यह घोषणा सुन कर शहर का हर आदमी उस सेन्ट को देखने के लिये कैथेड्रल की तरफ दौड़ गया और अन्दर आ कर उस ताबूत के आगे झुकने लगा। यहाँ तक कि वह किसान भी आया। उसने भी सोने के ताबूत में रखे उस छोटे से शरीर को देखा।

अरे यह तो उसी का बेटा था। वह बोला — "लौर्ड, तुमने ही उसको मुझे दिया था और अब तुमने ही उसे मुझसे ले लिया और उसे सेन्ट बना दिया।"

यह कह कर वह अपने घर वापस चला गया और हर चीज़ जो वह बच्चा उसके लिये कर गया था वह सफल हुई। वह किसान अब बहुत अमीर हो गया था।

बच्चे के जाने के बाद उसने बहुत सारा पैसा गरीबों में बाँट दिया और अब वह एक भक्त की ज़िन्दगी जीने लगा। जब वह मरा तो उसको भी स्वर्ग में जगह मिल गयी।

8 सत्यव्रत[48]

एक बार की बात है कि एक राजा था जिसके पास एक बकरी थी एक मेमना था एक भैंसा था और बैल था। वह उन सबको बहुत प्यार करता था इसलिये वह चाहता था कि वह इनको किन्हीं अच्छे हाथों की देखभाल में रखे।

उसका सबसे अधिक विश्वस्त आदमी एक किसान था जिसका नाम था सत्यव्रत क्योंकि उसने अपने जीवन में कभी झूठ नहीं बोला था। वह हमेशा ही सच बोलता था। राजा ने उसे बुलाया और वे सब जानवर उसको दे दिये।

फिर राजा ने उससे कहा — "तुम हर शनिवार को महल आओगे और मुझे इन सब जानवरों के बारे में बताओगे।" सो सत्यव्रत हर शनिवार के दिन पहाड़ों से नीचे आता राजा के सामने जाता अपनी टोपी उतारता और फिर उन दोनों के बीच ये बातें होतीं —

"गुड डे योर मैजेस्टी।"

"तुम्हें भी गुड डे। हमारी बकरी कैसी है?"

"सफेद और मूर्ख।"

"और मेमना?"

[48] Steward Truth. Tale No 187. A Folktale from Italy from its Catania area

"सफेद और सुन्दर।"

"भैंसा कैसा है?"

"मोटा और सुस्त।"

"और हमारा बैल कैसा है?"

"बहुत मोटा है और डरता भी नहीं है।"

राजा उसकी बातों पर विश्वास करता और यह बात करने के बाद सत्यव्रत अपने घर वापस पहाड़ों पर चला जाता। पर राजा के मन्त्रियों में से एक मन्त्री ऐसा था जो राजा के सत्यव्रत के ऊपर इतने विश्वास से जलता था।

एक दिन उसने राजा से पूछा — "क्या यह सत्यव्रत कभी झूठ नहीं बोलता? अबकी बार अगले शनिवार के लिये हम यह शर्त लगाते हैं कि वह झूठ बोलता है या नहीं।"

राजा बोला — "मैं अपना सिर दॉव पर लगाता हूॅ कि वह झूठ नहीं बोलेगा।"

सो दोनों ने अपनी अपनी जान की शर्त लगायी और अगले शनिवार का इन्तजार करने लगे। समय जल्दी ही बीत रहा था। अगला शनिवार आने में अब केवल तीन दिन ही बाकी थे।

वह मन्त्री जितना अधिक इस बारे में सोचता था उसका विश्वास अपने ऊपर से उतना ही उठता जाता था। वह ऐसा कोई तरीका सोच ही नहीं पा रहा था जिससे वह सत्यव्रत से झूठ बुलवा सके। वह सुबह सोचता वह शाम सोचता। उसको सोच में इतना डूबा देख

कर उसकी पत्नी ने पूछा — "क्या बात है आप इतने सोच में क्यों हैं।"

मन्त्री बोला — "तुम मुझे अकेला छोड़ दो। क्या तुमसे अपनी समस्या कहने से मेरी समस्या हल हो जायेगी?"

पर उसने इतने मीठे ढंग से पूछा कि उसके मुँह से उसकी समस्या निकलवा ही ली। वह बोली — "अच्छा यह बात है। मैं कुछ करती हूँ इसके बारे में।"

अगली सुबह मन्त्री की पत्नी ने अपने सबसे अच्छे कपड़े पहिने अपने सबसे कीमती गहने पहिने और अपनी भौंह पर हीरे का सितारा लगाया। फिर वह अपनी गाड़ी पर चढ़ी और पहाड़ की ओर चल दी जहाँ सत्यव्रत बकरी मेमना भैंसा और बैल चराया करता था।

जब वह वहाँ पहुँची तो वह गाड़ी से उतरी और अपने चारों ओर देखने लगी। इतनी सुन्दर स्त्री को सत्यव्रत ने पहले कभी नहीं देखा था सो उसको देख कर वह तो भौंचक रह गया। वह तेज़ी से उसके पास गया और उसके अनुरूप उसका स्वागत किया।

मन्त्री की पत्नी ने सत्यव्रत से कहा — "सत्यव्रत क्या तुम मेरा एक काम करोगे?"

सत्यव्रत बोला — "ओ कुलीन स्त्री। बस कहो क्या करना है। जो आपकी इच्छा होगी मैं वह करूँगा।"

मन्त्री की पत्नी बोली — "जैसा कि तुम देख रहे हो मुझे बच्चे की आशा है। मुझे गाय का भुना हुआ जिगर खाने की इच्छा हो रही है। अगर वह मुझे नहीं मिला तो मैं मर जाऊँगी।"

सत्यव्रत बोला — "ओ कुलीन स्त्री। इसके सिवा आप मुझसे कुछ भी माँग लें क्योंकि यह बैल राजा का है और यह उन्हें बहुत प्रिय है।"

मन्त्री की पत्नी रोने लगी — "ओह अब मैं क्या करूँ। अगर तुम मेरी यह इच्छा पूरी नहीं करोगे तो मैं सचमुच में मर जाऊँगी। सत्यव्रत मेरे ऊपर दया करो। राजा को इसके बारे में कुछ भी पता नहीं चलेगा। तुम उनसे कह देना कि बैल पहाड़ से नीचे गिर पड़ा।"

सत्यव्रत बोला — "नहीं मैं यह नहीं कह सकता और न मैं आपको इसका जिगर ही दे सकता हूँ।"

यह सुन कर कर स्त्री ने रोना धोना शुरू कर दिया। वह जमीन पर गिर पड़ी और उसने ऐसा दिखाया जैसे वह सचमुच में ही मरने वाली हो। वह स्त्री बहुत सुन्दर थी कि सत्यव्रत का दिल पिघल गया। उसने बैल मार दिया उसका जिगर निकाला उसे भूना और उस स्त्री को खाने के लिये दिया।

स्त्री ने उसे बड़ी खुशी से दो ही कौर में खा लिया। सत्यव्रत से विदा कहा और अपनी गाड़ी में बैठ कर अपने घर चली गयी। बेचारा सत्यव्रत वहाँ शर्म से सिर झुकाये अकेला खड़ा रह गया।

"अब जब अगले शनिवार को राजा साहब मुझसे पूछेंगे कि "बैल कैसा है?" तब मैं राजा से क्या कहूँगा। अब मैं उनसे यह कभी नहीं कह सकूँगा "काफी मोटा है और निडर भी।"

उसने अपना डंडा उठाया और उसे जमीन में गाड़ दिया। उस पर अपनी चादर टॉग दी। फिर वह कुछ कदम पीछे हटा फिर कुछ कदम आगे बढ़ा डंडे को सिर झुकाया और उसके सामने बोला —

"गुड डे योर मैजेस्टी।"

फिर वह राजा की तरह से बोला — "गुड डे सत्यव्रत। हमारी बकरी कैसी है?"

"सफेद है और मूर्ख है।"

"और मेमना कैसा है?"

"सफेद है और आलसी है।"

"और बैल कैसा है?"

यहॉ वह कुछ बोल नहीं सका। फिर उसने डंडे से हकला कर कहना शुरू किया — "योर मैजेस्टी... मैं उसको चराने ले कर गया था... और वह पहाड़ की चोटी से नीचे गिर पड़ा... और उसके शरीर की सारी हड्डियॉ टूट गयीं... और वह मर गया।" फिर वह यकायक चुप हो गया।

बाद में उसने सोचा कि वह राजा से यह झूठ नहीं कह सकेगा। उसने अपना डंडा फिर एक दूसरी जगह गाड़ा उस पर अपनी चादर लपेटी और उस नाटक को फिर से दोहराया।

वह झुका और इस सवाल पर कि "बैल कैसा है।" उसने फिर झूठ बोला "योर मैजेस्टी। वह चोरी हो गया। उसे चोर ले गये।" यह झूठ भी उसकी कुछ समझ में नहीं आया और वह घर जा कर सोने चला गया पर उसकी पलक तक नहीं झपी।

सुबह को उस दिन शनिवार था वह राजमहल की ओर चल दिया। उसका सिर झुका हुआ था और वह अभी भी यही सोचता जा रहा था कि वह राजा से उसके बैल के बारे में क्या कहेगा।

हर बार जब भी वह किसी पेड़ के सामने आता तो वह उसके सामने सिर झुकाता और कहता "योर मैजेस्टी गुड डे।" फिर वह अपनी बातचीत दोहराता पर बैल के जवाब में उसे कोई सन्तोषजनक जवाब नहीं मिलता।

इसी तरह वह हर पेड़ से बात करता चला जा रहा था कि एक पेड़ के सामने आ कर उसे इस सवाल का जवाब मिल गया। उसने अपने आपसे कहा "यह जवाब ठीक है।" जितना अधिक वह जवाब उसने दोहराया वह जवाब उसे उतना ही अधिक अच्छा लगता गया।

महल में राजा और उसके सब दरबारी दरबार में बैठे इन्तजार कर रहे थे कि देखें आज शर्त में कौन जीतता है। सत्यव्रत दरबार में पहुँचा अपना सिर झुकाया और बोला — "गुड डे योर मैजेस्टी।"

"गुड डे सत्यव्रत। हमारी बकरी कैसी है?"

"सफेद है और मूर्ख है।"

"और मेमना कैसा है?"

"सफेद है और आलसी है।"

"और बैल कैसा है?"

सत्यव्रत बोला — "योर मैजेस्टी। ऊँचे समाज की एक स्त्री आयी अच्छी मोटी सी सुन्दर सी कि मैं तो उससे प्रेम ही करने लगा। और बैल को तो उससे इतना प्रेम हुआ कि वह तो उसके प्रेम में मर ही गया।"

इसके साथ ही सत्यव्रत ने फिर अपना सिर झुकाया और आगे बोला — "अब योर मैजेस्टी अगर आप मुझे मारना चाहते हैं तो मुझे मार दें पर मैंने सच ही बोला है।"

हालाँकि राजा को सत्यव्रत की बात सुन कर बहुत दुख हुआ कि उसका बैल मार गया पर सत्यव्रत का सच सुन कर बहुत खुशी हुई। वह अपने मन्त्री से शर्त जीत गया था। उसने सत्यव्रत को बहुत सारा धन भेंट में दिया।

सारा दरबार तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा सिवाय मन्त्री के जिसकी जलन ने उसकी जान ले ली।
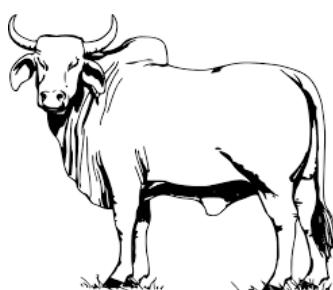
9 छिछोरा राजा[49]

एक बार की बात है कि एक राजा था जो अपने आपको बहुत सुन्दर समझता था। उसके पास एक शीशा था जिसके सामने वह अक्सर जा कर कहता था —

शीशे ओ शीशे खुश और बढ़िया
मैं तुझसे विनती करता हूँ कि मुझे कोई इशारा कर
अगर कोई मुझसे भी सुन्दर है तो

पहले तो उसकी पत्नी ने उसकी इस बात पर कोई ध्यान नहीं दिया पर बाद में वह अपने पति की इस शान को सहन नहीं कर सकी। अगली बार उसने जब यह शीशे से कहा तो वह बोली —

चुप ओ राजा और अब मेरे विचार सुन
हो सकता है कि कोई तुमसे भी अधिक सुन्दर है

राजा यह सुन कर उछल पड़ा और बोला — "मैं तुम्हें तीन दिन का समय देता हूँ। या तो तुम मुझे यह बताओ कि मुझसे सुन्दर कौन है नहीं तो तुम्हारा सिर काट दिया जायेगा।"

रानी तो तुरन्त ही यह कह कर पछतायी कि "यह मैंने क्या कह दिया।" पर अब तो देर हो चुकी थी। उसे मारने वाले की कुल्हाड़ी अपनी गर्दन पर साफ दिखायी देने लगी थी। उसको मरने का डर

[49] The Foppish King. Tale No 188. A folktale from Italy from its

लगने लगा था सो वह अपने कमरे में चली गयी और वहाँ वह दो दिन तक लगातार रोती रही।

तीसरे दिन उसने आखिरी बार सूरज की धूप का आनन्द लेने के लिये अपने कमरे की खिड़की खोली तो देखा कि बाहर सड़क पर एक बुढ़िया खड़ी थी जैसे वह उसके खिड़की खोलने का इन्तजार ही कर रही हो।

वह बोली — "रानी जी कुछ दे दीजिये।"

रानी बोली — "ओ भली बुढ़िया। तू मुझे अकेला छोड़ दे मुझे अपनी समस्याऐं हीं बहुत हैं।"

बुढ़िया ने नीची आवाज में कहा — "मुझे सब मालूम है। मैं आपकी सहायता कर सकती हूँ।"

रानी ने उसकी ओर देखा और उसे अन्दर आने के लिये कहा। बुढ़िया महल के अन्दर आयी तो रानी ने उससे पूछा "तुम क्या जानती हो?"

"मुझे मालूम कि राजा साहब ने आपसे क्या कहा।"

"तो क्या मेरे पास इससे बाहर आने का कोई रास्ता है?"

"हॉ हॉ है क्यों नहीं।"

तो मुझे बताओ मुझसे तुम जो मॉगोगी मैं तुम्हें वही दूँगी।"

"मुझे आपसे कुछ नहीं चाहिये। बस मेरी बात सुनिये। दोपहर को आप जब राजा साहब के साथ खाना खाने जायेंगी तो उनसे अपने ऊपर एक उपकार करने के लिये कहियेगा। वह आपसे पूछेंगे

कि "क्या अपनी ज़िन्दगी बचाने का?" आप उनसे कहियेगा "नहीं।"

इसके जवाब में वह कहेंगे "तो ठीक है। तुम पर उपकार किया। बोलो मैं तुम्हारे लिये क्या करूँ।"

तो आप उनसे कहियेगा कि फ़्रांस के राजा का बेटा सबसे सुन्दर है जो सात परदों में रहता है।"

रानी ने बुढ़िया की सलाह मानी तो राजा और उसके बीच की बातचीत वैसे ही हुई जैसी कि बुढ़िया ने बतायी थी। यह सुन कर राजा ने पलक भी नहीं झपकी और रानी से कहा कि "अगर फ्रांस के राजा का बेटा मुझसे अधिक सुन्दर हुआ तो फिर मेरे साथ तुम जो चाहो वह कर सकती हो।"

तीन दिन बाद राजा अपने कुछ सिपाही ले कर फ्रांस के लिये चल दिया। फ्रांस पहुँच कर वह वहाँ के राजा से मिला और उससे उसके बेटे से मिलने की विनती की।

फ्रांस के राजा बोले — "चुप। अभी तो मेरा बेटा सो रहा है। पर फिर भी आप मेरे साथ आयें।"

वह उसे अपने बेटे के कमरे में ले गया। उसने पहला परदा हटाया तो उन्होंने एक चमक आती देखी। उसने दूसरा परदा हटाया तो वह चमक और गहरी हो गयी। उसने तीसरा फिर चौथा फिर पाँचवाँ फिर छठा परदा खोला तो हर बार चमक गहरी होती गयी।

और जब आखिरी परदे हटाये गये तो राजकुमार सिंहासन पर बैठा देखा गया। उसके हाथ में राजदंड था और पास में तलवार रखी हुई थी। उसमें से इतनी चमक निकल रही थी कि राजा तो बेहोश हो कर ही नीचे गिर पड़ा।

सिरका और नमक सुँघा कर किसी तरह से उसे होश में लाया गया। रानी उसको अपने कमरे में ले गयी। होश में आने के बाद भी उसको सामान्य होने में तीन दिन लगे तब तक वह वहीं रहा।

राजकुमार ने अपने पिता से कहा — "इससे पहले कि राजा साहब यहाँ से जायें मैं उनसे बात करना चाहता हूँ।"

सो राजा को राजकुमार के पास लाया गया। इस बार उसमें ज़्यादा ताकत थी सो राजकुमार को देख कर वह बेहोश नहीं हुआ। उन्होंने आपस में बात करनी शुरू कीं तो राजकुमार ने पूछा — "क्या आप मुझे अपने घर पर देखना चाहेंगे?"

राजा बोला — "अगर यह सम्भव है तो।"

राजकुमार बोला — "अगर आपको मुझे अपने घर पर देखने की इच्छा हो तो यह लीजिये ये तीन सोने की गेंदें लीजिये। जब भी आपकी मुझे वहाँ देखने की इच्छा हो तो इन तीनों गेंदों को एक सोने के बर्तन में असली साफ दूध भर कर उसमें डाल दीजियेगा। मैं वहाँ पर ऐसे ही प्रगट हो जाऊँगा जैसा कि आप मुझे यहाँ इस महल में देख रहे हैं।"

सोने की गेंदें ले कर राजा वहाँ से चला आया और अपनी पत्नी से बोला — "अब तुम मेरे साथ जैसा चाहो वैसा कर सकती हो।"

रानी बोली — "भगवान आपको सदा सुखी रखें।"

तब राजा ने उसे पूरा किस्सा बताया और उसे सोने की तीनों गेंदें भी दिखायीं। पर राजकुमार की चमक का असर उसके ऊपर इतना पड़ा कि वह उसे सह नहीं सका और कुछ दिन बाद ही वह मर गया।

राजा को दफ़न करने के बाद रानी ने अपनी सबसे अधिक विश्वस्त दासी को बुलाया और उससे तीन गैलन असली और साफ दूध लाने के लिये कहा और फिर उसे अकेला छोड़ देने के लिये कहा।

उसने बर्तन में वह दूध भरा और उसमें वे तीनों गेंदें डाल दीं। तुरन्त ही पहले सतह पर तलवार आयी फिर राजदंड आया और फिर राजकुमार आ गया। दोनों ने कुछ देर तक बातें कीं उसके बाद राजकुमार ने दूध में डुबकी लगा दी और चला गया।

अगली सुबह रानी ने फिर से ताजा दूध मँगवाया और फिर से राजकुमार को देखने की इच्छा की। ऐसा वह हर दिन करती रही। दासी ऐसा करते करते थक गयी तो उसने कहा कि लगता है कि यहाँ कोई टोटका हो रहा है और कुछ बुरी शरारत की जा रही है।

इसलिये रानी ने जब अगले दिन दासी से दूध मँगवाया तो उसने क्रिस्टल का एक गिलास तोड़ कर और ओखली में उसका चूरा कर

के उसे दूध में मिला दिया। जब रानी ने अपनी तीनों गेंदें उस दूध में डालीं तो पहले राजदंड उसकी सतह पर आया पर वह खून में लिपटा हुआ था। उसके बाद राजकुमार निकला पर वह भी ऊपर से ले कर नीचे तक खून में लिपटा हुआ था।

ऐसा इसलिये हुआ था क्योंकि जब वह दूध से बाहर आ रहा था तो उसको शीशे के चूरे में से हो कर ऊपर आना पड़ा। उस चूरे से उसकी नसें कट गयी थीं। वह बाहर आ कर बोला — "आह। तुमने मुझे धोखा दिया।"

रानी बोली — "नहीं। यह मेरा दोष नहीं है। मुझे माफ करो।" पर तब तक तो वह सोने के बर्तन में पहले ही गायब हो गया था।

फ्रांस के शाही महल में राजकुमार ऊपर से ले कर नीचे तक घावों से भरा हुआ पाया गया। शाही डाक्टर उसका इलाज भी नहीं कर सके। तब राजा ने एक आदेश जारी किया कि जो कोई भी उसके बेटे को ठीक करेगा उसको इनाम दिया जायेगा।

इस बीच सारा शहर दुख मनाने लगा और घंटे भी लगातार बजने लगे।

उधर रानी ने जब से राजकुमार को घायल देखा था उसको एक पल का चैन नहीं था। उसने एक गड़रिये आदमी का रूप रखा और फ्रांस के लिये चल दी। पहली रात उसे एक जंगल में हुई तो वह एक पेड़ के नीचे बैठ गयी और अपनी प्रार्थना करने लगी।

पास में एक गोल जगह साफ पड़ी हुई थी वहाँ आधी रात को नरक के शैतान अपनी मीटिंग किया करते थे। उनका सरदार उनके बीच में बैठा करता था। फिर सारे शैतान अपनी अपनी शैतानियाँ अपने सरदार को बताया करते थे।

ऐसा ही उस दिन भी हुआ तो सब शैतानों के बोलने के बाद एक लँगड़े शैतान की बारी आयी। हर एक बोला — "और तुमने क्या किया ओ लँगड़े। तुम तो हमेशा ही सब कुछ गड़बड़ ही करते हो।"

"पर इस बार मैंने वैसा कुछ नहीं किया। मैंने इतने साल तक काम करने के बाद मैंने अबकी बार बहुत अच्छा काम किया है।" और फिर उसके बाद उसने राजा राजकुमार और रानी का किस्सा उन्हें बता दिया कि किस तरह से उसने दासी का दिमाग बदला।

वह आगे बोला — "अब राजकुमार की ज़िन्दगी के केवल तीन दिन और बचे हैं फिर हम उसको यहाँ अपने साथ ले आयेंगे।"

शैतानों के सरदार ने उससे पूछा — "पर क्या उसका कोई इलाज नहीं है?"

"है तो मगर मैं उसे बताऊँगा नहीं।"

"तुम हमें बता सकते हो।"

"नहीं। अगर किसी ने छिप कर सुन लिया तो।"

"तुम बेवकूफ हो। क्या यहाँ कोई उसे सुनने के लिये छिपा होगा। अगर वह छिपा भी होगा तो क्या वह डर के मारे मर नहीं जायेगा।"

"ठीक है तो सुनो। किसी को मोनेस्टरी के जंगल में जाना होगा। वहाँ से दो थैले भर कर शीशे की घास लानी होगी। फिर उसको ओखली में अच्छी तरह कूट कर उसका रस एक गिलास में निकाल लो और उसे उसके घावों पर सिर से पैर तक लगा दो। वह फिर से पहले की तरह ठीक हो जायेगा।"

यह सुन कर रानी वहाँ सुबह तक का इन्तजार नहीं कर सकी। वह तुरन्त ही उठी और मौनेस्टरी के जंगल की ओर शीशे की घास लाने के लिये चल दी।

काफी देर चलने के बाद वह मौनेस्टरी पहुँची जहाँ पहुँच कर उसने संतों को बुलाया। संतों ने उसको बिना दरवाजा खोले हुए ही उस पर जादू डालने की कोशिश की तो वह बोली — "मेरे ऊपर जादू मत डालो। मेरा बाप्टिज़्म हो चुका है।"

यह सुन कर उन्होंने दरवाजा खोल दिया। उसने उनसे विनती की कि वे उसे दो थैले भर कर शीशे की घास दे दें। संतों ने उसके लिये वह घास तोड़ दी। अगले दिन वह राजकुमार के शहर पहुँची जहाँ सारे घर दुख में डूबे हुए थे।

गड़रिये के वेश में वह महल के चौकीदार के पास पहुँची पर उसने उसे अन्दर जाने से मना कर दिया। इत्तफाक से राजा ने उसी समय बाहर देखा और गड़रिये से पूछा कि उसे क्या चाहिये।

उसने कहा — "योर मैजेस्टी। आप सारे डाक्टरों को यहाँ से भेज दीजिये और मुझे राजकुमार के साथ अकेला छोड़ दीजिये। कल तक राजकुमार ठीक हो जायेंगे।" राजा को यह सुन कर अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ पर जब गड़रिये ने अपनी बात दोहरायी तो उसने उसे राजकुमार के पास अकेला छोड़ दिया।

गड़रिये ने एक ओखली मँगवायी उसमें घास कूटी एक गिलास में उसका रस निकाला और राजकुमार के घावों पर लगा दिया। उसके घाव एक एक कर के बन्द होते चले गये।

जब राजकुमार के सारे घाव भर गये और राजकुमार पहले जैसा हो गया तो गड़रिये ने राजा को बुलवाया और उनको उनका बेटा दिखाया। उन्होंने देखा कि उनका बेटा तो पहले से भी अधिक सुन्दर हो गया था।

राजा गड़रिये को बहुत सारा खजाना देना चाहता था पर गड़रिये ने कुछ भी लेने से मना कर दिया और वहाँ से जाने की जिद की। राजकुमार ने तब उसे एक अँगूठी देते हुए कहा कि "याद के लिये कम से कम यह अँगूठी तो लेते जाओ।"

गड़रिये ने वह अँगूठी ले ली और तुरन्त ही अपने घर लौट गया। अपने महल पहुँचते ही रानी ने अपना रूप बदला और बजाय

दासी को भेजने के उसने खुद ही सोने का बर्तन लिया असली साफ दूध लिया और उसमें वे तीनों सोने की गेंदें डाल दीं।

तुरन्त ही उसकी सतह पर राजकुमार प्रगट हुआ पर उसका राजदंड रानी की ओर था। यह देख कर रानी राजकुमार के पैरों पर गिर कर चिल्लायी — "मैंने तुम्हें धोखा नहीं दिया बल्कि मैंने तो तुम्हारी जान बचायी है। यह देखो यह ॲगूठी यह तुमने ही मुझे दी है।"

पहले तो राजकुमार इधर उधर देखता रहा पर फिर जब रानी ने पूरी कहानी बतायी तब कहीं राजकुमार ने विश्वास किया। उन दोनों में फिर प्यार पैदा हो गया। फ्रांस के राजा की इजाज़त से उन्होंने आपस में शादी कर ली। दासी को मार दिया गया।

उनकी ज़िन्दगी खुश थी और लम्बी थी
पर हम गरीब तो दूसरा गाना गाने लग जायेंगे

10 सींगों वाली राजकुमारी[50]

ऐसा कहा जाता है कि एक बार एक पिता के तीन बेटे थे और उसके पास पैसे के नाम पर केवल एक घर था। वह घर भी गरीबी की वजह से इस समझौते के साथ बेच दिया गया था कि उस घर की एक दीवार के बीच में लगी तीन ईंटें उस घर को बेचने के बाद भी उसी आदमी की रहेंगी।

जब वह आदमी मरने लगा तो उसने अपनी वसीयत करने की सोची। उसके पड़ोसियों ने पूछा — "पर तुम अपनी वसीयत में दोगे क्या? तुम्हारे पास तो कुछ है ही नहीं।" उसके बेटे भी इस छोटे से काम के लिये नोटरी[51] को नहीं बुलाना चाहते थे।

पर नोटरी आया और मरते हुए उस आदमी ने उसको अपनी वसीयत बतायी — "अपने सबसे बड़े बेटे को मैं अपनी पहली ईंट देता हूँ। अपने दूसरे बेटे को मैं अपनी दूसरी ईंट देता हूँ और अपने सबसे छोटे बेटे को मैं अपनी तीसरी ईंट देता हूँ।"

और उसके बाद वह आदमी मर गया। पिता के मरने के बाद ही वे तीनों गरीब बेटे जान पाये कि भूख और कमी क्या होती है।

[50] The Princess With the Horns. Tale No 189. A folktale from Italy from its Acireale area.

[51] A notary public of the common law is a public officer constituted by law to serve the public in non-contentious matters usually concerned with estates, deeds, powers-of-attorney, and foreign and international business.

पिता के मरने के बाद सबसे बड़ा बेटा बोला — "अब मैं इस शहर में नहीं रह सकता। मैं अपने पिता की दी हुई ईंट इस मकान की दीवार में से निकालता हूँ और उसको साथ ले कर मैं यहाँ से चलता हूँ।"

जब वह मकान की दीवार में से अपनी ईंट निकालने गया तो उस स्त्री ने जिसने उसके पिता का यह मकान खरीदा था उससे बहुत कहा कि अगर वह ईंट वहीं छोड़ दे जहाँ वह थी तो वह उसके बदले में उसको कुछ दे देगी क्योंकि इससे उसकी कम से कम दीवार खराब नहीं होगी।

लड़का बोला — "नहीं मैम, मेरे पिता ने मेरे लिये वही एक ईंट छोड़ी है और मैं उसको यहाँ नहीं छोड़ सकता।" कह कर उसने वह ईंट दीवार में से निकाल ली और उसको ले कर शहर की तरफ चल दिया। रास्ते में उसने उसे तोड़ा तो उसमें उसको एक बहुत ही छोटा सा बटुआ मिला।

रास्ते में उसको भूख लगी तो उसने अपना वह बटुआ निकाला और बोला — "ओ बटुए, मुझे दो पैनी दो ताकि खाने के लिये मैं कुछ डबल रोटी खरीद सकूँ।" यह कह कर उसने अपना बटुआ खोला तो उसमें दो पैनी थीं।

यह देख कर उस लड़के ने सोचा कि वह उस बटुए से कुछ ज़्यादा पैसे माँगने की कोशिश कर के देखे।

सो उसने कहा — "ओ बटुए, मुझे सौ क्राउन[52] दो।" और बटुए ने उसको सौ क्राउन दे दिये। इस तरह उसने बटुए से जितना पैसा माँगा उसने उसको उतना ही पैसा दे दिया।

कुछ ही समय में उसके पास इतना पैसा हो गया कि उसने वहाँ के राजा के महल के सामने अपना एक महल बनवा लिया। उसने अपने महल की खिड़की से बाहर झाँका तो उसे दिखायी दिया राजा का महल और उस महल की खिड़की पर बैठी हुई राजकुमारी।

उसने राजकुमारी से बात की और वे दोनों अच्छे दोस्त बन गये और अब वह राजा के महल में कभी भी जा सकता था।

यह देख कर कि वह लड़का उसके अपने पिता से कहीं ज़्यादा अमीर था एक दिन राजकुमारी ने उससे कहा — "अगर तुम मुझे यह बता दो कि यह इतना सारा पैसा तुम्हारे पास कहाँ से आया तो मैं तुमसे शादी कर लूँगी।"

वह लड़का उस बटुए की वजह से अमीर तो हो गया था पर वह था बहुत ही बेवकूफ। उसने राजकुमारी का विश्वास कर लिया और उसको अपना बटुआ दिखा दिया।

राजकुमारी ने उसके बटुए में कोई खास रुचि न दिखाने का बहाना किया और उसकी शराब में बेहोशी की दवा मिला कर उसका वह जादू का बटुआ एक वैसे ही नकली बटुए से बदल दिया।

[52] Crown – the then currency in European countries

जब उस बेचारे लड़के को इस बात का पता चला तो उसको अपना काम चलाने के लिये जो कुछ भी उसके पास था वह सब कुछ बेच देना पड़ा। और अब वह फिर से उतना ही गरीब हो गया था जितना कि उस समय था जब वह अपने घर से निकला था।

इस बीच उसको पता चला कि उसका बीच वाला भाई बहुत अमीर हो गया था। उसने उसको ढूँढा और उससे मिल कर उसको गले लगाया। फिर उसने उससे पूछा कि वह इतना अमीर कैसे हो गया।

उसके भाई ने बताया कि जब उसके पास पैसे नहीं रहे तो उसने भी उस मकान की दीवार से अपने हिस्से की ईंट हटा ली और उसको तोड़ा तो उसमें से उसको एक शाल[53] मिला। उस शाल को ओढ़ते ही वह दूसरों की निगाह से ओझल हो जाता था।

सो जब वह भूखों मर रहा था तब वह शाल ओढ़ कर गायब हो गया और एक बेकरी की दूकान में घुस कर एक डबल रोटी चुरा लाया। उस शाल को ओढ़े रहने की वजह से कोई उसको देख भी नहीं सका।

उसके बाद उसने कई चाँदी का सामान बेचने वालों को, एक सिलाई का सामान बेचने वाले को, राजा का सन्देश ले जाने वालों

[53] Translated for the word "Cloak". See the picture above.

को लूटा और तब तक लूटता रहा जब तक कि वह काफी अमीर नहीं हो गया।

यह सुन कर बड़े भाई ने कहा — "अगर ऐसा है तो क्या तुम मेरा एक काम करोगे? मुझे अपना शाल एक खास काम के लिये उधार दोगे? वह काम कर के मैं तुमको तुम्हारा शाल तुम्हें वापस कर दूँगा।"

अपने बड़े भाई से प्यार की वजह से उसने वह शाल उसको उधार दे दिया। बड़े भाई ने उस शाल को ओढ़ा और घर छोड़ कर चल दिया। अब उसे कोई नहीं देख सकता था।

तुरन्त ही उसने अपने दाँये और बाँये दोनों हाथों से वह हर चीज़ उठानी शुरू कर दी जो भी उसके सामने आयी और जो उसको अच्छी लगी। जब उसके पास काफी सारा सामान हो गया तो वह राजा के महल आया।

उसको और ज़्यादा अमीर हो कर वापस आया देख कर राजकुमारी ने पूछा — "अरे इतने दिनों तक तुम कहाँ थे और इतनी सारी दौलत तुम्हारे पास कहाँ से आयी? तुम मुझे बताओ तो बस फिर हम तुरन्त ही शादी कर लेते हैं।"

वह लड़का बेवकूफ तो था ही पर लगता है कि कुछ ज़रा ज़्यादा ही बेवकूफ था। क्योंकि उसको पहली बार अपना बटुआ और अपनी इतनी सारी धन दौलत खो कर भी अक्ल नहीं आयी सो उसने फिर से उस राजकुमारी को सब कुछ बता दिया। और उसने

उसको वह शाल दिखा भी दिया जो वह अपने भाई से ले कर आया था।

राजकुमारी ने पहले की तरह पहले तो उस शाल में कोई रुचि नहीं दिखायी पर फिर उसकी शराब में बेहोशी की दवा मिला कर उसको बेहोश कर दिया और उसका वह जादुई शाल एक दूसरे वैसे ही नकली शाल से बदल दिया।

जब वह उठा तो उसने अपना शाल ओढ़ा और यह सोचते हुए कि अब तो उसे कोई देख नहीं रहा वह आराम से महल में अपना बटुआ ढूँढने के लिये इधर उधर घूमने लगा। पर चौकीदारों ने उसको देख लिया और चोर समझ कर उसको बहुत मारा और महल से बाहर फेंक दिया।

अब आगे क्या करना है यह सोचते हुए वह बड़ा भाई अपने घर लौट आया और वहाँ वह जो कुछ कर सकता था करने लगा। वहाँ पहुँच कर उसको पता लगा कि उसका सबसे छोटा भाई भी बहुत अमीर हो गया है और वह एक बड़े महल में रह रहा है। और उसके पास भी बहुत सारे नौकर चाकर हैं।

उसने सोचा अब मैं अपने सबसे छोटे भाई के पास जाता हूँ और उससे सहायता माँगता हूँ। मुझे यकीन है कि वह मुझे खाली हाथ वापस नहीं भेजेगा। यह सोच कर वह उसके पास गया।

उधर जब बहुत दिनों तक सबसे छोटे भाई को अपने सबसे बड़े भाई की खबर नहीं मिली तो उसने सोचा कि शायद वह मर गया

होगा पर जब उसने उसको देखा तो वह बहुत खुश हुआ और उसने उसका बड़े उत्साह से स्वागत किया।

उसने उसको यह भी बताया कि वह इतना अमीर कैसे हो गया। उसने उससे कहा — "अब तुम यह सुनो जो मैं कह रहा हूँ। यह तो तुमको मालूम ही है कि पिता जी हमारे लिये तीन ईंटें छोड़ गये थे और मेरे हिस्से में आखिरी वाली ईंट आयी थी।

एक बार जब मुझे पैसों की बहुत जरूरत हुई तो मैंने उस ईंट को इस इरादे से वहाँ से निकाला कि मैं उसको बेच कर कुछ पैसे कमा लूँगा पर जैसे ही मैंने उसको वहाँ से निकाला तो मुझे उस ईंट के पीछे एक सींग दिखायी दिया।

उस सींग को देखते ही मुझे उसको बजाने की इच्छा हुई। मैंने उसे बजाया तो उसमें से बहुत सारे सिपाही निकल पड़े और मुझसे बोले — "जनरल, हमारे लिये क्या हुक्म है?"

यह सुन कर वह सींग मैंने अपने होठों से हटाया तो वे सब सिपाही गायब हो गये। इससे मेरी समझ में आ गया कि मुझे क्या करना चाहिये। मैं अपने उन सिपाहियों के साथ कई शहरों में गया और वहाँ जा कर मैंने कई लड़ाइयाँ लड़ीं और वहाँ की जनता से बहुत सारे पैसे ऐंठे।

जब मैंने देखा कि मेरे पास मेरी ज़िन्दगी के लिये काफी पैसा हो गया तो मैं यहाँ वापस आ गया और अपना यह महल बनवा कर यहाँ आराम से रहने लगा।"

बड़े भाई ने जब यह सुना तो उसने उससे वह सींग उसको देने की प्रार्थना की और कहा कि जैसे ही उसका काम हो जायेगा वह उसको उसी समय वापस कर देगा। छोटे भाई ने भी उसको वह सींग दे दिया और वह बड़ा भाई उस सींग को ले कर वहॉ से चला गया।

वह उस सींग को ले कर एक दूसरे ऐसे शहर में पहुॅचा जहॉ बहुत अमीर लोग रहते थे। वहॉ जा कर उसने अपना सींग बजाया तो उसने देखा कि उसमें से तो बहुत सारे सिपाही निकल रहे थे।

जब वह सारा मैदान सिपाहियों से भर गया तब उसने उनको सारा शहर लूटने के लिये कहा। उन सिपाहियों ने तुरन्त ही शहर वालों से उनका सोना चॉदी और बहुत सारे तरीके का खजाना लूट लिया।

वह खजाना ले कर वह फिर से उसी राजकुमारी के पास जा पहुॅचा। हालॉकि वह उस राजकुमारी के जाल में दो बार फॅस चुका था पर अपनी बेवकूफी से एक बार फिर वह उसके जाल में फॅसने पहुॅच गया।

उसने उसको फिर से अपनी अमीरी का भेद बता दिया। राजकुमारी ने एक बार फिर उसकी शराब में बेहोशी की दवा मिला कर उसको बेहोश कर दिया और उसके जादुई सींग को एक दूसरे सादे सींग से बदल दिया।

जब वह खाना खा कर उठा तो राजा और रानी ने उसको इस लिये महल से निकाल दिया क्योंकि वह पिये हुए था। बड़े बेइज़्ज़त हो कर उसने अपनी बची हुई दौलत ली और एक दूसरे शहर को चल दिया।

चलते चलते वह एक जंगल से गुजरा जहाँ उसको बारह डाकू मिल गये। उसने इस उम्मीद में अपना सींग बजाया कि उसमें से सिपाही निकल आयेंगे और वे उसकी उन डाकुओं से रक्षा करेंगे पर वह सींग तो नकली था सो उससे कुछ भी नहीं हुआ।

डाकू उसका सारा सामान ले गये और उसको बहुत मार पीट कर अधमरा कर के वहीं छोड़ गये। पर उसका सींग उसके मुँह में ही रहा और वह उसे बजाता ही रहा। काफी देर के बाद उसको समझ में आया कि उसका वह सींग तो नकली था।

फिर उसको लगा कि उसने तो अपने दोनों भाइयों को भी धोखा दिया क्योंकि उसने दोनों से उनकी चीज़ें ले लीं और खो दीं।

यह सोच कर उसको बहुत बुरा लगा और उसने एक पहाड़ की चोटी से कूद कर अपनी जान देने की सोची। सो उसने एक पहाड़ की चोटी ढूँढी और उसके काई[54] वाले किनारे पर जा कर वहाँ से नीचे कूद गया।

[54] Translated for the word "Moss"

पर जाको राखे सॉइयॉ मार सके ना कोय।

इत्तफाक की बात कि उसके गिरने के रास्ते के बीच में एक अंजीर[55] का पेड़ उगा हुआ था और बाहर की तरफ को निकला हुआ था। गिरते समय वह उस पेड़ की शाखाओं में अटक गया और उससे लटक गया।

उस पेड़ पर बहुत सारी काली अंजीरें लगी हुई थीं। उसने सोचा कि मैं ये अंजीरें खा लेता हूॅ तो कम से कम भर पेट खाना खा कर ही मरूॅगा। सो वह वहॉ लटका लटका अंजीरें तोड़ तोड़ कर खाने लगा।

उसने दस अंजीर खायीं, फिर बीस खायीं, फिर तीस खायीं। अंजीर खाते खाते उसको लगा कि उसके सिर पर सींग उग रहे हैं। जितनी वह अंजीर खाता जा रहा था उसके शरीर पर उतने ही सींग उगते जा रहे थे।

पहले वे उसके सिर पर उगे, फिर चेहरे पर, फिर नाक पर और फिर उसके सारे शरीर पर उग आये। अब उसके शरीर पर उस अंजीर के पेड़ की शाखों से भी ज़्यादा शाखें थीं जो उसको उस पेड़ से गिरने से बचाये हुए थीं।

यह सब देख कर तो अब उसको और ज़्यादा लगने लगा कि उसको मर ही जाना चाहिये। सो उसने उस अंजीर के पेड़ को छोड़ दिया और वह अपने सींगों के साथ फिर नीचे गिरने लगा।

---

[55] Translated for the word “Fig”. See its picture above.

पर उसकी किस्मत तो देखो कि रास्ते में एक और अंजीर का पेड़ लगा हुआ था वह उसमें जा कर अटक गया। इस पेड़ में पहले पेड़ के मुकाबले में और ज़्यादा अंजीरें लगी हुई थीं। और यह पेड़ काली अंजीरों का नहीं बल्कि सफेद अंजीरों का पेड़ था।

उसने सोचा कि अब इससे ज़्यादा और कितने सींग मेरे ऊपर उगेंगे क्योंकि अब तो मेरे शरीर पर सींग उगने की कहीं जगह ही नहीं रह गयी है सो मैं ये सफेद अंजीर और खा लेता हूँ तभी मरूँगा। यह सोच कर उसने उस पेड़ की सफेद अंजीरें खानी शुरू कर दीं।

उसने मुश्किल से तीन अंजीर खायी होंगी कि उसको लगा कि उसके तीन सींग कम हो गये हैं। यह देख कर वह वे अंजीरें खाता रहा तो उसने देखा कि हर एक अंजीर खाने के बाद उसका एक सींग कम हो जाता था।

वह इतनी अंजीर खा गया जिससे उसके शरीर पर उगे सारे सींग गायब हो गये। और अब उसकी खाल भी पहले से भी ज़्यादा साफ सुन्दर और चिकनी हो गयी थी।

जब उसके सारे सींग गायब हो गये तो तो वह उस सफेद अंजीर के पेड़ से नीचे उतर आया और फिर से पहाड़ की चोटी पर चढ़ गया।

वह फिर उस काली अंजीर के पेड़ पर आया और वहाँ से उसने काफी सारी काली अंजीरें तोड़ लीं और उनको अपने मफलर में बाँध लिया और शहर चल दिया।

उसने एक किसान का वेश बनाया और अपनी उन काली अंजीरों को एक टोकरी में रख कर शाही महल में बेचने के लिये ले चला।

साल का यह समय ऐसा था कि इस समय अंजीरों का मौसम नहीं था सो महल के चौकीदारों ने जब एक किसान को अंजीरें बेचते हुए देखा तो उसको बुलाया और राजा ने उससे उन अंजीरों की पूरी टोकरी खरीद ली। किसान राजा के घुटने चूम कर अपनी अंजीर बेच कर तुरन्त ही वहाँ से चला गया।

दोपहर को राजा ने अपने परिवार को बुलाया और सब लोग अंजीर खाने बैठे। राजकुमारी को अंजीर बहुत पसन्द थीं सो वह जल्दी जल्दी कई सारी अंजीरें खा गयी। वे सब लोग उन अंजीरों को खा खा कर बहुत खुश हो रहे थे।

पर जब उन्होंने अंजीर खा कर खत्म कर लीं तब उन्होंने एक दूसरे की तरफ देखा तो पाया कि सारे लोगों के शरीर पर सींग उग आये हैं। और राजकुमारी के शरीर पर तो सबसे ज़्यादा सींग थे क्योंकि सबसे ज़्यादा अंजीरें तो उसी ने खायी थीं।

यह सब देख कर तो वे बहुत डर गये। वे शहर के हर डाक्टर के पास गये पर किसी को यह पता नहीं चल सका कि शाही परिवार

को यह क्या हो गया था। राजा ने तुरन्त ही अपने सारे राज्य में यह मुनादी पिटवा दी कि जो कोई भी उनके सींग ठीक करेगा उसकी वह हर इच्छा पूरी करेगा।

जब बड़े भाई ने यह घोषणा सुनी तो अबकी बार उसने सफेद अंजीरों के पेड़ से सफेद अंजीरें तोड़ीं और उनको ले कर वह शाही महल चल दिया। इस बार उसने एक डाक्टर का वेश बना लिया था

वहाँ जा कर वह बोला — "मैं आप सबको इन सींगों से छुटकारा दिला सकता हूँ और मैं इनको बहुत जल्दी ही हटा दूँगा।"

यह सुन कर राजकुमारी चिल्ला कर अपने पिता से बोली — "पिता जी, पहले मेरे सींग निकलवा दीजिये।"

राजा ने उस डाक्टर को पहले राजकुमारी के सींग निकालने के लिये कहा। डाक्टर राजकुमारी को एक अकेले कमरे में ले गया और वहाँ जा कर उसने अपना डाक्टर का वेश उतार दिया और फिर उससे पूछा — "क्या तुम मुझे पहचानती हो? हाँ या न?"

राजकुमारी कुछ झिझकते हुए बोली "हाँ।"

"अच्छा तो अब तुम मेरी बात सुनो जो मुझे तुमसे कहनी है। जब तुम मेरा बटुआ जिसमें से पैसे निकलते हैं, वह शाल जो अपने पहनने वाले को दूसरों से छिपा देता है और वह सींग जिसमें से सिपाही निकलते हैं वापस कर दोगी तभी मैं तुम्हारे शरीर पर से ये सींग हटाऊँगा। पर अगर तुम इनको देने से मना करोगी तो मैं तुम्हारे शरीर पर इससे कहीं ज्यादा सींग लगा दूँगा।"

राजकुमारी को वे सींग एक मिनट के लिये भी अच्छे नहीं लग रहे थे और किसको पता था कि इस लड़के के पास कुछ और भी जादुई चाल हों सो उसने उसके ऊपर विश्वास कर लिया और वे सब चीज़ें उसे वापस दे दीं।

उसने राजकुमारी को उतनी ही सफेद अंजीर खिलायीं जितने सींग उसके शरीर पर थे। उन सफेद अंजीरों के खाते ही उसके शरीर पर से सारे सींग गायब हो गये और वह बिल्कुल ठीक हो गयी।

वही इलाज उसने राजा रानी और दूसरे लोगों का भी किया जिनके शरीर पर काली अंजीर खाने से सींग उग आये थे। वे भी सब ठीक हो गये। राजा ने उसके बाद राजकुमारी की शादी उससे कर दी।

बटुआ तो उसका अपना था वह उसने अपने पास रख लिया पर वह शाल और सींग उसके दोनों छोटे भाइयों के था सो उनको उसने अपने दोनों भाइयों को वापस कर दिये।

अब तो वह राजा का दामाद[56] था सो वह ज़िन्दगी भर राजा का दामाद ही बन कर रहा। अब उसको किसी चीज़ की कोई कमी नहीं थी।

[56] Translated for the word “Son-in-law” – daughter’s husband.

11 जियूफ़ा[57]

जियूफ़ा इटली की लोक कथाओं का एक बहुत ही मशहूर हीरो है। जियूफ़ा की यहाँ छह कहानियाँ दी जाती हैं। ये सब कहानियाँ इटली के सिसिली टापू पर कही सुनी जाती है। जियूफ़ा एक बहुत ही आलसी, बेवकूफ और शरारतों से भरपूर लड़का था। ये सब कहानियाँ उसी की हैं।

1 जियूफ़ा और प्लास्टर की मूर्ति[58]

एक बार एक माँ थी जिसके एक ही बेटा था जो बहुत ही आलसी, बेवकूफ और शरारतों से भरपूर था। उसका नाम था जियूफ़ा। उसकी माँ बहुत गरीब थी पर उसके पास एक बहुत अच्छा कपड़ा था।

एक दिन उसने वह कपड़ा जियूफ़ा को दे कर उससे कहा — "जियूफ़ा, जा इस कपड़े को ले जा और जा कर बाजार में बेच आ। और देख इसे किसी ज़्यादा बोलने वाले को मत बेचना बल्कि किसी ऐसे आदमी को बेचना जो बहुत कम बोलने वाला हो।"

[57] Giufa. Tale No 190. A folktale from Italy from its Sicily Island.

[58] Giufa and the Plaster Statue.

जियूफ़ा उस कपड़े को ले कर चला गया और सारे शहर में चिल्लाता हुआ चक्कर काटता रहा — “कपड़ा ले लो, कपड़ा ले लो कपड़ा।”

एक स्त्री ने उसे रोका और कहा — “यह कपड़ा मुझे दिखाना तो।”

कपड़ा देख कर उसने जियूफ़ा से पूछा — “कितने का दिया है?”

जियूफ़ा बोला — “तुम बहुत बात करती हो। मेरी माँ इस कपड़े को किसी बहुत बोलने वाले को बेचना नहीं चाहती।” और उसके हाथ से कपड़ा छीन कर वह आगे चल दिया।

उसके बाद उसको एक किसान मिला। उसने भी उससे यही पूछा — “कितने का दिया है यह कपड़ा?”

जियूफ़ा बोला — “दस क्राउन[59]।”

“ओह नहीं। यह कीमत तो इस कपड़े के लिये बहुत ज़्यादा है।”

“तुम तो बहुत बोलते हो। तुमको यह कपड़ा नहीं मिलेगा।”

इस तरह कई लोग उसके पास कपड़ा खरीदने आये पर जितने भी लोग आये उसने उन सबको बहुत बात करने वाला कहा और उनमें से किसी को भी कपड़ा बेचने से मना कर दिया।

[59] Crown was the then currency of Italy.

इधर उधर घूमते हुए वह एक घर के ऑगन में घुस गया। उस ऑगन में एक प्लास्टर की मूर्ति खड़ी हुई थी। जियूफ़ा ने उससे पूछा — "क्या तुम यह कपड़ा खरीदोगी?"

उसने कुछ देर तक उसके जवाब का इन्तजार किया पर जब उसको उससे कोई जवाब नहीं मिला तो उसने उससे फिर पूछा — "क्या तुम यह कपड़ा खरीदोगी?"

जब उसको फिर कोई जवाब नहीं मिला तो वह बोला — "आखिर मुझे कोई तो कम शब्द बोलने वाला मिला। अब मैं यह कपड़ा इसको बेच सकता हूँ।" कह कर उसने वह कपड़ा उस मूर्ति को ओढ़ा दिया।

फिर बोला — "इसकी कीमत दस क्राउन है। क्या तुमको यह कीमत मंजूर है? मैं अपने पैसे लेने के लिये कल वापस आऊँगा।" कह कर वह वहॉ से चला गया।

जब वह घर पहुँचा तो उसने मॉ को बताया कि वह वह कपड़ा बेच आया तो मॉ ने पूछा — "पैसे कहॉ हैं?"

"पैसे लेने के लिये मैं उसके पास कल दोबारा जाऊँगा।"

"पर क्या वह आदमी विश्वास के लायक है?"

"मॉ वह तो बस ऐसी ही स्त्री है जैसी स्त्री तुम्हारे दिमाग में थी कि तुम उसको अपना कपड़ा बेचो। क्या तुम विश्वास करोगी कि उसने मुझसे एक शब्द भी नहीं बोला?"

अगली सुबह वह वहीं अपने पैसे लेने के लिये पहुँच गया। उसने देखा कि वह मूर्ति तो वहाँ ठीक ठाक खड़ी हुई है पर उसके ऊपर वह कपड़ा जो वह उसको ओढ़ा कर आया था वह गायब है।

जियूफ़ा बोला — "लाओ मेरे पैसे लाओ।" पर वह तो मूर्ति थी वह तो बोलने वाली थी नहीं। जितनी ज़्यादा देर तक वह उसके जवाब का इन्तजार करता रहा उसका गुस्सा उतना ही बढ़ता रहा।

वह बोला — "तुमने मेरा कपड़ा लिया, लिया कि नहीं? और अब तुम मुझे उसके पैसे देने से मना कर रही हो? मना कर रही हो कि नहीं? मैं तुम्हें अभी बताता हूँ।"

उसने वहीं पड़ा एक डंडा उठाया और उससे उस मूर्ति के टुकड़े टुकड़े कर दिये। पर यह क्या? उस मूर्ति के अन्दर तो उसको सोने के सिक्कों से भरा एक बर्तन मिला। उसने उस बर्तन के सिक्के अपने थैले में खाली कर लिये और घर चला गया।

आ कर वह अपनी माँ से बोला — "माँ वह तो मुझे मेरा पैसा देना ही नहीं चाहती थी। जब मैंने उसको डंडे से मारा तब कहीं जा कर उसने मुझे यह सब दिया।"

कह कर उसने माँ के सामने अपना सोने के सिक्कों से भरा थैला खाली कर दिया।

उसकी माँ एक बहुत ही तेज़ स्त्री थी बोली — "इस सबको यहाँ रख दे और देखना किसी को बताना नहीं।"

2 जियूफ़ा, चॉद, डाकू और सिपाही[60]

एक सुबह जियूफ़ा बाहर से कुछ पत्ते तोड़ने गया। उसके घर वापस आने से पहले ही रात हो गयी। जैसे जैसे वह चलता जा रहा था चॉद बादलों के पीछे उससे ऑखमिचौली खेलता जा रहा था।

जियूफ़ा एक पत्थर पर बैठ गया और उसे छिपते और निकलते देखने लगा। जब वह छिप जाता तो वह कहता "निकल निकल।" और जब वह निकल आता तो वह कहता "छिप जा छिप जा।" इस तरह वह बार बार यही कहता रहा "निकल निकल" और "छिप जा छिप जा"।

उसी समय दो चोर वहीं पास में चोरी किये हुए एक बछड़े का बॅटवारा कर रहे थे। "निकल निकल" और "छिप जा छिप जा" सुन कर वे डर गये और वहॉ से यह सोच कर भाग गये कि लगता है कि आज उनके पीछे सिपाही पड़ गये हैं। वे इतने डर गये थे कि उस बछड़े का मॉस भी वे वहीं छोड़ गये।

जियूफ़ा ने जब उनके भागने की आवाज सुनी तो वह उधर की तरफ यह देखने के लिये गया कि वहॉ क्या हो रहा था। वहॉ जा कर उसे और तो कुछ दिखायी नहीं दिया एक बछड़ा कटा हुआ दिखायी दिया सो उसने अपना चाकू निकाला और उसको और छोटे छोटे टुकड़ों में काटना शुरू किया।

[60] Giufa, the Moon, the Robbers and the Cops.

उसके छोटे छोटे टुकड़े काट कर उसने अपने थैले में डाले और घर चल दिया। घर पहुँच कर और अपनी माँ से बोला — "माँ दरवाजा खोलो।"

माँ बोली — "कहाँ रह गया था तू? यह भी कोई आने का समय है।"

"माँ मैं माँस ले कर आ रहा था कि मुझे रात हो गयी। कल तुम इसको जरूर बेच देना ताकि मुझे कुछ पैसे मिल जायें।"

"कल तू शहर चले जाना मैं तेरा यह माँस बेच दूँगी।"

अगली शाम जब जियूफ़ा घर वापस लौटा तो उसने अपनी माँ से पूछा "क्या तुमने मेरा लाया माँस बेच दिया?"

"हाँ, वह माँस मैंने मक्खियों को उधार पर बेच दिया।"

"और वे तुम्हें पैसे कब देंगीं?"

"जब भी उनके पास पैसा होगा।"

जियूफा एक हफ्ते तक उन मक्खियों के पैसे लाने का इन्तजार करता रहा पर जब वे एक हफ्ते तक भी पैसे ले कर नहीं आयीं तो वह जज के पास गया और बोला — "योर औनर। मुझे न्याय चाहिये। मैंने माँस मक्खियों को उधार पर बेचा और उन्होंने अभी तक मुझे पैसे नहीं दिये हैं।"

जज बोला — "उनकी बस यही एक सजा है कि जब भी तुम कहीं कोई मक्खी देखो तो मैं तुमको यह अधिकार देता हूँ कि तुम उसको मार दो।"

उसी पल एक मक्खी जज की नाक पर आ बैठी तो जियूफ़ा ने अपना घूँसा उठाया और उससे जज की नाक पर बैठी मक्खी को मार दिया। बेचारा जज।

3 जियूफ़ा और लाल टोपी[61]

जियूफ़ा को काम करना नहीं भाता था। वह तो बस खाना खाता और बाहर सड़कों पर घूमने निकल जाता। उसकी माँ हमेशा उससे कहती — "जियूफ़ा, बेटे ज़िन्दगी में आगे बढ़ने का यह कोई तरीका नहीं है। क्या तू थोड़ी सी कोशिश भी नहीं कर सकता कि तू कुछ काम का काम कर ले जिससे चार पैसे आयें? बस तू सारे दिन खाता रहता है, पीता रहता है और चारों तरफ घूमता रहता है।"

यह सुन कर जियूफ़ा कैसैरो स्ट्रीट[62] पर चल दिया ताकि अपने लिये वह कुछ चीज़ें खरीद सके। वह कई दूकानों पर गया और वहाँ से उसने बहुत सारा सामान खरीद लिया।

उसने उन सभी दूकानदारों से वह सब सामान उधार लिया और उनसे कहा कि वह उस सब सामान का पैसा एक दिन जल्दी ही आ कर चुका देगा। आखीर में उसने एक लाल रंग की टोपी खरीदी।

[61] Giufa and the Red Beret. See the pictue of Beret above.

[62] Cassaro Street

उसने जो सामान अपने लिये खरीदा था जब वह सब पहन लिया तो वह अपने आपको देख कर बोला — "अब मैं कितना अच्छा लग रहा हूँ। अब मेरी माँ मुझे देख कर ऐसा वैसा नहीं कहेगी।"

पर अपने बिलों की याद कर के उसने मरने का नाटक करने का निश्चय किया। वह जा कर बिस्तर पर लेट गया और हाथ पैर पटक पटक कर चिल्लाने लगा "मैं मर रहा हूँ, मैं मर रहा हूँ, मैं मर गया।"

उसकी माँ बेचारी परेशान सी आयी और रोते रोते उससे पूछा — "बेटा, तुझे क्या हो गया? तुझे क्या परेशानी है?"

उसके रोने की आवाज सुन कर पड़ोसी भी उसको तसल्ली देखने के लिये आ गये। खबर फैली तो वे दूकानदार भी वहाँ उसको देखने आये जिनसे उसने माल उधार पर लिया था।

वे बोले — "बेचारा जियूफ़ा। इसको तो मुझे एक पैन्ट के बदले में छह बकरे देने हैं। पर अब मैं अपनी किताब से उसका यह उधार काट दूँगा। भगवान उसकी आत्मा को शान्ति दे।"

इस तरह से सारे दूकानदार वहाँ आये और उसके उधार काट काट कर चले गये। पर जिस दूकानदार ने उसको लाल टोपी बेची थी उसने अपना उधार नहीं काटा।

उसने कहा कि "मेरा उधार इसके ऊपर अभी भी बाकी है।" वह दूकानदार भी जियूफ़ा को देखने गया। जियूफ़ा के सिर पर वह लाल टोपी अभी भी थी।

दूकानदार को एक बहुत ही बढ़िया विचार आया। जब कब्र खोदने वाले जियूफ़ा के शरीर को दफ़नाने के लिये चर्च ले गये तो वह भी उनके पीछे पीछे चल दिया। वहाँ जा कर वह चर्च में छिप गया और रात होने का इन्तजार करने लगा।

धीरे धीरे अँधेरा होने लगा। उसी समय कुछ डाकू अपनी लूट का एक थैला बाँटने के लिये वहाँ आये। जियूफ़ा अभी भी अपने ताबूत में बिना हिले डुले लेटा था और वह दूकानदार अभी भी चर्च में दरवाजे के पीछे छिपा हुआ था।

डाकुओं ने अपने थैले में से पैसे निकाले। वे सभी सोने चाँदी के सिक्के थे। उन्होंने उन सिक्कों के उतने ही ढेर बनाने शुरू किये जितने वे थे। ढेर बनाते बनाते एक सिक्का बच गया तो वे सोचने लगे कि वह सिक्का वे किस ढेर में रखें।

आपस में मेलजोल बनाये रखने के लिये उनमें से एक डाकू बोला — "ऐसा करते हैं कि यहाँ एक यह मरा हुआ आदमी पड़ा है। हम उसको अपना निशाना बना कर यह सिक्का उसके ताबूत में फेंकते हैं। जिस किसी का भी सिक्का उस आदमी के ताबूत में चला जायेगा यह सिक्का उसी का होगा।"

"यह तो बिल्कुल ठीक है।" और सब इस बात पर राजी होगये। सिक्का फेंकने के लिये वे सब एक जगह इकट्ठे हो गये।

यह सुन कर जियूफ़ा अपने ताबूत में उठ कर खड़ा हो गया और चिल्लाया — "ओ मरी हुई आत्माओ उठो, तुम सब उठो।"

एक मरे हुए आदमी को खड़ा देख कर वे डाकू डर कर वहाँ से भाग गये। जियूफ़ा ने जब देखा कि वह वहाँ अकेला रह गया तो वह उन सोने चाँदी के सिक्कों के ढेरों की तरफ दौड़ा।

पर उसी समय वह टोपी वाला दूकानदार भी उन ढेरों की तरफ दौड़ा। दोनों ने उस पैसे को बराबर बराबर बाँट लिया पर एक सिक्का फिर भी बच गया।

जियूफ़ा बोला "इसको मैं लेता हूँ यह मेरा है।"

दूकानदार बोला "नहीं यह सिक्का मेरा है इसको मैं लूँगा।"

जियूफ़ा बोला "नहीं यह मेरा है।"

दूकानदार बोला "इसको छूना भी मत यह मेरा है।"

तभी जियूफ़ा ने एक मोमबत्ती बुझाने वाला कपड़ा उठाया और उसको लाल टोपी की तरफ हिलाया और चिल्ला कर बोला — "वह सिक्का यहीं रख दो। मैं उसको ले रहा हूँ।"

उधर डाकू लोग भी चर्च में से भाग कर कहीं और नहीं गये थे वे चर्च के बाहर ही हाथ मलते हुए इधर से उधर चक्कर काट रहे थे। शोर सुन कर उन्होंने चर्च में से सुनने की कोशिश की कि वह मरा हुआ आदमी अब क्या करेगा।

उनको अपना इतना सारा पैसा चर्च में छोड़ कर बाहर आने का बहुत दुख था पर अब वे क्या कर सकते थे। उनके कान चर्च के दरवाजे पर ही लगे थे। दोनों के झगड़े की आवाजें सुन कर वे सोच रहे थे कि न जाने कितनी मरी हुई आत्माऐं यहाँ की कब्रों में से उठ गयी होंगी सो वे तुरन्त ही वहाँ से भाग गये।

जियूफ़ा और टोपी वाला दूकानदार दोनों सिक्कों से भरा एक एक थैला ले कर अपने घर वापस लौटे। जियूफ़ा के पास उस दूकानदार से एक सिक्का ज़्यादा था।

4 जियूफ़ा और वाइनस्किन[63]

जब जियूफ़ा की माँ ने देखा कि उसकी कोई भी तरकीब जियूफ़ा को ठीक नही कर पा रही थी तो उसने उसको एक सराय में नौकरी दिलवा दी। अब वह उस सराय के मालिक की सहायता किया करता था।

एक दिन सराय के मालिक ने उससे कहा — "जियूफ़ा ज़रा समुद्र तक चले जाओ और यह वाइनस्किन[64] धो कर ले आओ। और देखो इसको ठीक से धोना वरना मैं तुमको बहुत पीटूँगा।"

[63] Giufa and the Wineskin

[64] Wineskin is a bag, usually of goatskin, for carrying wine and having a spiqot from which one drinks the wine.

जियूफ़ा वाइनस्किन ले कर समुद्र की तरफ चला गया और वहॉ उसको समुद के पानी में सारी सुबह धोता रहा, धोता रहा, धोता रहा। फिर उसने सोचा "मुझे यह कैसे पता चले कि यह वाइनस्किन ठीक से धुल गया कि नहीं। मैं किससे पूछॅू?"

समुद्र के किनारे पर कोई भी नहीं था पर समुद्र में एक नाव जा रही थी जो अभी अभी किनारा छोड़ कर गयी थी। जियूफ़ा ने अपना रूमाल निकाला और उसे बहुत ज़ोर ज़ोर से हिला कर चिल्लाना शुरू किया — "ओ पानी में जाने वालो, वापस आओ।"

नाव के कप्तान ने कहा — "यह लड़का हमको किनारे पर आने के लिये इशारा कर रहा है। हम लोगों को वापस चलना चाहिये। हमको नहीं मालूम कि वह हमसे क्या कहना चाहता है। क्या पता हम लोग वहॉ कुछ छोड़ आये हों।"

सो उन्होंने अपनी बड़ी नाव में से एक छोटी पतवार से खेने वाली नाव निकाली और किनारे की तरफ चल दिये। वहॉ तो जियूफ़ा खड़ा था।

कप्तान ने उससे पूछा — "क्या बात है? तुम हमें क्यों बुला रहे थे?"

जियूफ़ा बोला — "योर औनर, मेहरबानी कर के आप ज़रा मुझे यह बताइये कि यह वाइनस्किन ठीक से धुल गयी या नहीं?"

यह सुन कर कप्तान तो गुस्से के मारे पागल सा हो गया। उसने पास में पड़ी एक डंडी उठायी और जियूफ़ा को उससे इतनी ज़ोर से पीटा कि वह ज़िन्दगी भर याद रखता।

जियूफ़ा रोता हुआ चिल्लाया — "पर फिर मैं क्या कहता?"

कप्तान बोला — "तुम कहो कि "भगवान इनकी नाव जल्दी जल्दी चलाओ" ताकि हम तुम्हारे साथ अपना बर्बाद किया हुआ समय फिर से पा सकें।"

जियूफ़ा ने वह वाइनस्किन का थैला अपनी पीठ पर डाला जो अभी भी कप्तान की मार के दर्द से दुख रही थी और खेतों में से होता हुआ ज़ोर ज़ोर से यह कहता हुआ भागता चला गया "भगवान उनको जल्दी पहुँचा दो, भगवान उनको जल्दी पहुँचा दो।"

जब वह भागा जा रहा था तो उसको एक शिकारी मिला जो दो खरगोशों के ऊपर निशाना लगा रहा था। पर जियूफ़ा तो यह कहता भागा जा रहा था कि "भगवान उनको जल्दी पहुँचा दो, भगवान उनको जल्दी पहुँचा दो।"

यह सुन कर खरगोश और जल्दी जल्दी भागने लगे।

शिकारी अपनी बन्दूक का हैन्डिल जियूफ़ा के सिर पर मारता हुआ बोला — "ओ छोटे आदमी, मैं तो उनको अपने पास बुला रहा था और तुम उनको भगा रहे हो।"

जियूफ़ा फिर रोते हुए बोला — "तो फिर मैं और क्या कहता?"

शिकारी बोला — "तुमको कहना था कि "भगवान उनको मार दो, भगवान उनको मार दो।"

उस वाइनस्किन को कन्धे पर लादे लादे जियूफ़ा फिर यह कहता हुआ भागता चला गया "भगवान उनको मार दो। भगवान उनको मार दो।"

अब आगे जा कर उसको दो आदमी मिले जो आपस में बहस कर रहे थे और लड़ने के लिये तैयार थे। और जियूफ़ा तो यह कहता हुआ भागा जा रहा था कि "भगवान उनको मार दो। भगवान उनको मार दो"

यह सुन कर वे दोनों अपना लड़ना तो भूल गये और दोनों जियूफ़ा के ऊपर टूट पड़े। वे बोले — "ओ बेवकूफ। तुम हमारी आग में तेल छिड़क रहे हो?" और यह कह कर उन्होंने भी जियूफ़ा को बहुत मारा।

जियूफ़ा सुबकते हुए बोला — "पर फिर मैं क्या कहता?"

वे बोले — "तुमको कहना चाहिये था कि "हे भगवान, इनको अलग कर दो। हे भगवान, इनको अलग कर दो।"

"ठीक है। अब से मैं यही कहूँगा।" यह सुन कर जियूफ़ा यह कहता हुआ वहाँ से चल दिया "हे भगवान, इनको अलग कर दो। हे भगवान, इनको अलग कर दो।"

अब आगे जा कर जियूफ़ा को भला कौन मिला? एक शादीशुदा जोड़ा जो चर्च में से तभी तभी अपनी शादी करा कर बाहर निकल रहा था। जब उन्होंने यह सुना कि "हे भगवान, इनको अलग कर दो। हे भगवान, इनको अलग कर दो।" तो दुलहे को तो बहुत गुस्सा आ गया।

उसने अपनी कमर से पेटी निकाली और जियूफ़ा को उससे ज़ोर ज़ोर से मारना शुरू किया — "ओ बदशकुनी आदमी, तुम एक पति पत्नी को अलग करने का सोच ही कैसे सकते हो?"

जब जियूफ़ा से और मार नहीं सही गयी तो वह बेहोश हो कर वहीं जमीन पर गिर गया। जब उन्होंने उसको उठाया तो उसने अपनी ऑखें खोलीं तो उन्होंने उससे पूछा — "तुम एक नये शादीशुदा जोड़े से जब ऐसा कह रहे थे तब तुम क्या सोच रहे थे?"

"पर तब मुझे क्या कहना चाहिये था?"

"तुमको कहना चाहिये था कि "हे भगवान इनको हमेशा हॅसने दो। हे भगवान इनको हमेशा हॅसने दो।"

जियूफ़ा ने अपनी वाइनस्किन फिर से उठायी और उस जोड़े की लाइनें दोहराते हुए अपने रास्ते चल दिया "हे भगवान इनको हमेशा हॅसने दो। हे भगवान इनको हमेशा हॅसने दो।"

अभी वह यह सब कहता ही जा रहा था कि वह एक ऐसे घर के सामने पहुॅचा जहॉ एक मरा हुआ आदमी ताबूत में लेटा हुआ

था। उसके ताबूत के चारों तरफ मोमबत्तियाँ जली हुई थीं और उसके रिश्तेदार बेचारे रो रहे थे।

जब उन्होंने जियूफ़ा को यह कहते हुए सुना "हे भगवान इनको हमेशा हँसने दो। हे भगवान इनको हमेशा हँसने दो।" तो वहाँ बैठे हुए आदमियों में से एक आदमी वहाँ से उठ कर आया और जियूफ़ा को और बहुत मारा।

अब जियूफ़ा को लगा कि इस सबसे तो अच्छा है कि वह अपना मुँह बन्द ही रखे और वह सीधा सराय की तरफ भागा। सराय पहुँचते पहुँचते उसको रात हो गयी थी। सराय का मालिक उस पर बहुत नाराज था।

सराय के मालिक ने जियूफ़ा को सुबह सुबह वाइनस्किन धोने के लिये भेजा था और वह वह थैला अब धो कर ला रहा था। उसको बहुत ही गुस्सा आया तो उसने भी जियूफ़ा की अब अपने हिस्से की पिटायी की कि वह रात से पहले क्यों नहीं आया।

क्या वाइनस्किन को साफ करने में इतनी देर लगती थी? अगले दिन उसने जियूफ़ा को नौकरी से निकाल दिया।

5 ओ मेरे कपड़ों पेट भर कर खाओ[65]

जियूफ़ा क्योंकि बहुत बेवकूफ था इसलिये न तो कोई उसको अपने घर बुलाता था और न ही कोई उसको अपने पास बिठाता था।

[65] Eat Your Fill, My Fine Clothes.

एक बार वह एक खेत पर गया कि शायद वहॉ कोई उसको कुछ काम दे दे। पर लोगों ने देखा कि यह तो बड़ा गन्दा सा आदमी है सो उन्होंने उस पर अपने कुत्ते छोड़ दिये। उन कुत्तों ने उसके सारे कपड़े फाड़ दिये।

उसके बाद उसकी मॉ ने उसके लिये फिर एक बहुत ही अच्छा कोट, एक पैन्ट और एक मखमल की जैकेट खरीदी। इन अच्छे कपड़ों को पहन कर अब वह फिर से खेत पर लौटा तो इस बार उन्होंने उसको बुलाया, उसका ठीक से स्वागत किया और उसको खाना खाने के लिये अपने साथ अपनी मेज पर बिठाया।

जब उन्होंने उसकी प्लेट में खाना परस दिया तो वह उसमें से उसको एक हाथ से उठा कर खाने लगा और दूसरे हाथ से खाना अपनी जेबों में और टोप में यह कहते हुए भरने लगा "ओ मेरे अच्छे कपड़ों पेट भर कर खाओ क्योंकि इन लोगों ने तुम्हें बुलाया है न कि मुझे।"

6 जियूफ़ा अपने बाद दरवाजा खींच देना[66]

एक बार जियूफ़ा अपनी मॉ के साथ खेतों पर गया तो मॉ पहले घर में से बाहर निकली और जियूफ़ा से बोली — "जियूफ़ा अपने बाद दरवाजा खींच देना।"

[66] Giufa, Pull the Door After You.

सो जब जियूफ़ा घर के बाहर आ गया तो उसने अपने घर के दरवाजे को खींचना शुरू किया और वह उसे तब तक खींचता रहा जब तक कि वह दीवार में से टूट कर बाहर नहीं आ गया।

जब दरवाजा बाहर आ गया तो उसने उसको अपनी कमर पर लादा और अपनी माँ के पीछे पीछे चल दिया। कुछ दूर चलने के बाद उसने अपनी माँ से कहा — "माँ यह तो बहुत भारी है। इसको ले कर चलने में मुझे भारी लग रहा है।"

माँ घूम कर पीछे मुड़ कर बोली — "अरे तुझे क्या भारी लग रहा है?" और तब उसने देखा कि उसका बेटा तो दरवाजा अपनी कमर पर लादे चला आ रहा है।

इस बोझ के साथ वे दोनों ही धीरे धीरे चल रहे थे। रात होने वाली थी और वे अभी भी अपने घर से बहुत दूर थे। रास्ते में कहीं डाकू न मिल जायें इसलिये माँ और बेटा दोनों एक पेड़ पर चढ़ गये। जियूफ़ा अभी भी अपनी कमर पर घर का दरवाजा लिये हुए था।

जब आधी रात हुई तो वहीं उसी पेड़ के नीचे कुछ डाकू अपनी लूट का पैसा बाँटने के लिये आये। जियूफ़ा और उसकी माँ दोनों अपनी साँस रोके वहीं बैठे रहे।

कुछ मिनट बाद ही जियूफ़ा फुसफुसाया — "माँ मुझे छोटा काम करना है।"

"क्या?"

"हॉ मुझे वह करना ही है।"

"थोड़ा इन्तजार कर।"

"मॉ मैं बिल्कुल इन्तजार नहीं कर सकता।"

"हॉ हॉ, तू इन्तजार कर सकता है।"

"नहीं मॉ नहीं।"

"तो फिर कर ले।"

और जियूफ़ा ने कर लिया। जब डाकुओं ने ऊपर से पानी गिरने की आवाज सुनी तो बोले — "अरे यह क्या? क्या बारिश हो रही है?"

कुछ मिनट बाद जियूफ़ा फिर फुसफुसाया — "मॉ मुझे तो कुछ और भी करना है।"

"थोड़ा इन्तजार कर।"

"मॉ मैं बिल्कुल इन्तजार नहीं कर सकता मॉ।"

"हॉ हॉ, तू इन्तजार कर सकता है।"

"नहीं मॉ नहीं।"

"तो फिर कर ले।" और जियूफ़ा ने वह भी कर लिया।

जब डाकुओं ने अपने ऊपर कुछ गिरता हुआ महसूस किया तो वे बोले — "ओह यह क्या है? क्या यह स्वर्ग से गिरा मन्ना[67] है या फिर ऊपर चिड़ियें बैठी हैं?"

[67] Manna – Manna was the famous Divine food which, according to Bible and Quran, God miraculously gave to Israelites during their journey in the desert – Exodus 16.

क्योंकि जियूफ़ा अभी भी घर का दरवाजा अपनी कमर पर लादे था वह फिर फुसफुसाया — "मॉ यह बहुत भारी है।"

"बेटा कुछ देर के लिये इसे और पकड़ कर रख।"

"पर यह बहुत भारी है मॉ।"

"बेटा कुछ देर और।"

"पर मॉ मैं इसको और पकड़ कर नहीं रख सकता।" और उसने वह दरवाजा नीचे डाकुओं के ऊपर गिरा दिया।

यह देखे बिना ही कि उनके सिर पर क्या गिरा डाकू लोग वहॉ से हवा की तेज़ी से भाग गये।

मॉ और बेटा दोनों पेड़ से नीचे उतर आये। वहॉ उन्होंने देखा कि सिक्कों से भरा एक थैला पड़ा है जिसको वे डाकू आपस में बॉट रहे थे। वे मॉ और बेटा दोनों उस थैले को उठा कर घर ले गये।

घर पहुॅच कर मॉ ने बेटे से कहा — "इस थैले के बारे में किसी को भी नहीं बताना नहीं तो राजा के सिपाही तुझे और मुझे दोनों को पकड़ कर जेल में बन्द कर देंगे।"

उसके बाद मॉ बाजार से कुछ किशमिश और सूखी अंजीर[68] खरीद लायी और घर की छत पर चढ़ गयी। जब जियूफ़ा बाहर गया तो उसने जियूफ़ा के ऊपर वे किशमिश और अंजीरें फेंकनी शुरू कर दीं।

[68] Dry grapes and dry figs – see their picture above. In this picture, dark brown and maroon color pieces are of raisins and grapes. Yellow color pieces are of dry aapricots. White pieces are of dry banana.

अपने आपको उनकी मार से बचाते हुए जियूफ़ा चिल्लाया "मॉ। यह क्या कर रही हो?"

मॉ छत से ही बोली — "तुझे क्या चाहिये।"

"मॉ किशमिश और सूखी अंजीरें गिर रही हैं।"

"यह तो मुझे भी साफ दिखायी दे रहा है कि आज किशमिश और सूखी अंजीरें गिर रही हैं।"

"तो फिर मैं और क्या कहूँ?" यह कह कर जियूफ़ा चला गया।

जब जियूफ़ा चला गया तो उसकी मॉ ने थैले में से सोना निकाला और उसकी जगह उसमें जंग लगी कीलें भर दीं। एक हफ्ते बाद जियूज़ा ने थैला देखा तो उसमें तो सोने के सिक्कों की बजाय उसको कीलें दिखायी दीं।

तो उसने अपनी मॉ पर चिल्लाना शुरू किया — "मेरा पैसा मुझे वापस दो नहीं तो मैं जज के पास जाऊँगा।"

"कौन सा पैसा?" कह कर उसने उसकी तरफ कोई ध्यान नहीं दिया सो जियूफ़ा जज के पास चला गया

वहॉ जा कर उसने उससे कहा — "योर औनर, मेरे पास एक थैला भर कर सोना था जिसे मेरी मॉ ने निकाल लिया और उस थैले को जंग लगी कीलों से भर दिया।"

"सोना? कब किसने तुम्हारे पास सोना सुना?"

"हॉ जनाब, मेरे पास सोना था जिस दिन किशमिश और सूखी अंजीरों की बारिश हुई थी।" यह सुन कर जज ने उसे पागल समझा और उसको पागलखाने भेज दिया।

12 फ्रा इगनैज़ियो[69]

फ्रा इगनैज़ियो[70] रोज मौनेस्टरी[71] के लिये भीख मॉगने जाया करता था। वह साधारणतया वहॉ जाता था जहॉ गरीब लोग होते थे क्योंकि वे जो कुछ भी देते थे बहुत खुश हो कर देते थे।

पर एक आदमी था जिसके पास वह कभी नहीं जाता था वह था वहॉ का एक नोटरी[72]। उसका नाम था फ्रैन्चीनो[73]। वह बहुत ही कंजूस था और गरीबों का खून चूसने वाला था।

एक दिन फ्रा इगनैज़ियो ने उस नोटरी को नाराज कर दिया क्योंकि वह उसको छोड़ कर हमेशा ही दूसरे लोगों के घर चला जाया करता था। नोटरी इस बात से नाराज हो गया था तो एक दिन वह मौनेस्टरी में उसके इस बुरे व्यवहार की शिकायत करने गया।

[69] Fra Ignazio. Tale No 191. A folktale from Italy from its Campidano area.
[70] Fra is the short form for Friar – Friar is a religious order in Roman Catholic Church especially in mendicant orders. And Ignazio is his name.
[71] A monastery is the building or complex of buildings comprising the domestic quarters and workplace(s) of monastics, whether monks or nuns, and whether living in communities or alone (hermits). The monastery generally includes a place reserved for prayer which may be a chapel, church or temple, and may also serve as an oratory.
[72] A notary public of the common law is a public officer constituted by law to serve the public in non-contentious matters usually concerned with estates, deeds, powers-of-attorney, and foreign and international business.
[73] Francino – name of the Notary

उसने फादर से कहा — “फादर, क्या मैं आपको ऐसा लगता हूँ कि मैं किसी से ऐसा व्यवहार कर सकता हूँ कि मैं किसी को भीख भी न दे सकूँ?”

प्रायर[74] बोला — “तुम चिन्ता न करो मैं फा इगनैज़ियो से बात करूँगा और उसको समझा दूँगा।” यह सुन कर नोटरी चला गया।

जब फा इगनैज़ियो मौनेस्टरी में वापस आया तो प्रायर ने उससे पूछा — “तुम्हारा क्या मतलब है नोटरी को छोटा समझने का? कल तुम उसके घर जाओ और वह जो कुछ भी तुमको दे वह सब उससे प्रेम से ले कर आओ।”

फा इगनैज़ियो ने चुपचाप सिर झुकाया और वहाँ से चला गया। अगली सुबह फा इगनैज़ियो नोटरी के घर गया तो नोटरी ने उसका थैला हर अच्छी चीज़ से भर दिया। फा इगनैज़ियो ने वह थैला अपनी पीठ पर लादा और मौनेस्टरी की तरफ चल दिया।

जैसे ही नोटरी के घर के बाहर उसने पहला कदम रखा उस थैले में से एक बूँद खून गिरा, फिर दूसरी बूँद गिरी, फिर तीसरी बूँद गिरी।

उसके पीछे जो लोग आ रहे थे उन्होंने उस थैले में से खून गिरता देखा तो बोले — “आज तो फा इगनैज़ियो के लिये माँस का

[74] Prior – a prior (or prioress for nuns) is a monastic superior, usually lower in rank than an abbot or abbess.

दिन है। आज फादर लोग बदलाव के लिये बहुत बढ़िया दावत खायेंगे।"

फ्रा इगनैज़ियो बिना एक शब्द बोले अपने रास्ते पर चलता रहा और अपने पीछे खून की बूँदों की लकीर छोड़ता रहा।

जब वह मौनेस्टरी पहुँचा तो ब्रदर लोगों ने देखा कि वह तो खून बिखेरता चला आ रहा है तो वे उससे बोले — "ओह, आज तो फ्रा इगनैज़ियो हमारे लिये मॉस ले कर आ रहा है, और वह भी ताजा कटा हुआ।"

फ्रा इगनैज़ियो के अन्दर आने पर उन्होंने उसका थैला खोला पर उसमें तो कोई मॉस नहीं था तो उनके मुँह से निकला — "अरे तो फिर यह खून कहाँ से आया?"

फ्रा इगनैज़ियो बोला — "डरो नहीं। यह खून तो थैले में से बह रहा है क्योंकि फ्रैन्चीनो ने जो भीख मुझे दी है वह उसकी अपनी कमाई की नहीं है बल्कि वह तो गरीबों को लूटा हुआ सामान है जो उनके खून पसीने की कमाई थी।

सो यह खून किसी कटे हुए ताजा मॉस का नहीं है बल्कि उन गरीबों का है जिनकी कमाई उस फ्रैन्चीनो ने छीनी है।"

उस दिन के बाद फादर ने फिर कभी फ्रा इगनैज़ियो को नोटरी के घर भीख मॉगने के लिये नहीं भेजा।

13 सोलोमन की सलाह[75]

एक बार एक दूकानदार की जनरल स्टोर की दूकान थी। एक दिन वह सुबह को जल्दी ही अपनी दूकान खोलने चला गया तो उसको अपनी दूकान के दरवाजे पर क्या पड़ा मिला – एक मरा हुआ आदमी।

उसको देख कर तो वह इतना डर गया कि पकड़े जाने के डर से वह वहाँ से भाग निकला और अपने घर में अपनी पत्नी और अपने तीन बच्चों को छोड़ कर कहीं और चला गया।

जब वह एक दूसरे शहर पहुँचा तो वहाँ वह काम ढूँढने लगा पर वहाँ उसको कोई काम ही नहीं मिला।

आखिर उसने एक भले आदमी के बारे में सुना जिसको एक नौकर की जरूरत थी। कुछ अच्छा काम न पाने पर उसने सोचा कि चलो उसी भले आदमी के पास ही चलते हैं और उसी से पूछते हैं अगर वही कोई काम दे दे तो।

वह उस भले आदमी के पास गया। उस भले आदमी का नाम था सोलोमन। सोलोमन एक धर्मदूत[76] था और बहुत सारे लोग उससे सलाह लेने के लिये जाते थे। वह सोलोमन से मिला और उसने उस

---

[75] Solomon's Advice. Tale No 192. A folktale from Italy from its Campidano area.
[76] Translated for the word "Prophet"

दूकानदार को अपने यहाँ नौकर रख लिया। उसके पास वह बीस साल तक काम करता रहा।

बीस साल के बाद उसको घर की याद आने लगी क्योंकि जबसे उसने अपना घर छोड़ा था इतने सालों में उसने अपने घर के बारे में कुछ भी नहीं सुना था।

वह सोलोमन के पास गया और बोला — "मालिक, मैं अपने घर जा कर अपने लोगों को देखना चाहता हूँ। आप मेरा हिसाब कर दीजिये तो फिर मैं घर जाना चाहता हूँ।"

हालाँकि वह बीस साल से सोलोमन के यहाँ काम कर रहा था पर अभी तक उसने उससे एक पैनी भी नहीं ली थी। उसके मालिक ने उसकी तनख्वाह का हिसाब लगाया तो उसके तीन सौ क्राउन[77] बनते थे। उसने वे पैसे उस दूकानदार को दे दिये और वह दूकानदार अपने घर चल दिया।

जब वह जा रहा था और सीढ़ियों से नीचे उतर रहा था तो उसके मालिक ने उसको पुकारा तो वह लौटा। मालिक ने उससे कहा — "हर आदमी मेरी सलाह के लिये मेरे पास आता है और तुम मेरे पास इतने साल रह कर भी मुझसे बिना मेरी सलाह लिये चले जा रहे हो। कुछ भी नहीं माँग रहे।"

नौकर ने पूछा — "मालिक आप अपनी एक सलाह के कितने पैसे लेते हैं?"

---

[77] Crown – the then currency of European countries and some other countries as well.

सोलोमन बोला — "सौ क्राउन।"

नौकर को इन दामों में एक सलाह बहुत मॅहगी लगी। पर उसने इस पर फिर सोचा और फिर सीढ़ी चढ़ कर ऊपर आया। उसने मालिक को सौ क्राउन दिये और बोला — "ठीक है। तो मुझे एक सलाह दे दीजिये।"

सोलोमन बोला — "नये रास्ते के लिये अपने पुराने रास्ते को कभी मत छोड़ो।"

नौकर बोला — "क्या? बस यही? क्या इसी बात के लिये मैंने आपको सौ क्राउन दिये?"

सोलोमन बोला — "नहीं। यह सौ क्राउन इस सलाह की कीमत नहीं थी बल्कि ये तो इसलिये थे ताकि तुम इस सलाह को याद रखो कभी भूलो नहीं।"

नौकर सीढ़ियों पर से फिर नीचे वापस चल दिया कि उसने दोबारा कुछ सोचा और यह कहने के लिये वापस आया — "जब तक मैं यहॉ हूॅ तब तक आप मुझे दूसरी सलाह भी दे दें।"

सोलोमन बोला — "उसके लिये सौ क्राउन और लगेंगे।"
नौकर ने उसको सौ क्राउन और दे दिये।

सोलोमन बोला — "दूसरी सलाह। दूसरों के कामों में कभी दखल मत दो।"

नौकर ने अपने मन में सोचा — "अगर मैं केवल सौ क्राउन ले कर घर जाता हूॅ तो यह तो खाली हाथ जाने के बराबर होगा। पर

मैं खाली हाथ भी जा सकता हूँ क्योंकि तब मुझे कम से कम सोलोमन से कुछ काम की सलाह तो मिलेगी।"

सो उसने सोलोमन को अपने बचे हुए सौ क्राउन भी दे दिये और उससे कहा कि "मालिक, एक सलाह और।"

सोलोमन बोला — "तीसरी सलाह। अपने गुस्से को कल तक के लिये ताक पर रख दो।"

नौकर फिर चल दिया पर उसके मालिक ने उसे फिर पुकारा और एक केक दी और कहा — "तुमने अपने सारे पैसे तो मुझसे सलाह खरीदने में खर्च कर दिये अब तुम घर क्या खाली हाथ जाओगे?

लो यह केक लेते जाओ। पर इस केक को तब तक मत काटना जब तक तुम अपने सारे परिवार के साथ खाने की मेज पर न बैठे हो।" केक ले कर नौकर चला गया।

वह अपने रास्ते चला जा रहा था कि रास्ते में उस कुछ यात्री सफर करते मिल गये। उन्होंने उस नौकर से पूछा — "क्या तुम हमारे साथ सफर करना पसन्द करोगे? हम लोग भी उसी तरफ जा रहे हैं। तुम भी हमारे साथ ही चल सकते हो।"

नौकर ने सोचा — "मैंने अपने मालिक को सौ क्राउन दिये थे इस सलाह के लिये कि "नये रास्ते के लिये अपने पुराने रास्ते को मत छोड़ो।" मुझे उनकी बात माननी चहिये। यही सोच कर वह उनके साथ नहीं गया और अपने रास्ते चला गया।

जब वह अपने रास्ते जा रहा था तो कुछ ही देर बाद उसने बन्दूक की गोलियों की आवाज सुनी, चिल्लाहट सुनी और कराह की आवाजें सुनीं। लगता था कि उन यात्रियों पर डाकुओं ने हमला कर दिया था और उन्होंने उस समूह के हर यात्री को मार दिया था।

सो उन सौ क्राउन की जय हो जो मेरे मालिक को गये और जिन्होंने मेरी जान बचायी।"

अपने मालिक की तारीफ करते करते वह फिर अपने सफर पर चल दिया। चलते चलते ऑधेरा होने लगा। उस समय वह खेतों के रास्ते में एक अकेली जगह से गुजर रहा था।

वहॉ उसको शरण लेने के लिये कोई जगह ही नहीं मिल रही थी। अन्त में उसको एक अकेला घर दिखायी दे गया। वह वहॉ गया और जा कर उस घर का दरवाजा खटखटाया।

एक आदमी ने दरवाजा खोला तो वहॉ उसने एक रात ठहरने की जगह मॉगी। घर के लोगों ने उसको ठहरने की जगह दे दी और अन्दर बुला लिया।

घर के मालिक ने खाना तैयार किया और वे सब खाना खाने बैठे। जब उन्होंने खाना खा लिया तो घर के मालिक ने एक दरवाजा खोला जो उनके घर के तहखाने में खुलता था। उस तहखाने के दरवाजे से एक अन्धी स्त्री बाहर निकली।

घर के मालिक ने उसके लिये एक खोपड़ी के कटोरे में सूप परसा और सरकंडे[78] का एक टुकड़ा दिया जिसको वह सूप को पीने के लिये चम्मच की जगह इस्तेमाल कर सकती थी।

उस अन्धी स्त्री ने जब खाना खा लिया तो वह आदमी उसको वापस तहखाने में छोड़ आया और उस तहखाने का दरवाजा बन्द कर दिया।

फिर घर के मालिक ने उस नौकर से कहा — "जो कुछ तुमने अभी देखा उसके बारे में तुम्हें क्या कहना है?"

नौकर को अपने मालिक की दूसरी सलाह याद आयी – "दूसरों के कामों में दखल मत दो।" तो उसने फौरन ही उसको जवाब दिया — "मैं तो यह सोचता हूँ कि तुम्हारे पास ही इस बात का जवाब होना चाहिये। मैं इस बारे में क्या कह सकता हूँ।"

घर का मालिक बोला — "यह मेरी पत्नी है। जब मैं घर से बाहर चला जाता था तब यह किसी दूसरे आदमी को घर में बुलाती थी। एक बार मैं घर जल्दी वापस आ गया तो मैंने उस आदमी को अपने घर में देख लिया। बस मैंने उसको मार दिया और इसकी ऑखें निकाल लीं।

यह कटोरा जिसमें यह खाना खाती है यह उसी आदमी की खोपड़ी है। और यह चम्मच उस सरकंडे की है जिससे मैंने इसकी

---

[78] Translated for the word "Reed". See its picture above.

ऑखें निकाली थीं। अब तुम बताओ कि तुम क्या सोचते हो? मैंने ठीक किया या गलत?"

नौकर बोला — "अगर तुमको यह ठीक लगता है तो इसका मतलब है कि यह ठीक ही होगा।"

घर का मालिक बोला — "बहुत अच्छे। कोई भी जो यह कहता है कि मैंने गलत किया मैं उसको मार देता हूँ।"

नौकर ने चैन की सॉस ली और सोचा — "मेरे मालिक की जय हो और उस दूसरे सौ क्राउन की भी जय हो जिसने आज मेरी दूसरी बार जान बचायी।"

अगली सुबह नौकर आगे चला और शाम को अपने घर पहुँच गया। उसने अपनी सड़क ढूँढी अपना घर ढूँढा। खिड़कियों में रोशनी हो रही थी और एक खिड़की में उसको अपनी पत्नी खड़ी दिखायी दी पर उसके साथ एक बहुत ही सुन्दर नौजवान भी खड़ा था। उसकी पत्नी ने उस नौजवान के चेहरे पर प्यार से थपथपाया।

यह देख कर वह बहुत गुस्सा हो गया। उसने तुरन्त ही अपनी बन्दूक निकाल ली और निशाना साध लिया। पर तभी उसको अपने मालिक की तीसरी सलाह याद आयी "अपने गुस्से को कल पर टाल दो।"

यह सलाह याद आते ही उसने अपने गुस्से को कल पर टाल दिया और अपनी बन्दूक चलाने की बजाय नीची कर ली। फिर वह

अपने घर के सामने वाले घर में रहने वाली पड़ोसन के पास गया और उससे पूछा — "इस सामने वाले घर में कौन रहता है?"

वह बोली — "वह तो एक स्त्री का घर है जो अपने आप में ही खुश रहती है। आज ही उसका बेटा सेमीनारी[79] से लौट कर आया है और आज ही उसने अपनी पहली मास[80] कही है। अब वह उस पर बिल्कुल नाराज नहीं हो सकती।"

यह सुन कर उस आदमी ने सोचा "उस आखिरी सौ क्राउन की भी जय हो जिसने आज मेरी ज़िन्दगी तीसरी बार बचायी है वरना मैं तो अपनी पत्नी को ही मार बैठता।"

वह अपने घर दौड़ा गया तो उसकी पत्नी ने दरवाजा खोला। पत्नी तो उसको देख कर बहुत खुश हो गयी पर उसके बेटों ने उसको नहीं पहचाना। क्योंकि वह जब उनको छोड़ कर गया था तब वे बहुत छोटे छोटे थे और अब उस बात को बीस साल भी तो हो गये थे।

सबने एक दूसरे को गले लगाया और फिर सब लोग खाना खाने बैठे। तब सोलोमन की सलाह के अनुसार आदमी ने उसका दिया हुआ वह केक काटा जिसको उसने सबके सामने काटने के लिये कहा था।

---

[79] Seminary – the theological school where Christian pastors are educated and trained in theology for Ministry in Churches.

[80] Mass – Mass is one of the names by which the sacrament of the Eucharist is commonly called in the Catholic Church. The term Mass often colloquially refers to the entire church service in general.

उस केक के अन्दर वे तीन सौ क्राउन थे जो सोलोमन ने उससे ले कर उसको सलाह देने के बदले में रख लिये थे ताकि वह उसकी सलाह को याद रखे।

नौकर तो सोलोमन की तारीफ करते करते नहीं थक रहा था।

14 एक आदमी जिसने डाकुओं को लूटा[81]

एक बार की बात है कि एक जगह छह बहुत ही भयानक डाकू रहते थे जो हमेशा खून और डकैती में लगे रहते थे। उनका घर एक पहाड़ी के ऊपर था।

उनके घर के एक कमरे में तो केवल पैसा ही पैसा भरा हुआ था। जब भी वे अपना घर छोड़ कर जाते थे तो अपने घर के दरवाजे की चाभी एक पत्थर के नीचे छिपा जाते थे।

एक दिन एक किसान और उसका बेटा लकड़ी काटने के लिये उस पहाड़ी पर जा रहे थे कि उन्होंने डाकुओं को उनके घर में से निकलते देखा तो वे दोनों एक पेड़ के पीछे छिप गये। उन्होंने देखा कि उन लोगों ने अपने घर का दरवाजा बन्द कर के उसकी चाभी एक पत्थर के नीचे रख दी और वहाँ से चले गये।

जब वे डाकू वहाँ से चले गये तो उस किसान और उसके बेटे ने उस पत्थर के नीचे से उन डाकुओं के घर की चाभी निकाली और उनका घर खोल कर उनके घर में घुस गये। वहाँ उनको एक कमरा केवल पैसों से भरा मिल गया तो उन्होंने अपनी जेबें पैसों से भर लीं।

---

[81] The Man Who Robbed the Robbers. Tale No 193. A folktale from Italy from its Campidano area. [My Note: This story is like "Ali Baba and Forty Thieves". You may read this story in English at http://www.sushmajee.com/shishusansar/stories-arabian-nights/arabian-2/41-alaaddeen-1.htm]

पैसे निकाल कर उन्होंने घर बन्द किया, चाभी वहीं पत्थर के नीचे रख दी जहाँ वे डाकू उसे रख कर गये थे और फिर वे अपने घर वापस लौट आये।

वे अपनी आज की आमदनी से बहुत खुश और सन्तुष्ट थे। अगले दिन वे पिता और बेटा दोनों फिर वहीं गये और फिर उसी पत्थर के नीचे से चाभी निकाली और फिर पैसे भर कर ले आये।

तीसरे दिन जब बेटे ने दरवाजा खोला तो वह एक चिपकने वाली चीज़ के गड्ढे में गिर पड़ा।

असल में दो दिन से वे डाकू यह देख रहे थे कि उनका पैसा कोई ले जा रहा था सो यह गड्ढा वे अपने घर के दरवाजे के बिल्कुल बराबर में खोद गये थे ताकि अगली बार जब कोई आये तो वह उसमें गिर जाये और वे उसको पकड़ लें।

पिता ने अपने बेटे को खींच कर उस गड्ढे में से निकालने की बहुत कोशिश की पर वह उसको खींच नहीं सका। डर के मारे कि डाकू वापस आ जायेंगे और उसके बेटे को वहाँ देख लेंगे और साथ में पिता को भी पहचान लेंगे इसलिये पिता ने अपने बेटे का सिर काट लिया और उस सिर को वह घर ले गया।

डाकू जब घर लौट कर आये तो उन्होंने किसी को उस गड्ढे में पड़ा देखा। तो वे बहुत खुश हुए कि उन्होंने चोर को पकड़ लिया पर जब पास आ कर देखा तो उस चोर का तो सिर ही नहीं था।

यह देख कर वे बड़े दुखी हुए क्योंकि इस हालत में वे चोर को पहचान ही नहीं सके।

उन्होंने सोचा कि वे पहाड़ी की चोटी पर उस शरीर को टॉग देंगे और जब उसके शरीर को कोई लेने आयेगा तब वह उसको पकड़ लेंगे।

सो उन्होंने किसान के बेटे का शरीर एक पेड़ से लटका दिया और एक डाकू को वहॉ यह देखने के लिये पहरे पर लगा दिया कि वह यह देखे कि उस शरीर को लेने के लिये कौन आता है।

इधर पिता ने अपने बेटे का शरीर वापस लेना चाहा तो उसने देखा कि उस शरीर के पहरे पर तो एक डाकू बैठा है। इस हालत में तो वह उसका शरीर चुरा नहीं सकता था सो वह एक जादूगर से सलाह लेने गया कि वह उस शरीर को डाकू के पहरे से कैसे निकाले। जादूगर ने उसको बता दिया कि उसे क्या करना चाहिये।

पिता उसकी बात मान कर उस पहाड़ी की चोटी पर रात को गया और उस पेड़ के पास जा कर छिप गया जिस पर उसके बेटे का शरीर लटका था।

उसका दूसरा बेटा पहाड़ी के दूसरी तरफ जा कर छिप गया। वहॉ वह लकड़ी के दो टुकड़ों को आपस में टकरा कर ऐसी आवाज निकालने लगा जैसे दो भेड़ें आपस में सींग टकरा कर लड़ रहे हों।

जो डाकू उस लड़के के शरीर पर पहरे पर खड़ा था उसने सारा दिन से कुछ नहीं खाया था सो वह उस टकराहट की आवाज पर

उन भेड़ों को पकड़ने चला गया ताकि वह उनको भून कर खा सके।

जैसे ही वह अपनी जगह से खिसका पिता ने अपने बेटे के शरीर को पेड़ पर से नीचे उतारा और उसको ले कर वहॅा से भाग लिया।

जब डाकुओं को यह पता चला कि उनका पहरे में रखा शरीर गायब हो गया तो उन्होंने मरे हुए आदमी के साथियों से बदला लेने का निश्चय किया पर वे उनको कहीं मिले ही नहीं।

काफी दिनों के बाद एक दिन वे डाकू किसी काम से गॉव गये जहॉ उन्होंने सुना कि वहॉ का एक आदमी बहुत ही जल्दी अमीर हो गया था।

वह और कोई नहीं बल्कि इस मरे हुए बेटे का पिता था जो इन डाकुओं का पैसा निकाल कर अमीर हो गया था। उनकी यह भी समझ में आ गया कि यह वही आदमी है जिसने उनके घर में चोरी की है।

उन्होंने उस आदमी को मारने का एक प्लान बनाया। उन डाकुओं ने एक आदमी को छह ऐसी बोतलें बनाने का हुक्म दिया जो इतनी बड़ी हों जिनमें एक आदमी आ जाये और जिनके ऊपर ढक्कन भी हों। फिर हर डाकू ने अपने अपने हथियार लिये और उन बोतलों में जा कर बैठ गये।

उसके बाद उन्होंने उस बोतलें बनाने वाले को उसी अमीर आदमी के पास भेजा जो बहुत ही जल्दी अमीर बन गया था।

उन्होंने उस बोतलें बनाने वाले आदमी से कहा कि वह जा कर उस अमीर आदमी से यह कहे कि वह उसके घर में तब तक के लिये अपनी छह बोतलें रखना चाहता था जब तक कि उन बोतलों का मालिक उन बोतलों को लेने आता है क्योंकि उसके अपने घर में इतनी जगह नहीं थी कि वह उन बोतलों को अपने घर में रख सके।

उस अमीर आदमी ने मान लिया और वह बोतलें बनाने वाला उन छहों बोतलों को जिनमें डाकू बन्द थे उसके घर में रख गया। उसने वे बोतलें अपने शराब रखने वाले कमरे[82] में रखवा दीं।

उसी रात उस आदमी का एक नौकर शराब निकालने के लिये शराब रखने वाले कमरे में गया तो उसने उन नयी रखी बोतलों में से कुछ आवाजें आती सुनी। एक पूछ रहा था — "बाहर निकल कर घर के मालिक को मारने का समय हो गया क्या?"

यह सुन कर वह नौकर तो वहाँ से भाग लिया और जा कर मालिक को सब बताया। मालिक ने देखा कि वह तो पत्ते की तरह काँप रहा था। मालिक ने तुरन्त ही सिपाहियों को बुलवाया और उनको शराब वाले कमरे में ले जा कर उन छहों डाकुओं को पकड़वा दिया।

[82] Translated for the word "Cellar".

अब वह अमीर आदमी शान्ति से सारी जिन्दगी अमीर रहा। क्योंकि उन डाकुओं के बचे हुए सारे पैसे भी अब उसी के थे।

15 शेरों की घास[83]

एक बार एक बढ़ई[84] था जिसकी एक बहुत ही सुन्दर बेटी थी पर वे लोग बहुत गरीब थे। बेटी का नाम मारियोरसोला[85] था और क्योंकि वह बहुत सुन्दर थी उसका पिता कभी उसको घर से बाहर नहीं जाने देता था। यहाँ तक कि वह उसको खिड़की के बाहर भी नहीं झाँकने देता था।

इस बढ़ई के सामने वाले घर में एक सौदागर रहता था। यह सौदागर बहुत अमीर था और इसके एक ही बेटा था। उसके बेटे ने सुना कि उसके सामने वाले घर में रहने वाले बढ़ई की बेटी बहुत सुन्दर है।

बस वह उस बढ़ई के घर जा पहुँचा और उससे बोला — "मिस्टर ऐन्थोनी[86]? क्या आप मेरे लिये दो मेजें बना देंगे?"

बढ़ई बोला — "जनाब, अगर आप मुझे लकड़ी ला देंगे तो। क्योंकि मेरे पास लकड़ी खरीदने के लिये पैसे नहीं हैं। जैसे ही मुझे लकड़ी मिल जायेगी मैं आपके लिये दो मेजें बना दूँगा।"

वह चालाक लड़का उसके लिये लकड़ी ले तो गया पर यह लकड़ी उसके माता पिता की थी और उसके माता पिता यह बिल्कुल

[83] The Lions' Grass. Tale No 194. A folktale from Italy from its Nurra area.

[84] Translated for the word "Carpenter"

[85] Mariorsola – name of the carpenter's daughter

[86] Mr Anthony – name of the carpenter

नहीं चाहते थे कि उनका बेटा जो हमेशा उस बढ़ई की लड़की को देखने की कोशिश करता रहता था उस गरीब आदमी के घर जाये।

एक दिन मारियोरसोला ने सोचा कि शायद वह लड़का अब वहॉ से चला गया होगा सो वह सीढ़ियों से उतर कर नीचे आयी पर वह लड़का तो तब तक भी वहॉ से नहीं गया था सो पैपीनो[87] ने उसको देख लिया और देखते ही उसको चाहने लगा।

उसने बढ़ई से कहा — "मिस्टर ऐन्थोनी, मैं आपसे अपनी शादी के लिये मारियोरसोला का हाथ मॉग रहा हूॅ।"

बढ़ई बोला — "मेरे बच्चे, मेरे साथ मजाक मत करो। मारियोरसोला बहुत गरीब है आपके माता पिता उसको अपनी बहू नहीं बनायेंगे।"

पैपीनो बोला — "मैं मजाक नहीं कर रहा मिस्टर ऐन्थोनी। आप मेरे माता पिता की चिन्ता न करें। मारियोरसोला मुझे बहुत अच्छी लगती है और मैं अगर शादी करूॅगा तो बस उसी से शादी करूॅगा और किसी से नहीं।"

सो पैपीनो के माता पिता को बताये बिना ही दोनों की शादी की बात पक्की हो गयी। पैपीनो की मॉ को यह बात शहर वालों से पता चली कि उसके बेटे ने अपनी शादी पक्की कर ली है। मालूम पड़ते ही यह बात उसने अपने पति से कही।

---

[87] Peppino – the name of the son of the merchant

सौदागर बोला — "अब क्या करें, हमको तो अब इसे घर से बाहर निकलना ही पड़ेगा।"

जब रात को पैपीनो घर वापस आया तो उसके पिता ने उससे कहा — "तुम देख रहे हो कि मैं बूढ़ा हो रहा हूँ इसलिये अब तुमको जहाज़ में सामान ले कर व्यापार के लिये जाना चाहिये और व्यापार सीखना चाहिये।"

बेटा बोला — "ठीक है पिता जी। मुझे बता दीजियेगा कि कब जाना है मैं तभी चला जाऊँगा।"

अगले दिन पैपीनो ने मारियोरसोला से कहा — "मुझे बाहर व्यापार करने जाना है।"

बेचारी मारियोरसोला तो यह सुन कर रो पड़ी। पैपीनो ने उसको कुछ पैसे दिये और कहा — "खुश रहना और चिन्ता नहीं करना मैं जल्दी ही घर वापस लौटूँगा। और हॉ देखो मुझे कभी भूलना नहीं।"

अगले दिन जब वह अपनी यात्रा पर जा रहा था तो मारियोरसोला ने अपनी खिड़की से झॉका और पैपीनो को सड़क पर खड़े लोगों से कहते हुए सुना — "अच्छा विदा, मैं चलता हूँ और अब मैं एक साल बाद लौटूँगा।"

पैपीनो की आवाज सुन कर मारियोरसोला तो बेहोश सी हो गयी। उसको बिस्तर में लिटा दिया गया और उस दिन के बाद से तो वह बस ज़िन्दगी और मौत के बीच झूलने लगी।

एक साल बाद पैपीनो टौरैस के बन्दरगाह[88] पर उतरा और तुरन्त ही अपने घर सन्देश भेजा कि वह अपनी यात्रा से सही सलामत वापस आ गया है और उसके लिये एक गाड़ी भेज दी जाये ताकि वह वह सामान जो ले कर आया है उस गाड़ी में भर कर घर ला सके।

उसके माता पिता और दोस्त लोग सब उससे मिलने आये। उन सबसे मिलने के बाद उसने अचानक पूछा — "हमारी गली में और सब कैसे हैं?"

उसको बताया गया — "सब लोग ठीक हैं सिवाय ऐन्थोनी की बेटी मारियोरसोला के। अगर वह अभी मर नहीं गयी है तो वह बहुत जल्दी ही मर जायेगी। वह तो जबसे तुम गये हो तभी से बिस्तर में पड़ी है।" यह सुन कर पैपीनो तो वहीं बेहोश हो गया।

लोगों ने पैपीनो को उठा कर गाड़ी में रखा और घर ले गये। डाक्टर बुलाया गया। असल में मारियोरसोला के बारे में सुन कर उसका दिल टूट गया था पर डाक्टर को तो यह पता ही नहीं था कि उसको क्या हुआ है। पैपीनो की माँ भी बहुत परेशान थी।

व्यापार पर जाने से पहले पैपीनो ने केवल अपने दो करीब के दोस्तों को ही अपनी छिपी हुई शादी के बारे में बताया था।

[88] Port Torres

उसके ये दोस्त डाक्टर के पास गये और बोले — "डाक्टर, ऐसा हुआ है कि इसने अपने माता पिता को बताये बिना ही शादी कर ली थी। फिर यह व्यापार करने चला गया।

इसकी पत्नी तभी से बहुत ज़्यादा बीमार है जबसे यह व्यापार करने गया। इसकी बीमारी यही है। जब तक इसकी पत्नी ठीक नहीं होगी तब तक यह भी ठीक नहीं हो सकता।"

डाक्टर ने यह सब पैपीनो की माँ से कहा तो पैपीनो के पिता ने पैपीनो की माँ से कहा — "अब हम क्या करें?"

उसका पिता इस बात से बहुत ज़्यादा परेशान था कि उसके बेटे ने एक गरीब की लड़की से शादी कर ली थी।

पैपीनो की माँ बोली — "बजाय इसके कि हम अपने बेटे को मरने दें अच्छा तो यही होगा कि हम उसको उस बढ़ई की लड़की से शादी की इजाज़त दे दें।" और उसने तुरन्त ही किसी को यह पता करने के लिये भेज दिया कि मारियोरसोला कैसी थी।

मारियोरसोला की माँ ने जवाब दिया — "मारियोरसोला तो मरने वाली है। इतने समय तक जब तक वह बीमार थी तब तो तुम किसी ने उसके बारे में कभी पूछा नहीं और अब जब तुम्हारा अपना बेटा मर रहा है तब तुम लोग उसके बारे में पूछ रहे हो?"

पैपीनो की माँ बोली — "मैं उसको अपने घर ले जा रही हूँ।"

मारियोरसोला की माँ बोली — "मैं कहती हूँ कि उसको तुम यहीं रहने दो वह मर रही है।"

पर पैपीनो की माँ ने बहुत जिद की और वह मारियोरसोला को किसी तरह अपने घर ले गयी। वहाँ जा कर उसने उसको एक सोफे पर लिटा दिया जो पैपीनो के पलंग के सामने ही पड़ा था।

फिर उसने अपने बेटे को पुकारा — "पैपीनो, बेटा देखो कौन आया है। मारियोरसोला आयी है।"

ये शब्द सुन कर पैपीनो के बेजान से शरीर में कुछ जान आयी और वह अपने पलंग से नीचे उतरा। उसने भी पुकारा — "मारियोरसोला।"

उधर पैपीनो को अपने बिस्तर के पास देख कर मारियोरसोला भी धीरे धीरे ठीक होने लगी और धीरे धीरे दोनों ठीक हो गये। जब वे बिल्कुल ठीक हो गये तब शादी का जश्न मनाया गया।

पर कुछ दिनों बाद मारियोरसोला फिर बीमार पड़ गयी। वह बोली — "सुनो पैपीनो, अगर मैं मर जाऊँ तो मेरे मरे शरीर पर "औफिस औफ द डैड"[89] जरूर पढ़ देना।" और लो यह कह कर तो वह मर ही गयी।

सब उसको चर्च ले गये पर पैपीनो उसके ऊपर औफिस औफ द डैड पढ़ना भूल गया।

---

[89] "Office of the Dead" – The Office of the Dead or Office for the Dead is a prayer cycle of the Canonical Hours in the Catholic Church, Anglican Church and Lutheran Church, said for the repose of the soul of a decedent. It is the proper reading on All Souls' Day (normally November 2) for all souls in Purgatory, and can be a votive office on other days when said for a particular decedent. The work is composed of different psalms, scripture, prayers and other parts, divided into The Office of Readings, Lauds, Day time Prayers etc.

उसी रात उसने सोचा — "अरे मैं उसके ऊपर औफिस औफ द डैड पढ़ना तो भूल ही गया।" बस वह तुरन्त ही चर्च की तरफ भागा गया और चर्च का दरवाजा खटखटाया।

चर्च के चौकीदार ने पूछा — "कौन है?"

पैपीनो बोला — "मैं हूँ पैपीनो। दरवाजा खोलो"

चौकीदार आया और उसने दरवाजा खोला तो पैपीनो बोला — "उस मरी हुई लड़की की कब्र खोलो मैं तुमको दस क्राउन दूँगा।"

चौकीदार बोला — "यह मैं कैसे कर सकता हूँ लोगों ने सुन लिया तो?"

पैपीनो बोला — "किसी को पता नहीं चलेगा अभी तो घुप अँधेरा है।" सो उस चौकीदार ने उस लड़की की कब्र खोद दी और पैपीनो को वहाँ छोड़ दिया। पैपीनो घुटनों के बल बैठा और औफिस औफ द डैड पढ़ने लगा।

जब वह औफिस औफ द डैड पढ़ रहा था तो उसको चिंघाड़ने की आवाज सुनायी पड़ी और उसने दो शेर चर्च में आते देखे। आते ही शेरों ने लड़ना शुरू कर दिया। एक ने दूसरे को काटा और इस तरह एक शेर ने दूसरे शेर को मार दिया।

ज़िन्दा शेर वहाँ से भाग गया और चर्च के मैदान में उगी थोड़ी सी घास उखाड़ कर ले आया और उस मरे हुए शेर के मुँह में ठूँस दी और कुछ घास उसने उसके दाँतों पर भी मल दी। वह मरा हुआ शेर तो ज़िन्दा हो गया और फिर दोनों शेर वहाँ से भाग गये।

इतनी देर में पैपीनो ने औफिस औफ द डैड पढ़ लिया था सो उसने सोचा क्यों न मैं भी इस घास को मारियोरसोला पर आजमा कर देखूँ। शायद उस घास के इस्तेमाल से मेरी मारियोरसोला भी ज़िन्दा हो जाये।

यह सोच कर वह भी चर्च के बाहर गया और वहाँ से थोड़ी सी घास तोड़ लाया और उसको मारियारसोला के दाँतों पर मल दिया। तो लो वह तो ज़िन्दा हो गयी।

ज़िन्दा होते ही उसने पूछा — "पैपीनो, यह तुमने क्या किया? मैं तो अपने हालात से बहुत खुश थी।" पैपीनो ने उसको अपना शाल[90] ओढ़ाया और उसका हाथ पकड़ कर कब्र में से उठा कर घर ले जाने लगा।

तभी चर्च का चौकीदार भी आ गया। वह बोला — "यह सब यहाँ क्या हो रहा है? यह तुम क्या कर रहे हो? इस मरी हुई लड़की को कहाँ ले जा रहे हो?"

पैपीनो बोला — "मुझे जाने दो। यह मेरी पत्नी है और मेरी पत्नी ज़िन्दा है।"

चौकीदार तो यह देख कर बेहोश होते होते बचा। पैपीनो मारियोरसोला को घर ले गया। उसको बिस्तर पर लिटा दिया और उसको एक गर्म चादर ओढ़ा दी ताकि उसको थोड़ी गर्मी आ जाये।

[90] Translated for the word "Cloak". See its picture above.

उसके बाद वह भी उसके पलंग के पास बिछे एक पलंग पर सो गया।

अगली सुबह सात बजे जब पैपीनो की माँ ने दरवाजा खटखटाया तो मारियोरसोला ने पूछा — “कौन है?”

मरी हुई लड़की की आवाज सुन कर तो पैपीनो की माँ की साँस ऊपर की ऊपर और नीचे की नीचे रह गयी और वह नीचे दौड़ी। इस परेशानी में वह सीढ़ियों से नीचे गिर पड़ी। उसका सिर जमीन से टकरा गया और वह मर गयी।

कुछ देर बाद एक नौकरानी ऊपर गयी और उसने भी पैपीनो के कमरे का दरवाजा खटखटाया। मारियोरसोला ने फिर पूछा — “कौन है? क्या तुम अभी भी दरवाजा खटखटा रहे हो?”

यह नौकरानी भी मरी हुई लड़की की आवाज सुन कर डर गयी और सीढ़ियों से नीचे भागी। नीचे भागते समय वह भी गिर गयी। उसके सिर में भी चोट लगी और वह भी मर गयी।

कुछ देर बाद पैपीनो की आँख खुलीं तो मारियोरसोला बोली — “इस घर में तो कोई सो भी नहीं सकता। ये लोग हमेशा ही दरवाजा खटखटाते रहते हैं।”

पैपीनो ने आश्चर्य से पूछा — “और तुमने जवाब दिया?”

“हाँ मैंने जवाब दिया।”

पैपीनो परेशान सा बोला — “यह तुमने क्या किया? वे लोग तो यह सोच चुके थे कि तुम मर वुकी हो।”

वह तुरन्त उठा और उसने दरवाजा खोला तो उसने देखा कि उसकी माँ और नौकरानी दोनों सीढ़ियों के नीचे मरी पड़ी हैं। उसके मुँह से निकला — "ओह यह हमारे ऊपर क्या मुसीबत आ पड़ी। पर अभी मुझे इसके बारे में चुप ही रहना चाहिये नहीं तो मेरी पत्नी डर जायेगी।"

यह सोच कर वह तुरन्त ही चर्च भागा गया। वहाँ से वह ज़िन्दा करने वाली घास ले कर आया और अपनी माँ और नौकरानी दोनों को ज़िन्दा किया।

X X X X X X X

जब मारियोरसोला बीमार थी तो उसने सेन्ट गवीनो के चर्च[91] जाने की मन्नत माँगी थी कि अगर वह ठीक हो जायेगी तो वह सेन्ट गवीनो के चर्च जायेगी। सो एक दिन उसने पैपीनो से कहा कि वह सेन्ट गवीनो के चर्च जाना चाहती है।

पैपीनो ने कहा — "हाँ हाँ कल ही चलें?"

अगले दिन वे सेन्ट गवीनो के चर्च चल पड़े पर कुछ दूर जाने के बाद मारियोरसोला बोली — "पैपीनो, मैं अपनी अँगूठी तो खिड़की पर ही रखी भूल आयी हूँ।"

पैपीनो बोला — "अभी तुम उसकी चिन्ता छोड़ो और अभी तुम केवल चर्च चलो।"

---

[91] Church of Saint Gavino

मारियोरसोला बोली — "नहीं नहीं, मैं उसको लेने के लिये अभी वापस घर जा रही हूँ क्योंकि अगर कहीं हवा का कोई झोंका आ गया तो वह नीचे गिर जायेगी।"

पैपीनो ने उसको तसल्ली दी — "ठीक है। मैं उसको उठा कर ले आऊँगा पर इस बीच तुम समुद्र के पास नहीं जाना क्योंकि वहाँ मसकोवी के राजा[92] की नाव है।" कह कर पैपीनो मारियोरसोला की अँगूठी लाने चला गया।

पैपीनो के जाने के बाद मारियोरसोला उसके मना करने पर भी समुद्र की तरफ चल दी। वहाँ मसकोवी के राजा की नाव खड़ी थी। बस उन लोगों ने उसको देखा तो उसको पकड़ कर वहाँ से ले गये।

जब पैपीनो उसकी अँगूठी ले कर वापस आया तो उसको मारियोरसोला कहीं दिखायी नहीं दी। उसने चारों तरफ देखा भी पर फिर भी वह उसको कहीं दिखायी नहीं दी तो वह समुद्र में कूद पड़ा और तैर गया। थोड़ी दूर जा कर उसको एक नाव दिखायी दी तो उसने एक सफेद कपड़ा उसको दिखा कर हिलाया[93]।

नाव के मालिक ने कहा — "जल्दी करो। एक आदमी समुद्र में डूब रहा लगता है।" वे नाव वाले जल्दी जल्दी पैपीनो के पास आये और उसको समुद्र में से निकाल कर अपनी नाव पर चढ़ा लिया।

[92] The King of Muscovy

[93] Waving the white cloth is the symbol of Peace. This shows that he was not an enemy and wanted some help from the boat.

पैपीनो ने उनसे पूछा — “क्या तुम लोगों ने मसकोवी के राजा की नाव देखी है?”

वे बोले — “नहीं, हमने तो नहीं देखी।”

पैपीनो बोला — “तो मेहरबानी कर के मुझे मसकोवी ले चलो।” सो वे उसको मसकोवी ले गये।

वहाँ मसकोवी में तो मारियोरसोला रानियों की तरह सजी बैठी थी। जब पैपीनो ने उसको देखा तो वह उसकी तरफ देख कर मुस्कुराया पर मारियोरसोला ने उसकी तरफ से मुँह फेर लिया।

उसके पास तक पहुँचने का कोई रास्ता नहीं था सो वह वहाँ के राजा के पास गया और अपने आपको खाना परसने वाला बता कर अपना परिचय दिया। राजा ने उसको एक खाने की मेज पर काम करने की नौकरी दे दी।

जब उसने मारियोरसोला को मेज पर अकेला बैठा देखा तो उससे बोला — “अगर तुम मेरी मारियोरसोला हो तो तुम मुझे क्यों नहीं पहचानतीं?”

उसने बुरा सा मुँह बनाया और अपना मुँह दूसरी तरफ को घुमा लिया। उसने उसको तंग करने का पहले से ही एक प्लान बना रखा था। उसने राजा के एक नौकर से पैपीनो की तरफ इशारा करते हुए कहा — “ये सारी चाँदी की चम्मचें उठाओ और उस आदमी की जेब में डाल दो।”

जब उस नौकर ने वे चाँदी की चम्मचें पैपीनो की जेब में डाल दीं तो उसने उसे फिर हुक्म दिया — "इस आदमी की जेबों की तलाशी लो।"

पैपीनो की जेबों की तलाशी ली गयी तो उसकी जेबों में वे चम्मचें मिल गयीं जो उसकी जेबों में रखवायी गयी थीं।

वह बोली — "तो यह है वह चोर जिसने हमारी चम्मचें चुरायी हैं। इसे अभी जेल में डाल दो। फिर इसको हमारी खिड़की के सामने फाँसी लगा देना।"

पैपीनो के पास अभी भी वह शेरों वाली घास थी सो जब वह फाँसी के तख्ते की तरफ ले जाया जा रहा था तो उसने पादरी को थोड़ी सी वह घास दी और उससे कहा — "पादरी जी, मैं बिल्कुल बेकुसूर हूँ मैंने कोई चम्मच आदि नहीं चुरायी है।

इसलिये जब वे मुझे फाँसी लगायें तो आप ज़रा यह ख्याल रखें कि वे मेरी गर्दन न तोड़ें। फाँसी लगा कर वे मुझे आपके घर ले जायें और जब वे मुझे आपके घर में छोड़ कर चले जायें तो वहाँ आप यह घास मेरे दाँतों पर मल देना इससे मैं ज़िन्दा हो जाऊँगा।"

सो जब फाँसी लगाने का समय आया तो पादरी ने फाँसी लगाने वाले से कहा कि इसको ध्यान से फाँसी लगाना इसकी गर्दन न टूटने पाये।

फिर उसने राजा से इस बात की इजाज़त भी ले ली कि फाँसी के बाद वह उसके शरीर को अपने घर ले जायेगा।

फॉसी लगाने वाले ने फॉसी लगाते समय इस बात का ध्यान रखा कि उसकी गर्दन न टूटने पाये।

फॉसी के बाद पादरी उसके शरीर को अपनी मोनैस्टरी[94] ले गया। वहॉ जा कर पादरी ने उसकी दी हुई घास उसके दॉतों पर मल दी तो वह ज़िन्दा हो गया। पैपीनो ने पादरी को बहुत बहुत धन्यवाद दिया और अपने रास्ते चल दिया।

फिर वह सात राजाओं के राजा के देश[95] गया। इत्तफाक की बात कि उस देश के राजा की पत्नी तभी तभी मरी थी सो सारा महल दुख में डूबा हुआ था।

पैपीनो के लिये राजा को प्रभावित करने का यह बहुत अच्छा मौका था सो वह राजा के महल की तरफ चल दिया। वह महल पहुँचा और उसने महल के चौकीदार से कहा — "मैं महल के अन्दर जाना चाहता हूँ और राजा से मिलना चाहता हूँ।"

चौकीदार ने पूछा — "क्या तुम सोचते हो कि इस समय उनको तुम्हारी जरूरत है?"

पैपीनो ने फिर कहा — "मैंने कहा न कि उनको बोलो कि मैं अन्दर आना चाहता हूँ।"

[94] A monastery is the building or complex of buildings comprising the domestic quarters and workplace(s) of monastics, whether monks or nuns, and whether living in communities or alone (hermits).

[95] King of the Country of the Seven Crowns

चौकीदार तो उसको अन्दर नहीं जाने देना चाहता था पर जब पैपीनो ने बहुत ज़िद की तो वह उसको महल के अन्दर ले गया। वहॉ जा कर पैपीनो ने राजा से कहा — "मैजेस्टी, अगर आप मुझे रानी जी के साथ कुछ देर के लिये अकेला छोड़ दें तो आपकी बड़ी मेहरबानी होगी।"

राजा उसकी यह अनोखी बात सुन कर कुछ परेशान सा हो गया और तुरन्त ही कुछ बोल नहीं सका। पर इसमें अपना कुछ नुकसान न देखते हुए उसने सबको वहॉ से बाहर निकाल दिया और फिर खुद भी बाहर चला गया।

अब पैपीनो रानी की लाश के साथ बिल्कुल अकेला रह गया। उसने कमरे का दरवाजा बन्द किया, रानी के शरीर को ताबूत[96] में से बाहर निकाला और उसको पलंग पर लिटा दिया। उसने थोड़ी सी वह शेरों वाली घास निकाली और रानी के होठों के बीच में रख दी। कुछ पल में ही रानी ज़िन्दा हो गयी।

पैपीनो ने कमरे का दरवाजा खोल दिया और राजा को अन्दर बुला कर कहा — "मैजेस्टी, यह रही आपकी रानी।"

रानी को ज़िन्दा देख कर वहॉ मौजूद सारे लोग रोना तो भूल गये और खुशियॉ मनाने लगे।

[96] Translated for the "Coffin" – in which Christians keep their dead body to be buried. See its picture above.

उस दिन के बाद से राजा पैपीनो को हमेशा अपने साथ रखता था।

एक दिन राजा ने पैपीनो से कहा — "पैपीनो, मैं तो अब बूढ़ा हो रहा हूँ और तुम तो हमारे बेटे की तरह ही हो सो अपने सात ताज मैं तुमको देता हूँ।"

पैपीनो बोला — "कौन कौन राजा लोग इस सात ताजों के राजा बनने की रस्म में आयेंगे?"

राजा बोला — "स्पेन, इटली, फ्रांस, पुर्तगाल, इंगलैंड, आस्ट्रिया और मसकोवी के राजा आयेंगे। ये सात राजा हैं जो सात राजाओं के राजा को ताज पहनायेंगे।"

"तब मैं यह ताज स्वीकार करता हूँ।"

सब राजाओं को बुलावा भेज दिया गया। मसकोवी का राजा अपनी पत्नी के साथ आने के लिये तैयार हुआ। उसकी पत्नी मारियोरसोला ने इस खास मौके के लिये एक खास पोशाक बनवायी थी।

ताजपोशी की रस्म के बाद एक दावत का इन्तजाम था। इस दावत के बाद सात ताजों के ताज वाला राजा पैपीनो बोला — "अब हम सब एक एक कहानी सुनायेंगे।"

सो हर एक ने कोई न कोई कहानी सुनायी। आखीर में पैपीनो बोला — "अब मैं एक कहानी सुनाता हूँ पर यह कहानी नहीं है सच

है। जब तक मैं अपनी कहानी पूरी न कर लूँ कोई इस मेज पर से उठेगा नहीं।"

तब पैपीनो ने अपनी पूरी कहानी सुनायी – मारियोरसोला से मुलाकात से ले कर, अपनी शादी से ले कर, अब तक की। कहानी सुन कर मारियोरसोला तो बहुत बेचैन हो गयी।

उसने सिर दर्द का बहाना किया और वहाँ से जाने की इजाज़त माँगी पर पैपीनो ने उसको हाथ हिला कर बैठने का इशारा किया और बोला — "नहीं, कोई यहाँ से नहीं उठेगा।"

अपनी कहानी के आखीर में उसने मसकोवी के राजा से पूछा — "ऐसी स्त्री को क्या सजा मिलनी चाहिये?"

मसकोवी का राजा बोला — "उसको तो सबसे पहले फाँसी पर चढ़ा देना चाहिये, फिर उसे जला देना चाहिये और फिर उसकी राख को हवा में उड़ा देना चाहिये।"

पैपीनो ने हुक्म दिया "ऐसा ही किया जाये। मसकोवी के राजा की पत्नी को पकड़ लो।"

मसकोवी के राजा की पत्नी को पकड़ लिया गया और पैपीनो के लोग उसको फाँसी के फन्दे की तरफ ले चले। पैपीनो अब सात ताजों का बादशाह था।

16 ननों की कौनवैन्ट और साधुओं की मोनैस्टरी[97]

एक बार एक दर्जी था जिसकी एक बहुत ही सुन्दर बेटी थी जिसका नाम था जीनी[98]। वह सुन्दर होने के साथ पढ़ी लिखी भी थी। वहीं उसके घर के पास में एक नौजवान भी रहता था जिसका नाम था जौनी[99]।

जौनी जीनी की सुन्दरता से इतना प्रभावित था कि वह हमेशा उसके पीछे पीछे घूमता रहता था और जीनी के पास उससे बचने का कोई रास्ता नहीं था।

जब वह जौनी की इन हरकतों से तंग आ गयी तो एक दिन उसने अपनी सहेलियों से कहा — "क्या हम लोगों को कोई कौनवैन्ट[100] नहीं ढूँढ लेना चाहिये जहॉ हम लोग सुरक्षित रह सकें?"

उसकी सहेलियॉ बोलीं — "हॉ, शायद हम लोगों को ऐसा ही करना चाहिये।"

---

[97] The Convent of Nuns and the Monastery of Monks. Tale No 195. A folktale from Italy from its Nurra area.

[98] Jeannie – name of the daughter of the tailor

[99] Johnny – the name of the young man living opposite to Jeannie's house

[100] Convent is a community of people devoted to religious life under a superior – normally of females. Wherever they live that building is also called Convent.

जीनी की ये सहेलियाँ राजाओं की, नाइट्स[101] की और कुलीन लोगों की बेटियाँ थीं। इन सबने जा कर अपने अपने पिताओं से कहा — "पिता जी, हम लोग एक कौनवैन्ट बनाने जा रहे हैं।"

पिता बोले — "क्या तुम लोग केवल अपने लिये एक कौनवैन्ट बनाओगी?"

पर इन लड़कियों के इरादे पक्के थे सो उन्होंने शहर से दूर एक जगह देखी, अपने साथ काफी खाना पीना लिया और ये सारी बारह लड़कियाँ वहाँ कौनवैन्ट में जा कर रहने लगीं। जीनी को उन्होंने अपना ऐबैस[102] बना लिया।

अब जौनी जो जीनी को बहुत प्यार करता था उसने अपने दोस्तों से कहा — "मैंने जीनी को बहुत दिनों से नहीं देखा। कहाँ हो सकती है वह?"

वे बोले — "यह तुम हमसे पूछ रहे हो? यह तो हमसे ज़्यादा तुमको मालूम होना चाहिये।"

जौनी बोला — "मुझे नहीं मालूम कहाँ है वह। अब क्योंकि मेरी प्रेमिका खो गयी है तो मैं तो साधु[103] बन जाऊँगा। क्यों न हम एक मोनैस्टरी बना लें? क्या विचार है?"

---

[101] A Knight is a person granted an honorary title of knighthood by a monarch or other political leader for service to the Monarch or country, especially in a military capacity.

[102] Abbess is the woman who is the superior in a convent of nuns.

[103] Translated for the word "Monk"

सबने हॉ कर दी सो उन्होंने भी एक मोनैस्टरी बना ली। उनकी यह मोनैस्टरी लड़कियों के कौनवैन्ट के पास ही थी। वे सब जल्दी ही उस मौनेस्टरी में चले गये।

एक रात ननों की कौनवैन्ट में खाने का सामान खत्म हो गया। ऐबैस जीनी खाने के सामान की देखभाल करती थी। उसने खिड़की से बाहर झॉका तो उसे दूर एक रोशनी चमकती दिखायी दी सो वह कुछ खाना पीना पाने की आशा में उधर की तरफ ही चल दी।

वह रोशनी एक घर से आ रही थी। वहॉ पहुँच कर उसने उस घर का दरवाजा खटखटाया तो किसी ने कोई जवाब नहीं दिया। जब वहॉ उसे कोई जवाब नहीं मिला तो उसने दरवाजा देखा तो वह खुला था सो वह उस घर के अन्दर घुस गयी। पर उसको यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि घर के अन्दर तो कोई भी नहीं था।

पर वहॉ बारह आदमियों के लिये एक खाने की मेज लगी थी – बारह प्लेटें, बारह गिलास, बारह चम्मचें, बारह कॉटे, बारह नैपकिन और बारह बड़े कटोरे मैकेरोनी[104] से भरे।

जीनी ने मैकेरोनी के वे बारह बड़े कटोरे अपनी टोकरी में रखे और अपने कौनवैन्ट की तरफ चल दी। कौनवैन्ट पहुँच कर उसने वे बारह कटोरे अपनी खाने की मेज पर रखे और खाने की घंटी

[104] Macaroni – a very famous and common dish of Italy. See its picture above.

बजा दी। सब लड़कियाँ आ गयीं और जीनी ने सबको एक एक कटोरा मैकेरोनी दे दी।

यह घर जहाँ से जीनी ने मैकेरोनी के कटोरे लिये थे वे उन बारह लड़कों की मोनैस्टरी थी। जब वे लड़के घर लौटे तो उन्होंने देखा कि उनकी खाने की मेज पर से तो मैकेरोनी के कटोरे गायब थे।

तो उनका फादर सुपीरियर[105] जौनी बोला — "यह कौन मैना है जो हमारा शाम का खाना ले गयी है। कल को किसी को इस मेज का पहरा देना पड़ेगा।"

सो अगली रात जौनी ने एक लड़के को यह देखने के लिये मौनेस्टरी में छोड़ दिया कि वह यह देखे कि हमारा खाना कौन चुरा कर ले गया।

जौनी ने उससे कहा कि जब तुम चोर को देखो तो बस सीटी बजा देना। जैसे ही हम तुम्हारी सीटी की आवाज सुनेंगे हम सब दौड़े आ जायेंगे। और हाँ देखना सो नहीं जाना।

पर वह साधु तो बहुत जल्दी ही गहरी नींद सो गया। जीनी उस दिन फिर आयी और फिर उसने मेज पर बारह कटोरे मैकेरोनी रखी देखी। उसने फिर चारों तरफ देखा तो उसको सोता हुआ एक साधु दिखायी दिया।

[105] Father Superior is the Head in Monastery, as Abbess in Convent

उससे उसको कोई खतरा महसूस नहीं हुआ सो उसने बारहों कटोरे उठा कर अपनी टोकरी में रख लिये। फिर उसने एक बर्तन लिया और उसमें से तेल निकाल कर उस सोते हुए साधु के मुँह पर मल दिया और वहाँ से चली आयी।

वह कौनवैन्ट पहुँची और वहाँ के दरवाजे की घंटी बजायी। दरवाजा खुला, वह अन्दर गयी और सबने मिल कर भर पेट खाना खाया।

जब फादर सुपीरियर ने उस साधु का काला चेहरा देखा तो बोला — "तुम तो बड़े अच्छे चौकीदार निकले।"

अगली रात एक और साधु को पहरे पर तैनात किया गया पर वह भी सो गया और जब वह जागा तो उनके मैकेरोनी के भी सब कटोरे जा चुके थे और उस पहरेदार का मुँह भी काला था।

यह सब ग्यारह रात तक चलता रहा। हर रात एक नया साधु पहरे पर तैनात किया जाता, हर रात वह सो जाता, हर रात उनके मैकेरोनी के कटोरे गायब हो जाते और हर सुबह उस साधु का मुँह काला मिलता।

बारहवीं रात को फादर सुपीरियर जौनी ने खुद पहरा देने का निश्चय किया। जौनी ने सोने का बहाना किया और एक तरफ को बैठ गया ताकि वह सब देख सके।

उस दिन भी जीनी आयी और बारह मैकेरोनी के कटोरे अपनी टोकरी में भर कर ले जाने लगी तो वह उस पहरेदार का मुँह काला करने के लिये भी आयी।

जैसे ही उसने तेल ले कर उसका मुँह काला करना चाहा कि जौनी उठ खड़ा हुआ और बोला — "रुको, आज तुम यह सब यहाँ से नहीं ले जा सकतीं। मैं तुमको हाथ भी नहीं लगाऊँगा अगर तुम मुझे वे ग्यारह नन ला कर दे दो तो।"

जीनी बोली — "ठीक है पर एक शर्त पर। तुम उनका बाल भी बाँका नहीं करोगे।"

"पक्का वायदा।"

ऐबैस जीनी अपने मैकेरोनी के कटोरे ले कर कौनवैन्ट लौट गयी। वहाँ सबने खाना खाया। फिर वह बोली — "मेरी बहिनों सुनो। आज हमको साधुओं की मोनैस्टरी जाना पड़ेगा।"

सबने एक साथ पूछा — "वहाँ वे हमारा क्या करेंगे?"

जीनी ने उनको विश्वास दिलाया — "उन्होंने मुझसे वायदा किया है कि वे हमको कोई नुकसान नहीं पहुँचायेंगे इसलिये तुम लोग डरो नहीं।"

सो खाना खा कर वे सब मौनेस्टरी चल दीं और वहाँ जा कर कहा — "हमको यहाँ एक कमरा चाहिये जहाँ हम रह सकें।"

फादर सुपीरियर ने उनको एक कमरा दिखा दिया जहाँ बारह पलंग पड़े हुए थे। वे सब वहाँ सोने चली गयीं।

जब दूसरे साधु लौटे तो उन सबका खाना जा चुका था। वे बोले — "अरे यह क्या? फादर भी हमारा खाना नहीं बचा सके?"

फादर सुपीरियर ने कहा — "चुप रहो। हमने उस चोर मैना को पकड़ लिया है जो तुम सबका मुँह काला कर के चली गयी थी।"

"क्या तुम ठीक कह रहे हो?"

फादर सुपीरियर जौनी बोला — "हॉ और उसके साथ ग्यारह और भी हैं। और अब वे सब हमारे लिये मैकेरोनी पकायेंगी।"

यह कह कर वह गया और ननों के कमरे का दरवाजा खटखटाया और कहा — "उठो और हमारे लिये मैकेरोनी पकाओ।"

ऐबैस जीनी ने कहा — "मेरी नन बिना संगीत के खाना नहीं बना सकतीं।"

साधु बोले — "ठीक है हम उनके लिये संगीत बजायेंगे।"

उस समय हालॉकि सारे साधु भूखे थे फिर भी उन्होंने बिगुल बजाने शुरू किये। किसी ने वायलिन[106] बजाया, किसी ने ड्रम बजाया

पर उस समय में बजाय रात का खाना बनाने के सब ननों ने अपने अपने गद्दे नीचे खिड़की से बाहर फेंक दिये और चादरें खिड़की से बॉध कर नीचे गद्दों पर कूद गयीं। घर का दरवाजा बाहर से बन्द किया और अपने कौनवैन्ट भाग गयीं।

[106] Violin – a string musical instrument. See its picture above.

इस बीच वे भूखे साधु घर के अन्दर बिगुल, वायलिन, ड्रम आदि बजाते रहे। कुछ देर बाद वे बोले — "अरे इतनी देर हो गयी मैकेरोनी का क्या हुआ? क्या वह अभी तक नहीं पकी?"

उन्होंने जा कर ननों के कमरे का दरवाजा खटखटाया तो उनको वहाँ से कोई जवाब नहीं मिला। उन्होंने दरवाजा तोड़ दिया। उन्होंने देखा कि कमरा तो खाली था। न उसमें गद्दे थे, न चादरें थीं और न एक भी नन।

सब साधु एक साथ बोले — "उन्होंने हमारे साथ चाल खेली हमें उनकी इस चाल का जवाब देना पड़ेगा।"

अगले दिन उन्होंने एक बक्सा[107] बनवाया और उसमें उन्होंने अपने फादर सुपीरियर जौनी को बन्द कर दिया। वे सब उस बक्से को ले कर ननों के कौनवैन्ट गये और रात होने तक बाहर छिपे रहे।

रात होने पर एक साधु उस बक्से को कौनवैन्ट के दरवाजे तक घसीटता हुआ ले गया। वहाँ का दरवाजा खटखटाया और बोला — "क्या आप हमारे इस बक्से को रात भर के लिये रख लेंगी?"

उन्होंने हाँ कर दी तो वह साधु उस बक्से को कौनवैन्ट के अन्दर छोड़ आया।

[107] Translated for the word "Cask"

पर ऐबैस को कुछ दाल में काला लगा तो उसने सोचा कि बस अब यह खेल खत्म। खाने की मेज पर उसने अपनी सहेलियों से कहा — “बहिनों, पता नहीं यहाँ कब क्या हो जाये पर डरो नहीं।”

तभी जौनी बक्से में से निकला और ऊपर पहुँच कर खाने के कमरे का दरवाजा खटखटाया।

ननों ने पूछा — “कौन है?”

जौनी बोला — “दरवाजा खोलो।”

एक नन ने दरवाजा खोला और फादर सुपीरियर अन्दर आये।

नन ने कहा — “गुड ईवनिंग फादर। आप बैठें और इसे अपना ही घर समझें।”

फादर सुपीरियर जौनी बैठ गया और उसने उनके साथ खाना खाया। खाते समय वह उनसे इधर उधर की बातें भी करता रहा। जब खाना खत्म हो गया तो उसने अपनी जेब से एक बोतल निकाली और उन सब ननों को देते हुए कहा — “आप लोग यह पियें।”

उन सब ननों ने उस बोतल में से एक एक घूँट पी पर ऐबैस ने अपना गिलास पास में ही फेंक दिया इसलिये सारी नन तो सो गयीं पर ऐबैस जीनी ने सोने का केवल बहाना ही किया।

जौनी ने जब देखा कि सब नन सो गयीं तो उसने उन सारी ननों के कमर में रस्सियों बाँध दीं ताकि वह उन सबको खिड़की के रास्ते

नीचे उतार सके। फिर वह खिड़की के पास गया और अपने साथी साधुओं को बुलाया।

पर जीनी उसके पीछे पीछे पहुँच गयी और जैसे ही वह साधुओं को बुलाने के लिये खिड़की पर झुका उसने उसके पैर पकड़ कर उसको खिड़की के बाहर फेंक दिया। बेचारा जौनी सिर के बल जमीन पर गिर पड़ा।

फिर जीनी ने अपनी सहेलियों को जगाया और कहा — "उठो जल्दी करो, हमें यहाँ से बहुत जल्दी बाहर निकलना है। हम अपने अपने पिताओं को लिखेंगे कि वे हमें यहाँ से बुलवा लें। हम लोग अब नन बन कर थक चुके हैं।"

उसके बाद वे सब नन अपने अपने घर चली गयीं। उधर साधुओं ने भी मोनैस्टरी छोड़ दी और वे भी अपने अपने घर चले गये।

पर जौनी ने जीनी से प्यार करना नहीं छोड़ा। अपने सिर पर पट्टियाँ बाँधे वह जीनी के पिता के पास गया और उससे कहा कि वह उसकी बेटी से शादी करना चाहता है। काफी ना नुकुर के बाद जीनी जौनी से शादी करने के लिये राजी हो गयी।

शादी से पहले उसने अपने साइज़ की चीनी की एक गुड़िया बनवायी और शादी की रात उसने अपने पति से कहा — "यह मोमबत्ती बुझा दो क्योंकि कौनवैन्ट मे रहते रहते अब मुझे अँधेरे में सोने की आदत हो गयी है।" जौनी ने मोमबत्ती बुझा दी।

जब अँधेरा हो गया तो वह अपने सोने के कमरे में गयी और उसने अपने बिस्तर में तो वह चीनी की गुड़िया लिटा दी और वह खुद पलंग के नीचे लेट गयी। वहाँ से वह उस चीनी की गुड़िया को एक रस्सी से कठपुतली की तरह से हिला सकती थी।

रात हुई तो जौनी उस कमरे में सोने के लिये आया। उसके एक हाथ में तलवार थी।

आते ही बोला — "जीनी। क्या तुमको याद है कि तुमने मेरे साथ क्या क्या किया था? क्या तुम्हें याद है कि तुमने रात को मेरा खाना चुराया?"

चीनी की गुड़िया ने हाँ में सिर हिलाया।

"क्या तुमको यह भी याद है कि तुमने मुझे खिड़की के बाहर फेंका और मेरी खोपड़ी तोड़ दी?"

चीनी की गुड़िया ने फिर अपना सिर हाँ में हिला दिया।

"और तुम्हारी इतनी हिम्मत कि तुम उसको मान भी रही हो?" कह कर उसने अपनी तलवार निकाली और उस चीनी गुड़िया की छाती में भोंक दी।

फिर वह बोला — "जीनी, मैंने तुम्हें मार दिया। अब मैं तुम्हारा खून पियूँगा।" कह कर वह अपनी तलवार चाटने लगा।

तलवार चाटते हुए वह बोला — "जीनी तुम जब तक ज़िन्दा थीं तब भी तुम मीठी थीं और अब जब तुम मर गयी हो तब भी तुम मीठी हो।"

यह कह कर वह तलवार उसने अपने दिल की तरफ की और बोला — “पर कुछ भी है मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकता इसलिये तुमको मार कर अब मैं खुद को भी मार रहा हूँ।”

पर तभी जीनी नीचे से चिल्लायी — “रुको जौनी, तुम अपने आपको मत मारो। मैं ज़िन्दा हूँ।”

और जीनी पलंग के नीचे से बाहर निकल कर जौनी से लिपट गयी। उस दिन के बाद से वे कभी नहीं लड़े और प्रेम से ही रहते रहे।

17 सेन्ट ऐन्थोनी की भेंट[108]

यह बहुत पहले की बात है जब दुनियाँ में आग नहीं हुआ करती थी। लोग बहुत ठंड में रहा करते थे। क्योंकि वे उस ठंड को सहन नहीं कर पा रहे थे सो एक दिन वे सेन्ट ऐन्थोनी के पास गये। सेन्ट ऐन्थोनी खुद उस समय सहायता माँगने के लिये रेगिस्तान में गये हुए थे।

सेन्ट ऐन्थोनी को लोगों पर दया आ गयी। पर आग तो क्योंकि नरक में रहती थी इसलिये उन्होंने नीचे जाने का विचार किया और वहाँ से आग लाने का प्लान बनाया।

सेन्ट बनने से पहले सेन्ट ऐन्थोनी सूअरों के झुंड चराया करते थे। उनके सूअरों के झुंड में से एक सूअर का बच्चा उनका बड़ा वफादार था। वह कभी उनका साथ नहीं छोड़ता था। वह जहाँ भी जाते थे वह भी वहीं उनके पीछे पीछे जाता था।

सेन्ट ऐन्थोनी के पास एक सौंफ के पेड़ की डंडी का डंडा[109] भी था सो सेन्ट ऐन्थोनी अपने उस सूअर के बच्चे और सौंफ के डंडे को ले कर नरक की सीढ़ियों पर पहुँचे और जा कर नरक का दरवाजा खटखटाया।

---

[108] St Anthony's Gift. Tale No 197. A folktale from Italy from its Logudoro area.

[109] Translated for the words "Fennel staff". See Fennel's plant picture above.

“दरवाजा खोलो। दरवाजा खोलो। मुझे बहुत ठंड लग रही है। मुझे थोड़ी गर्मी चाहिये।”

नरक के दरवाजे पर खड़े शैतानों ने देखा कि यह तो कोई पापी नहीं है बल्कि यह तो एक सेन्ट है सो वे बोले — “नहीं नहीं। तुम अन्दर नहीं आ सकते। तुम तो एक सेन्ट हो। हम तुमको जानते हैं। तुम पापी नहीं हो। तुम यहॉ नहीं आ सकते।”

सेन्ट ऐन्थोनी ने उनसे प्रार्थना की — “पर मुझे अन्दर तो आने दो। मुझे बहुत ठंड लग रही है।” उनका सूअर भी वहीं दरवाजे पर अपना पैर अड़ाये खड़ा रहा।

शैतानों ने कहा — “यह सूअर तो अन्दर आ सकता है पर तुम नहीं।” कह कर उन्होंने बस इतना थोड़ा सा ही दरवाजा खोला जिसमें से केवल वह सूअर ही अन्दर आ सकता था। जैसे ही सूअर अन्दर आ गया उन्होंने दरवाजा बन्द कर दिया।

अब जैसे ही सेन्ट ऐन्थोनी का सूअर नरक के अन्दर गया वह तो सारे नरक में इधर से उधर घूमने लगा, चीज़ें फेंकने लगा, शोर मचाने लगा।

शैतान उसके पीछे जलती हुई डंडियॉ ले कर भागने लगे। वे उसको कुछ कुछ चीज़ें उठा कर मारते भी थे पर वे उसको किसी तरह भी काबू में नहीं कर पा रहे थे।

सब शैतानों को उसने पागल कर रखा था और वे शैतान भी न तो उसको पकड़ ही पा रहे थे और न ही उसको नरक से बाहर निकाल पा रहे थे।

आखिर वे सेन्ट के पास आये जो अभी भी नरक की सीढ़ियों पर खड़ा था। वे उससे बोले — "तुम्हारा वह सूअर नरक में बहुत शोर शराबा मचा रहा है। अन्दर आ कर उसको बाहर ले जाओ।"

सो सेन्ट ऐन्थोनी नरक के अन्दर गये और अपने डंडे से सूअर को छुआ। सूअर उसी समय शान्त हो गया।

सेन्ट ऐन्थोनी बोले — "जब तक मैं यहाँ हूँ क्या मैं कुछ देर के लिये यहाँ बैठ सकता हूँ और यहाँ की गरमी ले सकता हूँ?" और वह आग की तरफ अपने हाथ बढ़ा कर एक कौर्क[110] के थैले के ऊपर बैठ गये।

हर कुछ मिनट बाद कोई न कोई शैतान उनके पास से गुजर जाता जो लूसीफ़र[111] को जा कर धरती पर की किसी न किसी आत्मा की खबर ले जा कर उसको देता कि फलाँ शैतान ने फलाँ आत्मा को पाप में लगा दिया। और हर बार सेन्ट ऐन्थोनी उसकी पीठ पर अपना सोंफ का डंडा मारते।

---

[110] Cork is a very light material made of a tree bark grown for commercial use. It can float over water. It is mostly used to make a stopper to bottles but can be used to make many things.

[111] Lucifer word has been mentioned in KJV of Bible only once, but otherwise has appeared in several Christian religious books – all meaning a good man. Otherwise as a proper noun it refers to Devil.

शैतान बोले — "हमें इस तरह की हॅसी अच्छी नहीं लगती। अपना यह डंडा अपने पास ही रखो।"

यह सुन कर सेन्ट ऐन्थोनी ने अपना डंडा ऊपर उठाया और उसकी नोक को जमीन की तरफ करते हुए अपने सहारे खड़ा कर लिया।

इतने में एक शैतान चिल्लाता हुआ आया और बोला — "लूसीफ़र लूसीफ़र। एक आत्मा और।" और वह जल्दी में सेन्ट ऐन्थोनी के डंडे से ठोकर खा कर मुँह के बल गिर पड़ा।

शैतान बोले — "यह ठीक है। तुमने इस डंडे से हमको काफी परेशान किया है अब हम इस डंडे को जला देंगे।" कह कर उन्होंने उस डंडे को उठाया और आग में फेंक दिया।

उसी समय सेन्ट ऐन्थोनी के सूअर ने फिर से नरक में शोर शराबा मचाना शुरू कर दिया। वह लकड़ी के टुकड़ों को आग में से निकाल कर और वहाँ पड़ी दूसरी चीज़ों को इधर उधर फेंकने लगा।

सेन्ट ऐन्थोनी बोले — "अगर तुम चाहते हो कि मैं इस सूअर को शान्त रखूँ तो तुमको मेरा डंडा वापस देना पड़ेगा।"

यह सुन कर उन्होंने उनको उनका डंडा वापस कर दिया और इसके बाद उनका वह सूअर भी शान्त हो गया।

अब वह डंडा तो सोंफ़ का था और सोंफ़ की लकड़ी का गूदा थोड़ा सा मुलायम होता है। अगर राख का कोई जलता हुआ कण

भी उस पर आ गिरे तो वह उसमें चुपचाप सुलगता रहता है। वह आग बाहर से नहीं देखी जा सकती।

इसलिये शैतानों को यह पता ही नहीं चला कि सेन्ट ऐन्थोनी की उस सौंफ़ के डंडे में आग थी। शैतानों को उपदेश दे कर सेन्ट ऐन्थोनी ने अपना डंडा उठाया अपने सूअर को लिया और नरक से चल दिये। सेन्ट ऐन्थोनी के वहाँ से चले जाने पर शैतानों ने चैन की साँस ली।

सेन्ट ऐन्थोनी नरक से धरती पर आये। उन्होंने अपना डंडा उठाया और आग की तरफ के सिरे की तरफ से उसको चारों तरफ घुमाते हुए लोगों को आशीर्वाद देते हुए उसमें भरी हुई चिनगारियाँ चारों तरफ बिखेर दीं। फिर उन्होंने गाया —

आग ओ आग, हर जगह के लिये
मैं सारी दुनियाँ को यह आग देता हूँ ताकि तुम लोग कभी काँपो नहीं

उस समय के बाद से आदमी को आराम देने के लिये आग धरती पर आ गयी। सेन्ट एन्थोनी अपना ध्यान करने के लिये फिर से रेगिस्तान चले गये।

18 मार्च और चरवाहा[112]

एक बार की बात है कि एक चरवाहा था जिसके पास समुद्र के किनारे पर रेत के जितने कण होते हैं उससे भी ज़्यादा भेड़ और मेमने थे। इतने सारे जानवरों को देख कर उसको हमेशा यही डर लगा रहता था कि कहीं उसका कोई जानवर मर न जाये।

जाड़े का मौसम लम्बा होता था और वह चरवाहा हमेशा ही साल के महीनों से प्रार्थना किया करता था — "ओ दिसम्बर, मेरे ऊपर मेहरबान रहना। ओ जनवरी, मेरे किसी जानवर को जमा कर नहीं मारना। ओ फरवरी, तुम मेरे लिये अच्छे से रहना। मैं तुम्हारी हमेशा पूजा करूँगा।"

महीने उस चरवाहे की प्रार्थना सुनने के लिये रुक जाते और वह चरवाहा उनकी जो भी छोटी सी प्रार्थना करता वे उन प्रार्थनाओं की बहुत तारीफ करते और उसकी प्रार्थनाओं को स्वीकार कर लेते।

फिर वे न तो बारिश करते, न ओले बरसाते, न किसी जानवर को किसी तरह बीमार करते और इस तरह उसके वे भेड़ और मेमने सारे जाड़े बिना किसी परेशानी के चरते रहते।

[112] March and the Shepherd. Tale No 198. A folktale from Italy from its Corsica area.

और फिर आता मार्च का महीना। साल का सबसे अच्छा महीना। उस महीने में सारे काम आराम से होते रहते। अब मार्च के महीने के आखिरी दिन आ पहुँचे थे सो चरवाहा सोच रहा था कि अब उसकी चिन्ता खत्म हो गयी थी क्योंकि उसके सब जानवर अब तक ज़िन्दा थे।

अब वे अप्रैल के किनारे पर खड़े थे। अप्रैल का महीना जो वसन्त की शुरूआत थी और अब तक उस चरवाहे के सारे जानवर सुरक्षित थे। इसलिये अब चरवाहे ने महीनों की प्रार्थना करना बन्द कर दिया और नाचना गाना शुरू कर दिया — "ओ छोटे मार्च, ओ मार्च मेरे बेटे। जो मेरे जानवरों के लिये एक डर था वह तो अब चला गया।

अब तुमसे कौन डरता है? क्या मेमने? वे डरते होंगे पर कम से कम मैं तो नहीं डरता। आखिर वसन्त आ गया। अब तुम मुझे कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकते। अब तुम जहाँ चाहे जा सकते हो।"

उस कृतघ्न चरवाहे की यह अपमान भरी बात सुन कर मार्च महीने का खून खौल गया। उसने अपने बरसाती कोट का बटन बन्द किया और अपने भाई अप्रैल के घर की तरफ दौड़ गया और उससे जा कर बोला —

अप्रैल अप्रैल मेरा एक काम कर दो, अपने भाई को तीन दिन उधार दे दो
इस चरवाहे को सजा देने के लिये जो पागलों जैसी बात करता है

अप्रैल ने जो अपने भाई को बहुत प्यार करता था उसकी प्रार्थना सुन कर उसको अपने तीन दिन उधार दे दिये। अपने भाई से तीन दिन उधार ले कर मार्च ने सबसे पहला काम तो यह किया कि सारी दुनियॉ में बहुत तेज़ हवाऐं चला दीं। दुनियॉ भर के तूफान उठा दिये।

वे सब हवाऐं और तूफान उस चरवाहे की भेड़ों और मेमनों को परेशान करने लगे। पहले दिन चरवाहे की सारी भेड़ें बीमार पड़ गये। दूसरे दिन उसके मेमनों की बारी थी और तीसरे दिन तो उसके झुंड में से एक जानवर भी ज़िन्दा नहीं बचा।

बस अब चरवाहे के पास उसकी ऑखें थीं जो बराबर ऑसू बहाये जा रही थीं।

19 जौन बालेन्टो[113]

एक बार एक बहुत छोटे से शहर में एक चमार रहता था। वह बहुत पुराने पुराने जूते ठीक करता था। उसका नाम था जौन बालैन्टो। हालाँकि वह साइज़ में बहुत छोटा था पर अक्लमन्द बहुत था।

एक दिन जब वह एक जूता सिल रहा था तो गलती से जूता सिलने वाली सुई उसकी उँगली में चुभ गयी। उसके मुँह से एक चीख सी निकल गयी "उफ़।"

उसकी यह चीख उसके पड़ोसियों ने सुन तो ली पर उस पर उन्होंने कोई ध्यान नहीं दिया। उन्होंने चिन्ता ही नहीं की कि जौन बालैन्टो को क्या हुआ।
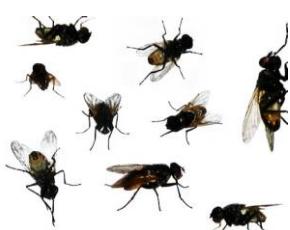
पर जौन बालैन्टो की चीखों ने वहाँ उड़ती हुई सारी मक्खियों की उत्सुकता जगा दी। वे तुरन्त ही उड़ कर जौन बालैन्टो के पास यह देखने के लिये आ गयीं कि उसको क्या हो गया।

उन मक्खियों में से एक मक्खी जौन बालैन्टो के घाव पर बैठ गयी और उसने उसके उस घाव से निकलता सारा खून चूस लिया।

[113] John Balento. Tale No 199. A folktale from Italy from its Corsica area.

दूसरी मक्खी नूडिल्स[114] का एक कटोरा ले आयी और उसके ऊपर भिनभिनाने लगी।

जौन बोला — "अरे ये मक्खियाँ यहाँ क्या कर रही हैं। भागो भागो यहाँ से।" कह कर उसने चमड़े के एक टुकड़े से उनको उड़ाने की कोशिश की पर वे तो बहुत ही जिद्दी थीं। वे वहाँ से गयी नहीं। वे उस नूडिल्स के कटोरे के ऊपर भिनभिनाती ही रहीं।

जब वे वहाँ से नहीं गयी तो जौन बालैन्टो ने हाथ का घूँसा बना कर इतनी ज़ोर से उन मक्खियों को मारा कि उसके उस घूँसे से काफी मक्खियाँ मर गयीं।

उनको मार कर उसने जब जमीन पर पड़ी मरी हुई मक्खियाँ गिनी तो वे कम से कम एक हजार तो होंगी। और पाँच सौ मक्खियों के करीब मक्खियाँ तो घायल भी हो गयी थीं।

उसने सोचा तो यह था मेरा एक ज़ोरदार घूँसा। लोग सोचते हैं कि मैं किसी काम का नहीं पर अगर मैं कोशिश करूँ तो मैं भी अपने आपको दिखा सकता हूँ कि मैं क्या हूँ।

फिर उसने एक सूखी हुई डंडी उठायी उसे स्याही में भिगोया और उससे एक कपड़े की बड़ी सी पट्टी पर बड़े बड़े अक्षरों में लिखा

[114] Noodles is an Italian dish. Noodles are like Indian Semiyaan, come in many lengths, but lot longer than Semiyaan. See its picture above.

– "जौन बालैन्टो से मिलो जिसने अभी अभी एक हजार मार दिये और पाँच सौ घायल कर दिये।"

उसने इस पट्टी को अपने टोप में लगा लिया जो वह उस समय पहने हुआ था। जिसने भी यह पढ़ा वही ज़ोर से हँस पड़ा और जौन से पूछा — "जौन कितने मारे?"

जौन बोला — "मैंने एक हजार मारे और पाँच सौ घायल किये।"

इससे जौन बालैन्टो तो बहुत मशहूर हो गया। उसकी शोहरत एक मुँह से दूसरे मुँह तक होती हुई शहर भर में फैल गयी और फिर दूसरे शहरों में भी फैल गयी। एक साल के अन्दर अन्दर तो जौन बालैन्टो दूर दूर तक मशहूर हो गया।

इस बीच जौन ने अपना जूता सिलने का काम छोड़ दिया – जूते सिलने का धागा, चाकू, सुई आदि आदि सब उठा कर रख दिये और दूसरे देश में अपनी किस्मत आजमाने चल दिया।

वह एक बहुत ही पतले दुबले गधे पर चढ़ा जिसकी बस खाल और हड्डियाँ ही दिखायी दे रही थीं। न उसने अपने साथ कोई सामान लिया और न ही कोई पैसा बस वह तो चल दिया।

तीन दिन की जंगल की यात्रा के बाद वह एक सराय में आया। वह दरवाजे से ही चिल्लाया — "मैं जौन बालैन्टो हूँ जिसने एक हजार मार दिये और पाँच सौ घायल कर दिये।"

इत्तफाक से वह सराय उस समय डाकुओं से भरी हुई थी। इतने बड़े हीरो का नाम सुन कर तो वहाँ रह रहे डाकू डर गये और तुरन्त ही उन्होंने अपने चमकते हुए हथियार और घोड़े तो वहीं छोड़े और सराय के दरवाजे और खिड़कियों से बाहर निकल कर चारों तरफ भाग गये।

जौन को अपने गधे से उतरने में थोड़ी देर लग गयी। गधे से उतर कर वह मेज पर पहुँचा तो सराय के मालिक ने कहा — "ओ बड़े आदमी, आइये और आप यहाँ पेट भर कर खाइये। मैं तो हमेशा आपका आभारी रहूँगा कि आपका नाम सुनते ही मेरी सराय से डाकू भाग गये।"

जौन बालैन्टो प्लेट की तरफ देखते हुए और खाना खाते हुए बोला — "दूसरे लोग तो मेरा जिस जिस तरीके से फायदा उठाते हैं उसके मुकाबले में यह तो कुछ भी नहीं है।"

जब जौन पेट भर कर खाना खा चुका तो उसने उन डाकुओं के घोड़ों में से सबसे बढ़िया घोड़ा लिया, उस पर सवार हुआ और सराय के मालिक से बोला — "अगर तुम्हें कभी भी किसी भी सहायता की जरूरत हो तो बस मुझे याद करना न भूलना।

जब तक मैं ज़िन्दा हूँ तब तक कोई भी तुमसे किसी भी तरह का कोई भी बुरा बर्ताव नहीं करेगा और करेगा भी तो बच कर नहीं जा सकता।"

कह कर उसने अपने घोड़े को एड़ लगायी और वहाँ से चल दिया। सराय के मालिक और उसके नौकरों के सिर उसके पीछे भी झुके के झुके रह गये।

जौन पहले कभी किसी घोड़े पर नहीं बैठा था इसलिये उसको घोड़े पर बैठना नहीं आता था। सो वह तो बस उस पर लटकता हुआ चला जा रहा था और उसके हर कदम पर हवा में कूद जाता था।

उसने सोचा — "ओ मेरे प्यारे औजारों, मैंने तुमको क्या सोच कर उठा कर रख दिया था?"

फिर भी वह उस पर चलता ही रहा और बाद में उस पर चढ़ने का आदी हो गया। वह जहाँ भी गया वहीं उसका बड़ी इ़ज़्ज़त के साथ स्वागत हुआ।

आखिर वह एक बड़े साइज़ के आदमियों[115] के शहर में पहुँच गया। जैसे ही उन्होंने जौन को देखा तो वे बड़े साइज़ के आदमी जो चेस्टनट[116] के पेड़ जैसे मजबूत थे और चीड़ के पेड़ जैसे लम्बे थे अपने बहुत बड़े बड़े मुँह खोलते हुए और अपने होठ चाटते हुए उसकी तरफ उसको खाने के लिये दौड़े। जौन तो उनको देख कर पत्ते की तरह से काँप उठा।

[115] Translated for the word "Giants"

[116] Chestnut is a kind of nut whose fruit and the tree is shown in the picture above.

बड़े साइज़ के आदमियों का सरदार बोला — "तो तुम्हीं वह जौन बालैन्टो हो जिसने एक हजार मार दिये और पाँच सौ घायल कर दिये। क्या तुम मुझसे लड़ना पसन्द करोगे? चलो नदी के उस पार चलो उधर चल कर लड़ते हैं।"

जौन बोला — "सुनो सुनो। अच्छा हो कि अगर तुम मुझे शान्ति से मेरे रास्ते जाने दो। तुम्हें मालूम है कि मैं कैसा हूँ।

जैसे मिर्च को ही ले लो। मिर्च कितनी छोटी सी होती है पर बहुत ताकतवर होती है उसी तरह से मैं हूँ। मैं अगर एक बार अपनी तलवार छू दूँ तो बस फिर तुम्हें भगवान ही बचाये।"

यह सुन कर बड़े साइज़ वाले आदमियों ने इस पर विचार किया और फिर ज़रा नर्म आवाज में बोले — "ठीक है ठीक है। हम तुम्हें तुम्हारे रास्ते जाने देंगे पर पहले तुम अपनी ताकत हमें साबित कर के दिखाओ।

क्या तुम वह चट्टान वहाँ देख रहे हो? हम यह चाहते हैं कि तुम उस चट्टान को लुढ़का कर यहाँ ले आओ। अगर तुमने यह कर दिया तो हम तुमको अपना राजा बना लेंगे।"

जौन बालैन्टो ने अपने दोनों हाथों का एक प्याला बना कर अपने मुँह पर रखा और चिल्ला कर बोला — "रास्ते से हट जाओ। इस घाटी में हर रहने वाला अपनी जान बचा कर भागे।

शानदार जौन बालैन्टो अब इस बड़ी चट्टान को हिलाने वाला है जिससे कि लोग मर भी सकते हैं। भागो भागो हर आदमी भागो।

अपनी जान बचा कर भागो।" यह सुन कर उस घाटी में रहने वाले सारे लोग बेचारे अपने अपने परिवारों को ले कर वहाँ से भागने लगे।

जब इतने सारे लोग वहाँ से भागे तो बड़े साइज़ के लोग भी डर गये और वे भी वहाँ से भाग लिये। तुरन्त ही वहाँ से सारे लोग भाग रहे थे। भागते भागते वे चिल्लाते भी जा रहे थे —

"जौन बालैन्टो को देखो उसने एक हजार मार दिये हैं और पाँच सौ घायल कर दिये हैं।"

देखते देखते सारा गाँव खाली हो गया। जब सारे लोग वहाँ से भाग गये तो जौन ने अपने घोड़े को एड़ लगायी, नदी पार की और शान्ति से उन बड़े साइज़ के आदमियों की जगह पार कर के वहाँ से चला गया।

अब चट्टान को तो वहाँ से न हिलना था और वह न हिली। पर ऐसे कामों से उसकी शोहरत बढ़ती ही गयी बढ़ती ही गयी।

कुछ दूर जाने के बाद उसको दो सेनाऐं मिलीं जो आपस में लड़ने के लिये तैयार खड़ी थीं। राजा वहाँ अपने जनरलों से घिरा खड़ा था पर वह लड़ाई के लिये बिल्कुल तैयार नहीं था।

क्योंकि अगर वह हार गया तो उसको अपना राज्य और ताज छोड़ना पड़ता और मरना पड़ता और यह वह करना नहीं चाहता था। इसलिये वह बहुत डरा हुआ था।

पर जैसे ही उसने जौन बालैन्टो को देखा तो उसको कुछ उम्मीद बॅधी। उसने जौन से कहा — "ओ मशहूर जौन बालैन्टो। लगता है कि तुमको भगवान ने मेरी जीत के लिये ही इस समय यहाँ भेज दिया। मेहरबानी कर के तुम मेरी सेना को सॅभाल लो।"

अब जौन को लगा कि अब झूठ से काम नहीं चलने का, अब सच बोलने का समय आ गया सो वह बोला — "मैजेस्टी, मैं वह आदमी नहीं हूँ जो आप समझ रहे हैं। मैं तो एक गरीब चमार हूँ। मैं तो केवल अपने जूते में इस्तेमाल करने वाली सुई और धागा ही इस्तेमाल कर सकता हूँ।"

राजा ने उसे बीच में ही टोका — "हॉ हॉ सुन लिया। पर क्या हम ये बातें बाद में कर सकते हैं। अभी हमारे पास समय कम है। तुम हमारे जनरल का पद सॅभालो और मेरी इस सेना को ले कर लड़ाई के लिये चलो।

यह रहा मेरा घोड़ा। लड़ाई के लिये बिल्कुल तैयार है। और यह है मेरा जिरहबख्तर[117] और यह रही मेरी तलवार।"

जौन के काफी मना करने के बावजूद राजा ने उसको लड़ाई की पोशाक पहनायी और उसको अपने घोड़े पर बिठा दिया। उसके बैठते ही राजा का घोड़ा तो वहाँ से भाग लिया।

---

[117] Translated for the word "Armor". Ir is normally worn in war and fighting to save loneself from other's weapons' wounds.

जनरल को दुश्मन की सेना की तरफ जाते देख कर राजा के दूसरे सिपाही भी उत्साहपूर्वक उसके पीछे पीछे भाग लिये और कुछ ही देर में उन्होंने दुश्मनों की सेना का सफाया कर दिया।

राजा जीत गया तो सिपाहियों ने राजा की जीत की खुशियाँ मनानी शुरू कर दीं। पर जनरल का तो कहीं पता ही नहीं था। वह कहाँ गया? ढूँढने पर उनको वह वहाँ से चार लीग[118] दूर मिला।

वह दुश्मनों की सेना में से हो कर तेजी से भाग गया था। फिर राजा की अपनी सेना के घुड़सवार उसे ढूँढ कर राजा के पास ले कर आये।

जौन ने राजा के सामने कृतज्ञता से सिर झुकाते हुए कहा — "अगर आप लोग मेरे साथ आते तो हम लोगों ने अब तक तीन राज्य और तीन ताज जीत लिये होते। खैर अब हमने यह लड़ाई तो जीत ही ली है सो अब हमें इसी से सन्तुष्ट रहना चाहिये।"

राजा आश्चर्य से बोला — "क्या? क्या तुम अभी और भी लड़ाई के लिये जाना चाहते हो? मैं तो तुम्हारे साथ अपनी बेटी की शादी करने की सोच रहा हूँ।"

पर जौन किसी के बहकावे में आने वाला नहीं था। वह अपने उस काम के लिये कुछ भी स्वीकार नहीं करना चाह रहा था। वह राजा का सब कुछ छोड़ कर अपने रास्ते चल दिया।

---

[118] League is an obsolete unit to measure length. It is approximately an hour's walk. Its measurement was different in different countries. Now it is not used anywhere in the world.

काफी दूर जाने के बाद वह अमेज़नों[119] के राज्य में आ गया। जैसा कि सब जानते हैं कि अमेज़न की स्त्रियाँ बहुत अच्छी लड़ने वाली होती हैं। उनका अपना राज्य है जिसको एक रानी चलाती है।

उनके राज्य में किसी आदमी को रहने की इजाज़त नहीं है। अगर कोई आदमी उनको अपने राज्य में दिखायी दे जाता है तो वे उसके टुकड़े टुकड़े कर डालती हैं और उनको कुत्तों को खिला देती हैं और उसकी खाल के ढोल बना लेती हैं।

अमेज़न राज्य की रानी एक बहुत ही बेरहम स्त्री थी। वह अपनी पूरी ज़िन्दगी में हँसना तो दूर कभी मुस्कुरायी भी नहीं थी। और जौन बालैन्टो अब ऐसी ही स्त्रियों के बीच में था।

जैसे ही उन्होंने उसको देखा तो उन सबने मिल कर उसको पकड़ लिया और जंजीरों से बाँध कर घसीटते हुए रानी के सामने ले गयीं। अमेज़न के दरबार में बहुत सारे घोड़े थे सो उसका दरबार मक्खियों से भरा हुआ था।

वे सब घोड़े अपनी अपनी पूँछें हिला कर अपनी मक्खियाँ भगा रहे थे और वहाँ बैठीं अमेज़न स्त्रियाँ पंखा झल झल कर अपनी मक्खियाँ उड़ा रही थीं। पर जौन जो जंजीरों से बँधा हुआ था हिल भी नहीं सकता था और उसके ऊपर बहुत सारी मक्खियाँ बैठी हुई थीं।

---

[119] Amazon

रानी बोली — “बस अब तुम अपने आपको मरा हुआ ही समझो क्योंकि हमारा यही कानून है कि जो भी आदमी हमारे राज्य में आ जाता है हम उसे मार देते हैं। तुम हमारे राज्य में घुसे ही क्यों?”

जौन ने मुँह लटकाते हुए अपने आपसे कहा “ओ मेरे जूते में छेद करने वाले सूए, ओ मेरे धागे, ओ मेरी बैन्च, अगर मैं तुम्हारे साथ ही रहता तो आज मेरी यह हालत न होती।”

रानी ने अपनी बात जारी रखते हुए आगे कहा — “और सुनो, मुझे एक गरीब आदमी को मारना बिल्कुल अच्छा नहीं लगता। वह मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं किसी कुत्ते को मार रही हूँ।

तुम मुझे सच सच बता दो कि तुम कौन हो तो मैं तुम्हारी ज़िन्दगी बख्श दूँगी। क्या तुमने वाकई एक हजार मारे और पाँच सौ घायल किये?”

जौन तुरन्त ही बोला — “एक ही झटके में, योर मैजेस्टी।”

“यह तुमने कैसे किया?”

“आप मेरी जंजीरें खोल दें तो मैं आपको दिखा दूँ।”

रानी ने हुक्म दिया कि उसकी जंजीरें खोल दी जायें। रानी के हुक्म का पालन किया गया। उसकी जंजीरें खोल दी गयीं। उसके चारों तरफ जो घुड़सवार स्त्रियाँ खड़ी थी वे सब उसकी तरफ देखने लगीं।

दरबार में बिल्कुल शान्ति थी। एक भी आवाज सुनायी नहीं दे रही थी सिवाय घोड़ों की पूँछों के हिलने की, पंखा झलने की और मक्खियों के उड़ने की आवाज के।

जौन ने कहा — "पहले मैने कैसे किया था। ऐसे।" कह कर उसने अपने हाथ की मुट्ठी बाँधी और उसको अपने चारों तरफ भिनभिनाती मक्खियों के बीच में घुमा दिया और उन सब मक्खियों को मार दिया।

फिर वह बोला — "अब इनको गिनो।"

"ओह तो वे मक्खियाँ थीं। ओह मेरे भगवान।" कह कर घोड़ों पर बैठी सारी अमेज़न स्त्रियाँ बहुत ज़ोर से हँस पड़ीं। हँसते हँसते उनके शरीर में बल पड़ गये। पर सबसे ज़्यादा ज़ोर से जो हँसी वह थी वहाँ की रानी।

"हा हा हा हा। मैं तो अपनी ज़िन्दगी भर में कभी इतना नहीं हँसी जितना मैं अभी हँसी। जौन बालैन्टो, तुम मेरी सारी ज़िन्दगी में वह पहले आदमी हो जिसने मुझे हँसाया है। और तुम्हारी इस मक्खियाँ मारने की तरकीब से तो तुम मेरे राज्य में भगवान के भेजे हुए दूत हो। अब तुम यहीं रहो और मेरे पति बन जाओ।"

सो उस जौन बालैन्टो की शादी अमेज़न की रानी से हो गयी और वह चमार अमेज़न राज्य का राजा बन गया। बहुत दिनों तक उन दोनों की शादी की खुशियाँ मनायी जाती रहीं।

20 आजा मेरे थैले में कूद जा[120]

इस बात को बहुत साल हो गये जब निओलो[121] के बंजर पहाड़ों में एक पिता अपने बारह बेटों के साथ रहता था।

एक बार वहाँ अकाल पड़ा तो पिता ने बेटों से कहा — "बच्चों, मैं अब तुम्हें रोटी नहीं खिला सकता। तुम लोग अब बाहर जाओ जहाँ मुझे पूरा विश्वास है कि तुम बजाय घर के वहाँ ज़्यादा खुश रहोगे।"

यह सुन कर उसके ग्यारह बड़े बेटे तो घर छोड़ कर जाने के लिये तैयार हो गये पर उसका बारहवाँ बेटा जो सबसे छोटा था और लँगड़ा था रोने लगा। वह बोला — "मुझ जैसा अपंग आदमी बाहर की दुनियाँ में निकल कर क्या कमायेगा पिता जी।"

पिता बोला — "बेटा, रो नहीं। तुम भी अपने भाइयों के साथ जाओ और जो ये लोग कमायेंगे उसी में से ये तुमको भी देंगे।"

सो उसके बारहों बेटों ने आपस में एक दूसरे से वायदा किया कि वे एक साथ रहेंगे और वे वहाँ से चले गये।

वे सारा दिन चलते रहे। फिर दूसरे दिन भी चलते रहे। पर छोटा वाला हमेशा ही अपने लँगड़ेपन की वजह से उनसे सबसे पीछे रह जाता था।

---

[120] Jump into My Sack. Tale No 200. A folktale from Italy from its Corsica area.

[121] Niolo – name of a place in Italy

तीसरे दिन सबसे बड़े भाई ने कहा — "हमारा यह सबसे छोटा भाई फ्रान्सिस[122] हमेशा ही पीछे रह जाता है। यह अब हमारे लिये एक परेशानी है।

हम लोग आगे आगे चल कर इसको यहीं पीछे सड़क पर छोड़ देते हैं। यह इसके लिये भी अच्छा रहेगा क्योंकि हो सकता है कि कभी कहीं से इसको कोई दयालु मिल जाये और इस पर दया कर के इसको अपने साथ ले जाये।"

यह सोच कर वे सब अपने छोटे भाई का इन्तजार किये बिना ही आगे चल दिये। वे बोनीफ़ेसियो[123] पहुँचने तक रास्ते में जो भी मिला उसी से भीख माँगते चले गये।

बोनीफ़ेसियो पहुँच कर उनको एक नाव बन्दरगाह पर लगी हुई दिखायी दे गयी। नाव देख कर सबसे बड़ा भाई बोला — "क्या हो अगर हम इस नाव पर चढ़ जायें और सारडीनिया[124] चले जायें। हो सकता है कि वहाँ हमारे शहर से कम ज़ोर का अकाल हो।"

सो वे सब भाई उस नाव में चढ़े और उन्होंने नाव खे दी। जब वे खाड़ी के बीच में पहुँचे तो वहाँ एक भयानक तूफान आ गया। उस तूफान में नाव के टुकड़े टुकड़े हो गये और ग्यारहों भाई समुद्र में डूब गये।

---

[122] Francis – name of the 12th and the youngest brother

[123] Bonifacio – name of a plce in Italy

[124] Sardinia – name of a place in Italy

इस बीच छोटा अपंग फ्रान्सिस चलते चलते बहुत थक गया। और जब उसने अपने भाइयों को अपने आस पास नहीं देखा तो वह चिल्लाने लगा, रोने लगा और पागल सा हो गया।

लेकिन वह क्या करता वह वहीं सड़क के किनारे ही बैठ गया। वह चलते चलते थक गया था सो बैठते ही सो गया।

उस जगह की परी वहीं एक पेड़ पर बैठी थी। वह सब कुछ देख रही थी। जैसे ही फ्रान्सिस सो गया वह पेड़ से नीचे उतरी। उसने कुछ खास तरह के पत्ते इकट्ठे किये, उनकी पुल्टिस बनायी और फ्रान्सिस की लॅगड़ी टॉग पर लगा दिया। उसकी टॉग तुरन्त ही ठीक हो गयी।

फिर उसने एक गरीब बुढ़िया का रूप रख लिया और एक आग जलाने वाली लकड़ी के गट्ठर पर बैठ गयी। वहॉ बैठ कर वह उसके जागने का इन्तजार करने लगी।

कुछ देर बाद फ्रान्सिस जागा तो लॅगड़ाते हुए उठा पर उसने देखा कि वह तो अब लॅगड़ा नहीं था वह तो अब और दूसरों की तरह से ठीक से चल सकता था। तभी उसकी निगाह लकड़ी के गट्ठर पर बैठी एक बुढ़िया पर पड़ी।

उसने उससे पूछा — "मैम, क्या आपने यहॉ आस पास में किसी डाक्टर को देखा?"

"डाक्टर, तुम्हें डाक्टर क्यों चाहिये?"

“मैं उसको धन्यवाद देना चाहता हूँ। क्योंकि जब मैं सो रहा था तो जरूर ही यहाँ कोई बड़ा डाक्टर आया होगा जिसने मेरी लँगड़ी टाँग ठीक कर दी।”

यह सुन कर वह बुढ़िया बोली — “वह मैं थी जिसने तुम्हारी टाँग ठीक की। क्योंकि मैं ऐसे बहुत सारे पत्तों के बारे में जानती हूँ जिनसे लँगड़ी टाँग भी ठीक की जा सकती है।”

यह सुन कर फ्रान्सिस बहुत खुश हो गया और उसने बुढ़िया के गले में अपनी बाँहें डाल दीं और उसके दोनों गाल चूम लिये।

“मैं आपको किस तरह से धन्यवाद दूँ मैम? मैं आपका यह लकड़ी का गट्ठर ले चलता हूँ।”

कह कर वह उस लकड़ी के गट्ठर को उठाने के लिये नीचे झुका पर जब वह ऊपर उठा तो उसने देखा कि वहाँ पर तो कोई बुढ़िया नहीं थी बल्कि वहाँ तो एक बहुत ही सुन्दर लड़की खड़ी थी। उसने हीरे जवाहरात पहने हुए थे और उसके सफेद बाल उसके कन्धे पर से कमर तक आ रहे थे।

उसने गहरे नीले रंग की सुनहरे तारों से कढ़ाई की गयी पोशाक पहन रखी थी। उसके जूतों पर टखने की जगहों पर दो चमकीले कीमती पत्थर लगे हुए थे। फ्रान्सिस तो कुछ बोल ही नहीं सका और उस परी के पैरों पर पड़ गया।

परी बोली — “उठो फ्रान्सिस उठो। मुझे मालूम है कि तुम मुझे धन्यवाद देना चाहते हो। मैं तुम्हारी सहायता करूँगी। तुम कोई सी

दो इच्छाऐं मुझे बताओ मैं उनको तुरन्त ही पूरा कर दूँगी। ध्यान रखना कि मैं केनो झील की परियों की रानी[125] हूँ।

लड़के ने कुछ सोचा फिर बोला — "मुझे एक ऐसा थैला चाहिये जिसको जब भी मैं जिसके लिये भी कहूँ कि तू उसे खींच ले तो वह उसे खींच ले।"

"तुमको ऐसा थैला मिल जायेगा। अब तुम अपनी दूसरी इच्छा बताओ।"

लड़का बोला — "मुझे एक ऐसी डंडी चाहिये जो वही करे जो मैं उससे करने के लिये कहूँ।"

"तुमको ऐसी डंडी भी मिल जायेगी।" कह कर वह परी गायब हो गयी और फ्रान्सिस के पैरों के पास एक थैला और एक डंडी पड़े हुए थे।

खुश होते हुए फ्रान्सिस ने उन दोनों चीज़ों को जॉचना चाहा। उसको इस समय भूख लगी थी सो वह बोला "एक भुना हुआ तीतर[126] मेरे थैले में"। उसके यह कहते के साथ ही एक पूरा भुना हुआ तीतर उसके थैले में आ पड़ा।

"रोटी भी।" और एक डबल रोटी आ कर थैले में गिर पड़ी। और "एक बोतल शराब भी।" और एक बोतल शराब भी उसके

[125] Queen of the Fairies of Lake Creno

[126] Translated for the word "Partridge". See its picture above.

थैले में आ गयी। इस तरह फ्रान्सिस ने बहुत दिनों बाद पेट भर कर स्वादिष्ट खाना खाया।

अगले दिन वह मरियाना[127] आ गया जहाँ कोरसिका[128] और कौन्टीनैन्ट के बहुत मशहूर जुआ खेलने वाले मिलने के लिये आये हुए थे।

अब फ्रान्सिस के पास तो कोई पैसा था नहीं सो उसने कहा "सौ हजार क्राउन मेरे थैले में आ जाओ।" और उसका थैला सौ हजार क्राउन के सिक्कों से भर गया।

यह खबर तो सारे मरियाना में जंगली आग की तरह फैल गयी कि मरियाना में सैन्टो फ्रान्सैस्को[129] से एक बहुत ही अमीर राजकुमार आया है। उसके पास एक ऐसा थैला है जो पैसों से कभी खाली नहीं होता। उस समय शैतान खास कर के मरियाना की तरफ था।

उसने एक बहुत सुन्दर नौजवान का रूप रखा हुआ था और वह ताश के खेल में सबको हरा रहा था और जब वे हार जाते थे और उनका पैसा खत्म हो जाता था तो वह उनकी आत्मा खरीद लेता था।

इस अमीर परदेसी के बारे में सुन कर जो वहाँ के लोगों में सैन्टो फ्रान्सैस्को के नाम से मशहूर हो गया था वह शैतान इसके पास भी

[127] Mariana – name of a place in Italy
[128] Corsica – name of a place in Italy
[129] Santo Francesco – name of a place and the name of Francisco too, Francis got famous in Mariana town

आया और बोला — "ओ भले राजकुमार, मुझे अपनी बहादुरी के लिये माफ करना पर जुआ खेलने वाले की हैसियत से तुम इतने मशहूर हो चुके हो कि मैं तुम्हारे साथ जुआ खेलने से अपने आपको रोक नहीं सका।"

फ्रान्सिस बोला — "तुम मुझे शर्मिन्दा कर रहे हो। सच तो यह है कि मैं तो ताश का कोई खेल खेलना जानता ही नहीं। मैंने तो कभी ताश के पत्ते भी अपने हाथ में नहीं पकड़े। फिर भी मुझे तुम्हारे साथ ताश खेल कर बड़ी खुशी होगी।

मैं केवल तुमसे खेल सीखने के लिये खेलूँगा। और मुझे यकीन है कि तुम जैसे गुरू के साथ खेल सीख कर मैं खेल में मास्टर हो जाऊँगा।"

शैतान को लगा कि उसका उस राजकुमार से मिलना सफल हो गया सो जब वह वहाँ से चला तो वह उसको विदा कहने के लिये नीचे झुका तो जानबूझ कर उसने अपनी टाँग आगे बढ़ा कर अपना आधा खुर[130] उस राजकुमार को दिखा दिया।

"ओह मेरे भगवान।" फ्रान्सिस ने अपने आपसे कहा — "तो यह तो शैतान खुद था जिसने मेरे पास आ कर मुझे इज़्ज़त दी। अच्छा है, अब वह अपने बराबर वाले से मिलेगा।"

जब वह अकेला रह गया तो उसने थैले से बढ़िया खाना लाने के लिये कहा।

---

[130] Translated for the word "Cloven Hoof". It seems that is the mark of a Satan in Italy.

अगले दिन वह कसीनो[131] पहुँचा तो देखा कि एक जगह पर बहुत सारे लोग बैठे हुए हैं। फ्रान्सिस उनके बीच से उनको धक्का देता हुआ उस भीड़ के अन्दर घुस गया। वहाँ जा कर उसने क्या देखा कि एक नौजवान नीचे पड़ा हुआ है और उसकी छाती से खून बह रहा है।

एक आदमी बोला — "यह आदमी जुआरी था। इसने बेचारे ने जुए में अपना सारा पैसा खो दिया और फिर एक मिनट पहले ही इसने अपने सीने में छुरा भौंक लिया।"

वहाँ बैठे सारे जुआरियों के चेहरे उतरे हुए थे पर फ्रान्सिस ने देखा कि उन सब दुखी लोगों के बीच में एक आदमी मुस्कुरा रहा था। वह आदमी वह शैतान था जो फ्रान्सिस से मिलने आया था।

शैतान बोला — "जल्दी करो। इस बदकिस्मत आदमी को यहाँ से बाहर निकालो और खेल चालू रखो।"

कुछ लोग उस आदमी के शरीर को वहाँ से उठा कर बाहर ले गये और दूसरे लोगों ने खेलने के लिये फिर से ताश के पत्ते उठा लिये।

फ्रान्सिस जिसको ताश के पत्ते हाथ में पकड़ने तक नहीं आते थे उस दिन अपना सब कुछ हार गया। दूसरे दिन उसको खेल का कुछ पता चला पर फिर भी वह पहले दिन से ज़्यादा हार गया। पर

[131] Casino where people go for gambling

तीसरे दिन वह खेल का मास्टर हो गया पर उस दिन तो वह इतना ज़्यादा हारा कि लोगों को लगा कि आज तो वह बर्बाद ही हो गया।

पर कोई भी नुकसान उसके लिये ज़्यादा नहीं था और वह नुकसान उसको परेशान भी नहीं कर रहा था क्योंकि उसके पास तो उसका थैला था जिसमें से वह चाहे जितना पैसा निकाल सकता था।

पिछले तीन दिनों में वह इतना हार चुका था कि शैतान ने सोचा कि जरूर ही वह दुनियाँ का सबसे अमीर आदमी होगा तभी तो वह इतना हार चुका था और उसके माथे पर शिकन तक नहीं थी। पर वह भी इस बात पर तुला हुआ था कि वह उसको कंगाल बना कर ही छोड़ेगा।

वह फ्रान्सिस को एक तरफ ले गया और उससे बोला — "ओ भले राजकुमार, मैं तुमको बता नहीं सकता कि मैं तुम्हारी इस बदकिस्मती पर कितना दुखी हूँ पर फिर भी मेरे पास तुम्हारे लिये एक खुशखबरी है। तुम मेरी बात को ध्यान से सुनोगे तो जितना तुमने खोया है उसमें से कम से कम आधा तो तुम वापस ले ही लोगे।"

फ्रान्सिस ने पूछा — "कैसे?"

शैतान ने इधर उधर देखा और उसके कान में फुसफुसाया — "तुम अपनी आत्मा मुझे बेच दो।"

फ्रान्सिस बोला — "आह, सो मेरे लिये तुम्हारी यह सलाह है ओ शैतान? चलो तो मेरे थैले में कूद जाओ।"

यह सुन कर शैतान ने वहाँ से भागने की कोशिश की पर वह उस थैले से तो बच नहीं सकता था। वह सिर के बल उस थैले में गिर पड़ा।

फ्रान्सिस ने थैला बन्द किया और अपनी डंडी से बोला — "अब इसकी अच्छी तरह से पिटायी करो।" बस उसकी डंडी ने शैतान की ज़ोर ज़ोर से पिटायी करनी शुरू कर दी।

शैतान का शरीर मरोड़ खाने लगा, वह चिल्लाने लगा, फ्रान्सिस को गालियाँ देने लगा — "मुझे इस थैले में से निकालो। इस डंडी को रोको। तुम तो मुझे मार ही डालोगे।"

"क्या सचमुच में? तुम यहीं मरोगे। बस वही तुम्हारे लिये सबसे बड़ा नुकसान होगा?" और वह डंडी उसको पीटती रही।

तीन घंटे की पिटायी के बाद फ्रान्सिस बोला — "आज के लिये तुम्हारे लिये बस इतना ही काफी है।"

शैतान ने बड़ी कमजोर आवाज में पूछा — "मुझे यहाँ से आजाद करने की तुम क्या कीमत लोगे?"

"तुम ध्यान से मेरी बात सुनो। अगर तुम अपनी आजादी चाहते हो तो तुम उन सब आत्माओं को छोड़ दो जिन्होंने तुम्हारी वजह से आत्महत्या की है।"

"ठीक है सौदा पक्का रहा।"

“तब बाहर आ जाओ। पर साथ में यह भी याद रखना कि अगर तुमने कुछ भी गड़बड़ी की तो मैं तुमको किसी भी समय जब भी मैं चाहूँ फिर से पकड़ सकता हूँ।”

शैतान तो अपने वायदे से वापस जाने की हिम्मत ही नहीं कर सकता था। वह तुरन्त ही जमीन के नीचे जा कर गायब हो गया और तुरन्त ही कुछ लोगों को ले कर बाहर आ गया। उन सबके चेहरे पीले पड़े हुए थे और उनकी ऑखें बीमार जैसी लग रही थीं।

फ्रान्सिस उन लोगों से बोला — “दोस्तों, तुम लोगों ने अपने आपको जुआ खेल कर बर्बाद कर लिया था और फिर तुम्हारे पास अपने आपको मारने के अलावा और कोई रास्ता नहीं रह गया था।

मैं तुम लोगों को इस बार तो वापस ले आया पर अगली बार शायद मैं ऐसा न कर सकूँ इसलिये तुम लोग मुझसे वायदा करो कि तुम लोग अबसे जुआ नहीं खेलोगे।”

सब लोग एक आवाज में बोले — हॉ हॉ हम वायदा करते हैं कि हम आज से जुआ नहीं खेलेंगे।”

“बढ़िया। लो तुम सब लोग एक एक हजार क्राउन लो और शान्ति से अपने अपने घर जाओ और ईमानदारी से अपनी रोटी कमाओ खाओ।”

वे नौजवान खुश हो कर वहॉ से चले गये। कुछ के परिवार उनकी मौत पर रो रहे थे, कुछ लोग अपने माता पिता के बुरे कामों की वजह से उनकी मौत पर दुखी थे।

यह देख कर फ्रान्सिस को अपने बूढ़े पिता की याद आ गयी सो वह भी अपने गॉव चल दिया। रास्ते में उसको एक लड़का मिला जो बड़ी नाउम्मीदी में अपने हाथ मल रहा था।

फ्रान्सिस ने उससे पूछा — "क्या बात है नौजवान कैसे हो? क्या तुम ये दुखी चेहरे ही बेचते हो? एक दर्जन ऐसे चेहरे कितने के दोगे?"

लड़का बोला — "मैं हॅस नहीं सकता। मैं क्या करूँ।"

"क्यों क्या बात है।"

लड़का बोला — "मेरे पिता एक लकड़हारे का काम करते हैं और वह अकेले ही परिवार का पालन पोषण करते हैं। आज सुबह वह एक चेस्टनट के पेड़ से गिर पड़े। इससे उनकी एक बॉह टूट गयी है।

मैं डाक्टर को बुलाने के लिये शहर दौड़ा गया पर क्योंकि हम गरीब हैं। मैं उसको पैसे नहीं दे सकता था सो उसने आने से मना कर दिया।"

"क्या इसी वजह से तुम दुखी हो रहे हो। शान्त हो जाओ। चलो मेरे साथ चलो मैं देखता हूॅ।"

"क्या आप डाक्टर है?"

"नहीं मैं तो डाक्टर नहीं हूॅ पर मैं उस डाक्टर को बुला सकता हूॅ जिसने तुमको आने से मना कर दिया। क्या नाम है उस डाक्टर का?"

"डाक्टर पैनक्रेज़ियो[132]।"

"ठीक है। डाक्टर पैनकेज़ियो, आओ मेरे थैले में कूद जाओ।" उसी समय वह डाक्टर उसके थैले में अपने सब औजारों के साथ आ गया।

फिर फ्रान्सिस बोला — "ओ डंडी अपनी पूरी ताकत के साथ इसको पीटो।" बस उस डंडी ने उस डाक्टर को अपनी पूरी ताकत के साथ पीटना शुरू कर दिया।

कुछ देर बाद फ्रान्सिस ने उस डाक्टर से पूछा — "क्या तुम इस लड़के के पिता का इलाज बिना कोई पैसा लिये करोगे?"

"जो भी आप कहें।"

"तो ठीक है थैले से बाहर आ जाओ।" बाहर आते ही डाक्टर उस लकड़हारे के घर की तरफ भाग गया।

फ्रान्सिस फिर अपने रास्ते चल दिया और कुछ ही दिनों में अपने गाँव आ पहुँचा। वहाँ तो अब पहले से भी ज़्यादा लोग भूखे मर रहे थे।

वह अपने थैले से बार बार कहता रहा — "भुना हुआ मुर्गा और शराब की बोतल थैले में कूद जा।"

फ्रान्सिस ने उस थैले से गाँव के सब लोगों को खूब खाना खिलाया और सब लोगों ने बहुत दिन बाद बिना पैसे के इतना स्वादिष्ट खाना खाया।

---

[132] Pancrazio – name of the Doctor

वह यह सब उन लोगों के लिये तब तक करता रहा जब तक वहॉ अकाल चला। जब वहॉ की दशा कुछ सुधर गयी तब उसने वह सब बन्द कर दिया क्योंकि इससे लोगों का आलसीपन बढ़ता था।

X X X X X X X

पर क्या तुम सोचते हो कि वह खुश था? नहीं। वह अपने ग्यारह भाइयों की कोई खबर न मिलने पर बहुत दुखी था। वह बहुत दिनों से उनको भूला हुआ था क्योंकि वे उसको उस अपंग हालत में अकेला छोड़ कर भाग गये थे।

फिर उसने उनको बुलाने की कोशिश की — "भाई जौन आ मेरे थैले में कूद जा।"

उसके यह कहते ही उसके थैले में कुछ हिला। फ्रान्सिस ने उसको खोला तो उसमें उसको हड्डियों का एक ढेर मिला।

फिर वह बोला — "भाई पौल आ मेरे थैले में कूद जा।" फिर एक और हड्डियों का ढेर थैले में आ पड़ा।

इस तरह उसने अपने ग्यारहों भाइयों के नाम ले ले कर उनको अपने थैले में बुलाया पर हर बार एक हड्डियों का ढेर उस थैले में आ कर गिर जाता। अब उसको कोई शक नहीं था कि उसके सारे भाई एक साथ ही मर गये थे।

यह देख कर फ्रान्सिस बहुत दुखी था। उसका पिता भी उसको अकेला छोड़ कर मर गया था। अब बूढ़े होने की उसकी बारी थी।

अब उसकी बस एक ही आखिरी इच्छा थी कि वह केनो झील की परियों की रानी को एक बार फिर से देख ले जिसने उसको इतना अमीर बनाया था।

सो वह उसी जगह चल दिया जहाँ वह उसको पहली बार मिला था। वह वहाँ इन्तजार करता रहा करता रहा पर वह परी नहीं आयी।

वह बड़ी प्रार्थना भरी आवाज में बोला — "कहाँ हो तुम ओ परियों की रानी। मेहरबानी कर के तुम एक बार मेरे सामने और आओ। मैं तुमको फिर से देखे बिना तो मर भी नहीं सकता।"

रात होने लगी थी और परी के आने का उसको कोई संकेत भी दिखायी नही दे रहा था बल्कि उसने देखा कि परी की जगह तो उसके सामने से उसकी मौत चली आ रही थी।

उसके एक हाथ में काला झंडा था और दूसरे हाथ में उसका हल जैसा पेड़ काटने वाला एक औजार था।

वह फ्रान्सिस के पास आयी और बोली — "ओ बूढ़े, क्या तुम अपनी ज़िन्दगी से थक नहीं गये हो? क्या तुम पहाड़ों पर काफी नहीं चढ़ लिये हो? क्या तुमने दुनियाँ के सारे काम काफी नहीं कर लिये हैं और क्या तुम अब मेरे साथ आने के लिये तैयार नहीं हो?"

बूढ़े फ्रान्सिस ने कहा — "ओ मौत। भगवान तुमको बनाये रखे। तुम ठीक कहती हो। मैंने दुनियाँ में बहुत कुछ देख लिया बल्कि हर चीज़ देख ली है। मैं सब चीज़ों से सन्तुष्ट हो गया हूँ पर तुम्हारे साथ आने से पहले मैं किसी को विदा कहना चाहता हूँ। मेहरबानी कर के मुझे एक दिन की मोहलत और दो।"

"अगर तुम किसी नास्तिक की तरह से मरना नहीं चाहते तो तुम अपनी प्रार्थना कर लो और फिर जल्दी से मेरे पीछे पीछे आ जाओ।"

"मेहरबानी कर के सुबह जब तक मुर्गा बोलता है मुझे तब तक की मोहलत दे दो।"

"नहीं।"

"अच्छा तो एक घंटा और, बस।"

"एक मिनट भी ज़्यादा नहीं।"

फ्रान्सिस बोला — "क्योंकि तुम इतनी बेरहम हो तो आओ मेरे थैले में कूद जाओ।"

मौत डर के मारे काँप गयी। उसकी सारी हड्डियाँ चरचरा उठीं और वह फ्रान्सिस के थैले में जा कर गिर पड़ी।

उसी समय वह केनो झील की परियों की रानी वहाँ प्रगट हो गयी। वह अभी भी उतनी ही शानदार लग रही थी जितनी वह तब लग रही थी जब वह उसको पहली बार मिली थी।

फ्रान्सिस बोला — "मैं तुम्हारा बहुत कृतज्ञ हूँ ओ परियों की रानी।"

फिर वह मौत से बोला — "मेरा काम हो गया अब तुम मेरे थैले में से बाहर निकल जाओ और मुझे ले चलो।"

परी बोली — "फ्रान्सिस तुमने कभी भी अपनी उन ताकतों का गलत इस्तेमाल नहीं किया जो मैंने तुमको दी थीं। तुमने हमेशा ही अपने थैले और डंडी का बहुत अच्छा इस्तेमाल किया। अगर तुम मुझे अपनी कोई इच्छा बताओ तो इस समय मैं तुम्हारी वह इच्छा भी पूरी करूँगी।"

फ्रान्सिस बोला — "नहीं, अब मेरी कोई इच्छा नहीं है।"

"क्या तुम सरदार बनना चाहते हो?"

"नहीं।"

"क्या तुम राजा बनना चाहते हो?"

"नहीं, मुझे कुछ नहीं चाहिये।"

परी ने फिर पूछा — "अब क्योंकि तुम बूढ़े हो गये हो क्या तुम को तन्दुरुस्ती और जवानी चाहिये?"

"अब मैंने तुमको देख लिया है तो अब मैं शान्ति से मरने के लिये तैयार हूँ।"

"अच्छा विदा फ्रान्सिस। पर मरने से पहले यह थैला और यह डंडी जला दो।" और यह कह कर परी गायब हो गयी।

फ्रान्सिस ने एक बड़ी सी आग जलायी। कुछ देर के लिये अपने शरीर को गर्म किया और अपना थैला और डंडी उस आग में फेंक दी ताकि उनका कोई गलत इस्तेमाल न कर सके।

अब तक मौत एक झाड़ी के पीछे छिपी हुई खड़ी थी। सुबह हो गयी थी। मुर्गा चिल्लाया — "कुँकड़ू कू।" पर फ्रान्सिस उसकी आवाज नहीं सुन सका क्योंकि मौत ने उसको बहरा कर दिया था।

मौत बोली — "देखो मुर्गा बोल रहा है।"

कह कर उसने अपने औजार से उसको मारा और उसके मरे हुए शरीर को अपने साथ ले कर वहाँ से चली गयी।

List of Stories of “Folktales of Italy-1”

1. Dauntless Little John
2. The Ship With Three Decks
3. The Man Who Came Out Only at Night
4. And Seven
5. Body Without Soul
6. Money Can Do Everything
7. The Little Shepherd
8. The Little Girl Sold With the Pears
9. The Snake
10. Three Castles
11. The Prince Who Married a Frog
12. The Parrot
13. Twelve Bulls
14. Crack and Crook
15. The Canary Prince
16. King Krin
17. Those Stubborn Souls
18. The Pot of Marjoram
19. The Billiard's Player
20. Animal Speech

List of Stories of “Folktales of Italy-2”

1. The Three Cottages
2. The Peasant Astrologer
3. The Wolf and the Three Girls
4. The Land Where One Never Dies
5. The Devotee of St Joseph
6. Three Crones
7. The Crab Prince
8. Silent For Seven Years
9. Pome and Peel
10. Cloven Youth
11. The Happy Man's Shirt
12. One Night in Paradise
13. Jesus and Saint Peterin Friuli
14. The Magic Ring
15. The King's Daughter Who Could Never Get Figs
16. The Three Dogs
17. Uncle Wolf

18. The King of Animals
19. Dear As Salt
20. The Queen of the Three Mountains of Gold

List of Stories of "Folktales of Italy-3"

1. The Dragon With Seven Heads
2. The Sleeping Queen
3. The Son of the Merchant from Milan
4. Salmanna Grapes
5. Enchanted Castle
6. The Old Woman's Hide
7. Olive
8. Catherine Sly Country Lass
9. The Daughter of the Sun
10. The Golden Ball
11. The Milkmaid Queen

List of Stories of "Folktales of Italy-4"

1. The North Wind's Gifts
2. The Sorceror's Head
3. Apple Girl
4. The Palace of the Doomed Queen
5. Fourteen
6. Crystal Rooster
7. A Boat For Land and Water
8. Louse Hide
9. The Love of the Three Pomegranates
10. The Mangy One
11. Three Blind Queens
12. One Eye
13. False Grandmother
14. Shining Fish
15. Miss North Wind and Mr Zephir
16. The Palace Mouse and the Field Mouse
17. Crack, Crook and Hook
18. First Sword and the Last Broom
19. Mrs Fox and Mr Wolf
20. The Five Scapegraces
21. The Tale of the Cats
22. Chick

List of Stories of “Folktales of Italy-5”

1. The Princesses Wed to the First Passer By
2. The Thirteen Bandits
3. Three Orphans
4. Sleeping Beauty and Her Children
5. Three Chicory Gatherers
6. Beauty With the Seven Dresses
7. Serpent King
8. The Crab With the Golden Eggs
9. Nick Fish
10. Misfortune
11. Pippina Serpent
12. Catherine the Wise
13. Ismailian merchant
14. The Dove
15. Dealer in Peas and Beans
16. The Sultan With the Itch

List of Stories of “Folktales of Italy-6”

1. The Wife Who Lived on Wind
2. Wormwood
3. The King of Spain and the Engkish Milird
4. The Bejeweled Boot
5. Lame Devil
6. Three Tales by Three Sons of Three Merchants
7. The Dove Girl
8. Jesus and St Peter in Sicily
9. The Barber's Timepiece
10. The Marriage of a Queen and a Bandit
11. The Seven Lamb Heads
12. The Two Sea Merchants
13. A Boat Loded With…
14. The King's Son in Henhouse
15. The Mincing Princess
16. Animal Talk and the Nosy Wife
17. The Calf With the Golden Horns
18. The Captain and The General

List of Stories of “Folktales of Italy-7”

1. The Peacock Feather
2. The Garden Witch
3. The Mouse With the Long Tail
4. The Two Cousins
5. The Two Muleteers
6. Giovannuza Fox
7. The Child Who Fed the Crucifix
8. Steward Truth
9. The Foppish King
10. The Princess With Horns
11. Giufa
12. Fra Ignazio
13. Solomon's Advice
14. The Man Who Robbed the Robbers
15. The Lion's Grass
16. The Convent of Nuns and the Monastery of Monks
17. St Anthony's Gift
18. March and the Shepherd
19. John Balento
20. Jump into My Sack

Some Other Books of Italian Folktales in Hindi

1353 **Il Decamerone.** By Giovanni Boccaccio. 3 vols
1550 **Nights of Straparola** By Giovanni Francesco Straparola. 2 vols.
1634 **Il Pentamerone.** By Giambattista Basile. 50 tales. 3 vols
1885 **Italian Popular Tales.** By Thomas Frederick Crane. 109 tales. 4 vols

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" कम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022